ISSN 970-9312

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

वर्ष 39 अंक 1 जनवरी 2015

पत्रिका के बारे में

'प्राथमिक शिक्षक' राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है, शिक्षकों और संबद्ध प्रशासकों तक केंद्रीय सरकार की शिक्षा नीतियों से संबंधित जानकारियाँ पहुँचाना, उन्हें कक्षा में प्रयोग में लाई जा सकने वाली सार्थक और संबद्ध सामग्री प्रदान करना और देश भर के विभिन्न केंद्रों में चल रहे पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों आदि के बारे में समय पर अवगत कराते रहना। शिक्षा जगत में होने वाली गतिविधियों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने होते है। अत: यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक चिंतन में परिषद् की नीतियों को ही प्रस्तुत किया गया हो। इसलिए परिषद् का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

सलाहकार समिति

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. : बी. के. त्रिपाठी
अध्यक्ष, डी.ई.ई. : अनूप कुमार राजपूत
अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : दिनेश कुमार

संपादकीय समिति

अकादमिक संपादक : रमेश कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
इंदु कुमार (सदस्य) वी.पी. सिंह (सदस्य)

प्रकाशन मंडल

मुख्य प्रबंध अधिकारी : गौतम गांगुली
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : अरुण चितकारा
संपादक : रेखा अग्रवाल
सहायक उत्पादन अधिकारी : अब्दुल नईम

आवरण

मुख्य पृष्ठ – सुश्री एम.वी. तेजस्वनी, जवाहर नवोदय विद्यालय, चारा-हेब्री, जिला - उड़पि, कर्नाटक

अंतिम पृष्ठ – मास्टर नलिनी रंजन जतवार, जवाहर नवोदय विद्यालय, चिस्दा, जिला - जांजगीर-चांपा, छतीसगढ़

सौजन्य – किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित **"राष्ट्रीय युवा महोत्सव 2015"** जो कि राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा आयोजित किया गया था।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
होस्केरे हल्ली एक्सटेंशन
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी. डब्ल्यू. सी. कैंपस
धनकल बस स्टॉप के सामने
पनिहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी. डब्ल्यू. सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

मूल्य एक प्रति ₹ 65.00 **वार्षिक ₹ 260.00**

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा चन्द्रप्रभू ऑफ़सेट प्रिंटिंग वर्क्स प्रा. लि., सी-40, सैक्टर 8, नोएडा 201 301 द्वारा मुद्रित।

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष 39 | अंक 1 | जनवरी 2015

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1.	खेल भी पढ़ाई भी	लता पांडे	5
2.	हम पहली के बच्चे हैं ...	उषा शर्मा	10
3.	मन जीतें बच्चों का	अक्षय कुमार दीक्षित	16
4.	शिक्षा का गोल - गोले का खेल	प्रशांत अग्निहोत्री	20
5.	स्कूल और अनुशासन के द्वंद्व का झरोखा	शारदा कुमारी	25
6.	खेल-खेल में विज्ञान	मणि सिंह	34
7.	गणित का अर्थपूर्ण शिक्षण	डोरी लाल	41
8.	आरंभिक स्तर पर उपलब्ध बाल-साहित्य एवं उसके चयन के आधार	रमेश कुमार	49
9.	बचपन से बचपन तक	संघमित्रा आचार्य	53
10.	विद्यालय – अनुभव कार्यक्रम से जुड़ी कुछ स्मृतियाँ	अशोक कुमार	56
11.	किताबें और पर्यावरण	मीनाक्षी	60

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं– (i) अनुसंधान और विकास, (ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार। यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है– विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 1 28-12-2015 AM 11:56:40

बालमन कुछ कहता है

12. मैं बनूँगा पुलिस ऑफ़िसर — समर्थ अग्निहोत्री — 65

कविता

13. पानी — सुकीर्ति भटनागर

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 2 28-12-2015 AM 11:56:40

संवाद

नव वर्ष में नयी पहल हमारे अंदर आशा एवं उत्साह का संचार करती है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत संपूर्ण भारत में स्वच्छता अभियान को गति दी है। स्वच्छ एवं सुदृढ़ भारत हम भारतवासियों के लिए गर्व का विषय है। स्वच्छता संबंधी अभियान को विद्यालयी परिवेश में भी जीवंतता देने की ज़रूरत है जो अपने मूलरूप में दृष्टिगत हो। अर्थात् कहने का अभिप्राय है कि स्कूल में स्वच्छता के साथ प्राकृतिक जीवंतता इस रूप में परिलक्षित हो कि उसे किसी अधिकारी के निरीक्षण के दौरान कृत्रिमता में न परोसा जाए। हमारा स्कूल छोटा हो या बड़ा यह हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी है कि स्कूल की हर वस्तु साफ़-सुथरी एवं सहजता में हो और यह सब तभी संभव है जब हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण हम स्वानुशासित होकर स्कूल को अपने घर के मनोभाव से ग्रहण करें तो निश्चित ही घर के समान ही स्कूल का परिवेश भी स्वच्छ होगा और उसमें अपनत्व का भाव आएगा। स्कूल हमारा है इसे हमें स्वच्छ रखना है । स्कूल में संचालित विभिन्न गतिविधियों का निरीक्षण स्कूल के विद्यार्थी सहज भाव से करें एवं स्वच्छता से समझौता न करें जैसे मध्याह्न भोजन के दौरान रसोईघर से लेकर खाना परोसे जाने तक एवं खाना खत्म करके हाथ मुँह धो लेने तक सब कुछ विद्यार्थियों के निरीक्षण में हो एवं उन्हें इस अभियान के महत्वपूर्ण एकक के रूप में प्रशिक्षित किया जाए तो संभवत: विद्यालयी परिवेश को और भी स्वच्छ बनाया जा सकता है क्योंकि इसमें विद्यार्थियों की पूर्ण सहभागिता होगी और वे अपने विद्यालयी वातावरण को स्वच्छ रखने में संपूर्ण योगदान देने का प्रयास करेंगे।

अकादमिक संपादक

मन का विकास करो और उसका संयम करो, उसके बाद जहाँ इच्छा हो, वहाँ इसका प्रयोग करो-उससे अति शीघ्र फल प्राप्ति होगी। यह है यथार्थ आत्मोन्नति का उपाय। एकाग्रता सीखो, और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हें कुछ खोना नहीं पड़ेगा। जो समस्त को प्राप्त करता है, वह अंश को भी प्राप्त कर सकता है।

स्वामी विवेकानंद

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 4 28-12-2015 AM 11:56:44

खेल भी पढ़ाई भी

लता पांडे*
(स्वर्गीय)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली की ओर से वर्ष 2013 में फ़ील्ड विज़िट के दौरान दक्षिणी दिल्ली निगम प्रतिभा बालिका विद्यालय, आया नगर, नयी दिल्ली में तीन माह तक कार्य करने का अवसर मिला। मैंने अक्तूबर, 2013 के अंतिम सप्ताह से इस विद्यालय में जाना शुरू किया। मैंने जाने से पहले ही मन-ही- मन तय किया था कि मैं पहली कक्षा के बच्चों के साथ ही अधिक-से-अधिक समय रहूँगी। इसके कई कारण थे, जिनमें से एक प्रमुख कारण यह था कि सभी कहते हैं कि पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। साथ-ही-साथ मैं यह भी जानना चाहती थी कि पहली कक्षा के ये नन्हे-नन्हे बच्चे किस तरह की भाषा का प्रयोग करते हैं, ये अपने साथ क्या-क्या भाषायी अनुभव लेकर विद्यालय आते हैं, कौन-कौन सी गतिविधियाँ इन्हें ज़्यादा आनंदित करती हैं?

सत्र अप्रैल, 2013 में आरंभ हो चुका था। इसीलिए जब मैं विद्यालय गई तो सोच रही थी कि अधिकतर बच्चियाँ अपना नाम लिखना-पढ़ना सीख गई होंगी। लेकिन जब मैं विद्यालय गयी तो बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को लेकर मेरे बहुत से भ्रम टूटे। उनमें एक भ्रम यह भी था तीन-चार बालिकाओं को छोड़कर अपना नाम पढ़ना तो दूर, किसी भी वर्ण की पहचान बालिकाओं को नहीं थी। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक रिमझिम इस विद्यालय में लागू थी। इस पुस्तक की कविता 'छह साल की छोकरी' मैंने पढ़ी तो तभी बच्चों ने ज़ोर-शोर से मेरे साथ कविता दोहराई। कविता में बच्चों ने भरपूर आनंद लिया। लेकिन कक्षा में कोई भी लड़की कविता की एक पंक्ति भी पुस्तक में देखकर पढ़ पाने में असमर्थ थी। इसी बीच छुट्टी के समय अपनी बेटियों को घर ले जाने आईं कुछ माताओं ने भी कहा, "इन्हें पढ़ना-लिखना सिखा दीजिए, इतने महीने स्कूल आते-जाते हो गए, अभी तक पढ़ना और अपना नाम तक लिखना नहीं आता है।"

माताओं का यह उलाहना सुनकर मुझे लगा कि कुछ ऐसी गतिविधि का इस्तेमाल करूँ ताकि खेल-खेल में पहली कक्षा की ये बालिकाएँ अपने-अपने नाम पढ़ना-लिखना तो सीखें ही, इन्हें वर्णमाला का ज्ञान भी हो जाए। खेल-खेल में सीखना बच्चों के लिए रोचक होता है। खेलना बच्चे का नैसर्गिक स्वभाव है। यही कारण है कि शिक्षा का

* प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

अधिकार कानून 2009 भी बालकेंद्रित शिक्षण पद्धति पर ज़ोर देता है।

मन में विचार आया कि क्यों न खेलगीत से ही शुरुआत की जाए। खेलगीत का इस्तेमाल करना सबसे अच्छा लगा क्योंकि खेल जहाँ बच्चों को आकर्षित करते हैं वहीं गीत बच्चों को लुभाते हैं। अपने शब्द, तुकबंदी, लय तथा ध्वन्यात्मकता के कारण खेलगीत सहज ही बच्चों की ज़ुबान पर रच-बस जाते हैं। रिमझिम-1 के दूसरे-तीसरे आवरण पृष्ठ पर एक खेलगीत दिया गया है –

हरा समंदर गोपी चंदर

बोल मेरी मछली कितना पानी

गीत को मैंने अभिनय के साथ सुनाया। सुनाते समय मैंने एक हाथ के ऊपर दूसरे हाथ को रखा। अँगूठे तथा कनिष्ठा (सबसे छोटी उँगुली) को फैलाते हुए मछली बनाई। मैं गीत की पंक्ति गाती, बच्चियाँ मेरे साथ दोहराती। उन्हें भी इस खेल-गीत में आनंद आया। किताब के आवरण पृष्ठ में केवल चार ही पंक्तियाँ थीं पर मैंने बच्चों को पूरा गीत सुनाया। इस गीत में 'पानी' और 'मछली' शब्द कई बार आए थे इसलिए मैंने 'पानी' शब्द बोलते हुए श्यामपट्ट पर लिखा 'पानी' और बच्चों से पूछा, "श्यामपट्ट पर मैने क्या लिखा है?" बालिकाएँ एक स्वर में बोल उठीं, "पानी।" फ़िर मैंने पूछा, "अब यह बताओ कि तुममें से किस-किसके नाम में 'प' आता है? 'प' कहीं भी हो सकता है। नाम के शुरू में, बीच में या आखिरी में।" बालिकाओं ने एक-एक कर बोलना शुरू किया- पिंकी, पूजा, पुष्पा। मैंने तीनों नाम श्यामपट्ट पर लिख दिए।

मैंने देखा कि पिंकी, पूजा और पुष्पा ने भी जब मैं श्यामपट्ट पर उनके नाम लिख रही थी, अपने-अपने नाम अपनी कॉपी में लिख लिए थे। इसके बाद मैंने बच्चों से पूछा, "पानी शब्द में एक तो है पा और दूसरा क्या है?" सारी बालिकाएँ समवेत स्वर में बोल उठीं-नी।

मैं आगे कुछ पूछती, इसके पहले ही नन्ही-सी दिखने वाली नैना बोल उठी, "मैडम जी, अब आप 'हम' से सबके नाम पूछेंगी न?" मैंने पूछा, "अरे! तुम्हें कैसे मालूम?" इस पर नैना की आँखों में चमक आ गई और उसने कहा, ''पहले आपने 'प' से नाम पूछे थे ना।" नैना की समझ मुझे बहुत अच्छी लगी। नैना को पढ़ना आता है, यह मैं पहले दिन ही जान गई थी। मैंने कहा, "अब जिस-जिसके नाम में 'न' आता है वह अपना नाम बताए।" कक्षा में बहुत सारी लड़कियों ने हाथ खड़े कर दिए और शुरू कर दिया नाम बताना-नैना, निशा, अनुष्का, रोशनी, रहनुमा, उनसाबी, रूखसाना। मैंने सारे नाम श्यामपट्ट पर लिखे और कहा, "अच्छा अब एक-एक करके आओ और जहाँ तुम्हारा नाम लिखा है उसे पहचान कर उस पर फूल बनाओ।" एक-एक करके लड़कियाँ आती गईं और अपना-अपना नाम पहचान कर उस पर फूल बनाती गईं।

सभी लड़कियों ने अपना नाम सही पढ़ा और नाम के चारों ओर फूल बनाना उन्हें बहुत अच्छा लगा। फिर मैंने कहा, "बताओ किस के नाम में 'न' बीच में है, किसके नाम में अंत में और किस लड़की का नाम 'न' से शुरू होता है।" इसमें भी बच्चों ने सही बताया। इसका कारण शायद यह भी रहा होगा कि अपने संगी-

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 6 28-12-2015 AM 11:56:44

साथियों के नाम तथा उनकी ध्वनि से बच्चे परिचित थे। जब मेरे द्वारा नाम लिखे जा रहे थे और इस तरह एक पहचान तथा उस नाम की पहचान का स्थायी चित्र भी उनके स्मृति पटल पर अंकित होता जा रहा था। उस दिन जब कक्षा खत्म हुई तो कई लड़कियाँ बोल उठीं, "कल हमारे नाम वाला खेल कराना।" इस खेलगीत का ही नाम बच्चियों ने नामवाला खेलगीत कर दिया था। उसके बाद दो-तीन दिन तथा इस खेलगीत के अलग-अलग शब्द जैसे – मछली, हरा, गोपी आदि लेते हुए 'म', 'छ', 'ल', 'ह', 'र', 'ग', आदि वर्णों से बने नाम पूछे। एक सप्ताह के भीतर ही कक्षा की लगभग सभी लड़कियों को अपने-अपने नाम पढ़ना-लिखना आ गया था साथ ही अन्य वर्णों की पहचान भी हो चुकी थी। जब भी मैं ब्लैकबोर्ड पर कोई नाम लिखती तो सभी लड़कियाँ बड़े ध्यान से देखतीं यह बात मैंने बार-बार गौर भी की। इस बात से यह बात और बलवती हो गई कि बच्चों की बोली बात या उनमें बताए नामों को जब टीचर द्वारा ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाता है तो बच्चों को भी मालूम पड़ता है कि बोली गई बात को कैसे लिखा जाता है।

अकसर अभिभावक बच्चों को वर्णमाला सिखाने की बात कहते रहते थे। इसलिए अब मुझे लगा कि कक्षा की लगभग सभी बालिकाओं को वर्ण पहचान तो हो ही चुकी है क्यों न अब इन्हें क्रम से वर्णमाला भी सिखा दी जाए, लेकिन वर्णमाला मैं नीरस तरीके से नहीं सिखाना चाहती थी। इसके लिए भी मैंने वही खेलगीत चुना। इसका कारण यह था कि अभिनय करते हुए यह खेलगीत गाना सभी बालिकाओं को अच्छा लगता था और उन्हें पूरा याद भी होता था। दूसरे दिन मैंने लड़कियों से कहा, ''आज बाहर मैदान में हम खेलगीत गाएँगे।'' चहकती हुई सभी बालिकाएँ उल्लास तथा उत्साह से बाहर मैदान में इकट्ठा हो गयीं। मैं बीच में खड़ी हो गई। फ़िर हमने शुरू किया-खेलगीत यांत्रिक बच्चों ने गाया –

हरा समंदर गोपी चंदर
बोल मेरी मछली कितना पानी
इतना पानी इतना पानी
कमर कमर तक गहरा पानी

बालिकाएँ कमर में हाथ रखकर खड़ी हो गईं तो मैंने पूछा, "कमर में पहला वर्ण क्या है?" बालिकाएँ बोल उठीं, 'क'

मैंने कहा, "बोलो क, ख, ग, घ, ङ" सभी बालिकाओं ने इसे गोल-गोल घूमते हुए दो-तीन बार दोहराया।

अब हमने फ़िर खेलगीत आगे बढ़ाया –

हरा समंदर गोपी चंदर
बोल मेरी मछली कितना पानी
इतना पानी इतना पानी
टखने-टखने छिछला पानी
बोल मेरी मछली कितना पानी

बालिकाएँ टखने को छूते हुए झुककर खड़ी थीं। मैंने पूछा, "टखने में पहला वर्ण क्या है?"

बालिकाओं ने जबाब दिया, 'ट'

उसके बाद मैंने कहा, "ट, ठ, ड, ढ, ण।

सभी बालिकाओं ने गोल-गोल घूमते हुए दो-तीन बार दोहराया।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 7 28-12-2015 AM 11:56:44

खेलगीत फ़िर आगे बढ़ाया

हरा समंदर गोपी चंदर

बोल मेरी मछली कितना पानी

इतना पानी इतना पानी

चेहरे-चेहरे तक है पानी

बालिकाओं ने गोल घेरे में घूमते हुए इन पंक्तियों को दोहराया।

मैंने पूछा, "चेहरा शब्द किससे शुरू होता है?"

बालिकाओं ने कहा, 'च' से,"

मैंने कहा बोलो, "च, छ, ज, झ, ञ।"

बालिकाओं ने इसे मेरे साथ गोल घेरे में घूमते हुए दोहराया।

मैंने गौर किया कि गीत तो गीत पर वर्णमाला की पंक्तियों को दोहराने में भी बालिकाएँ जमकर आनंद ले रहीं थीं

खेलगीत फ़िर जारी किया –

हरा समंदर गोपी चंदर

बोल मेरी मछली कितना पानी

पाँवों-पाँवों तक है पानी

मैंने पूछा, "पाँवों शब्द किससे शुरू होता है?"

लड़कियाँ बोली, "प से।"

मैंने कहा, "अब मेरे साथ बोलो, प, फ, ब, भ, म," लड़कियों ने ज़ोर से दोहराया प, फ, ब, भ, म, खेलगीत की अगली पंक्तियाँ थीं –

हरा समंदर गोपी चंदर

बोल मेरी मछली कितना पानी

इतना पानी इतना पानी

नाकों-नाकों तक है पानी

बालिकाओं द्वारा पंक्तियाँ दोहराने के बाद मैंने पूछा, "नाक शब्द का पहला अक्षर क्या है?"

बालिकाओं के 'न' बताने पर मैंने कहा, "मेरे साथ बोलो, त, थ, द, ध, न।"

खेल गीत खत्म करते हुए मैंने कहा, "चलो अब एक बार फ़िर से गाते हैं –

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म"

दो-तीन दिन इस तरह खेलते हुए बच्चों ने खेल ही खेल में पूरी वर्णमाला सीख ली थी। वर्णों की पहचान तो वे पहले ही खेल ही खेल में कर चुकी थीं। खेल ही खेल में वर्णमाला सीखने-सिखाने का यह तरीका विद्यालय की अन्य शिक्षिकाओं को भी अच्छा लगा। बच्चों द्वारा सीखने का उत्साह तथा सीखने में उनके आनंद को देखते हुए यह सिद्ध हो गया था कि खेल सीखने का एक अच्छा माध्यम है। खेल द्वारा सीखने-सिखाने की बात मैंने अन्य कक्षाओं में देखी।

फ़रवरी माह में एक दिन सुबह से ही मूसलाधार बारिश हो रही थी। सभी कक्षाओं में उपस्थिति बहुत कम थी। कहीं भी पढ़ने-पढ़ाने का माहौल नज़र नहीं आ रहा था। मैं तीसरी कक्षा में गई तो छात्राएँ फ़िल्मी गीत गा रही थीं। सभी छात्राएँ समवेत स्वर में बोल उठीं, "मैडम जी आज पढ़ने का मूड नहीं है। कितना अच्छा मौसम है, आज हम गाना गाएँगे।" कक्षा में

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 8 28-12-2015 AM 11:56:44

तेईस छात्राएँ उपस्थित थीं। उनका मूड भाँपकर मैंने कहा, "तुम लोग सही कह रही हो, आज तो पढ़ाई-लिखाई का मौसम ही नहीं है। चलो, आज हम कोई खेल खेलते हैं।" लड़कियाँ खुश हो उठीं। इस कक्षा की शिक्षिका ने मुझे बताया कि इस कक्षा में कुछ लड़कियाँ ऐसी भी हैं जिन्हें अभी तक वर्णों तथा मात्राओं की पहचान नहीं है। फ़िल्मों में इनकी रुचि देखकर मैंने सोचा कि क्यों न इन्हें फ़िल्मों के नामों वाले खेल के माध्यम से ही वर्णों की पहचान करा दी जाए।

मैंने कहा, "आज हम एक मज़ेदार खेल खेलेंगे और वह भी फ़िल्मों के नाम वाला।" लड़कियाँ खुश हो गईं। मैंने लड़कियों को दो समूहों में बाँटा-ए और बी। फ़िर मैंने निर्देश दिया, मैं ब्लैकबोर्ड पर किसी फ़िल्म के नाम की केवल मात्राएँ लिखूँगी। आपको वर्ण बताते हुए फ़िल्म का नाम भरना है। जितने वर्ण वाला फ़िल्म का नाम होगा उससे दोगुने वर्ण बताने का अवसर आपको मिलेगा जैसे बाज़ीगर फ़िल्म के लिए मैंने लिखा ा ी ¯ ¯ इसमें चार अक्षर है तो आपको आठ अवसर मिलेंगे। प्रत्येक फ़िल्म का नाम दो मिनट में बताना है। नहीं बताने पर दूसरी टीम को अवसर मिलेगा। उसने बता दिया तो अंक दूसरी टीम को चले जाएँगे। फ़िल्मों के नाम वाले खेल की बात सुनते ही बच्चे उत्साहित हो गए। फ़िल्मों के नाम बताने में उन्हें बहुत आनंद आ रहा था। दोनों समूह बराबरी में चल रहे थे। मैं गौर कर रही थी कि जो लड़कियाँ कक्षा में कभी नहीं बोलती थीं, आज इस खेल में वह भी भाग ले रहीं थीं। पूरे एक घंटे तक यह खेल चला। छुट्टी की घंटी बजी, पर लड़कियाँ और खेलना चाह रहीं थीं। कक्षा से निकलते समय मुझे यह विश्वास हो गया था कि खेल ही खेल में ऐसी छात्राओं को भी वर्णों तथा भाषाओं की पहचान हो गई थी जिन्हें अभी तक पढ़ना नहीं आता था। दूसरे दिन मैंने इसी कक्षा में फ़िर यह खेल दोहराया। अबकी बार फ़िल्मों के नामों के स्थान पर फल, सब्ज़ी, शहरों के नाम लिए। मैं ब्लैकबोर्ड पर उन्हीं छात्राओं से वर्णों को सही जगह पर लिखने को कह रही थी जिन्हें वर्ण अक्षर की न तो सही पहचान थी और न ही उन्हें वर्णो का क्रम पता था। आज छात्राओं की प्रगति काफ़ी संतोषजनक थी। खेल ही खेल में सीखना सभी को आनंदमय लग रहा था।

वास्तव में प्रत्येक बच्ची सीखना चाहती है। वह तो हमारी कक्षाओं में सीखने-सिखाने की नीरस तथा उबाऊ प्रक्रिया उनमें सीखने की चाह को सोख लेती है। सीखने-सिखाने के तरीके रोचक हों तो हर बच्ची सीख सकती है।

❑❑❑

संदर्भ

कुमार, कृष्ण, 1996, *बच्चे की भाषा और अध्यापक एक निर्देशिका*, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

पांडे, लता (संपादक), 2008 *पढ़ने की दहलीज़ पर— पढ़ने से संबंधित लेखों का संकलन*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

हम पहली के बच्चे हैं ...

उषा शर्मा*

एक सरकारी स्कूल की कक्षा एक में मेरा पहला दिन, मेरे शैक्षिक जीवन का बेहद 'ज्ञानवान' दिन था। अभी हाल ही में एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों को तीन-तीन महीने के लिए स्कूल में पढ़ाने के लिए कहा गया। मेरे लिए यह एक 'लपकने' वाला अवसर था और मुझे पूर्ण विश्वास था कि लगभग 21 वर्षों के बाद एक बार फ़िर स्कूल और उसमें भी कक्षा एक को पढ़ाने का अनुभव मुझे बहुत कुछ देने वाला और मेरी तमाम संवदेनाओं को स्पंदित करने वाला होगा। शिक्षा का अधिकार लागू होने के 'असर' मुझे उस सरकारी स्कूल की कक्षा एक में भी देखने को मिले। जब मैंने कक्षा एक में प्रवेश किया तो सारे बच्चे ब्लैकबोर्ड से देखकर अपनी-अपनी कॉपी में कुछ-कुछ लिख रहे थे।

बोर्ड पर खिंची लाइनों के बीच में अंग्रेज़ी के अक्षर लिखने की कोशिश में 'जुटे' पड़े थे। एक बच्ची परी तो बार-बार एक अक्षर बनाती और पसीना साफ़ करती। कभी बाज़ु से ही नाक साफ़ करती। वह खड़े होकर ही लिख रही थी। तब भी डेस्क के बराबर बामुश्किल ही आती थी। अंग्रेज़ी के 'सी' की आकृति कभी 'ई' का रूप धारण करती तो कभी 'एल' की आकृति का रूप धारण करती। कोई अक्षर बड़ा बन जाता तो कोई अक्षर बहुत छोटा! बेहद कठिन काम! फ़िर भी उन्होंने हार नहीं मानी और वे अंग्रेज़ी के अक्षर लिखने में मसरूफ़ थे।

उन्होंने मेरी तरफ गौर से देखा भी नहीं! उन्हें लगा कि कोई आया होगा अपने बच्चे का दाखिला करवाने! मेरे साथ कक्षा चार की साक्षी भी थी जिसके व्यवहार के सामने उसकी शिक्षिका ने हथियार डाल दिए थे। वह स्कूल से भाग जाती थी। उसकी माँ को बुलाया गया और कटघरे में मुलज़िम की मानिंद खड़ा कर दिया और साक्षी के बारे में जो 'निंदा पुराण' शुरू हुआ। उससे एक माँ का तड़पना स्वाभाविक था और गाज़ गिरी साक्षी के ऊपर। 'चटाक' की आवाज़ आई – माँ ने साक्षी को एक ज़ोरदार चाँटा जड़ दिया, बिना पूरी बात सुने, समझे और सच्चाई को जाने। माँ के साथ साक्षी की चार साल की छोटी बहन गायत्री भी आई थी।

मेरा पूरा ध्यान अब गायत्री पर था। यह दृश्य देखकर तो उसके स्कूल न आने की नींव पड़ी ही समझो। साक्षी हर बार अपनी सफ़ाई देती रही, लेकिन किसी ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। लिहाज़ा मैंने उसे अपनी कक्षा में ले जाने के लिए 'बड़ी मैडम' से अनुमति माँगी। साक्षी को अपनी

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, एन. सी. ई. आर. टी., नयी दिल्ली - 110016

चौथी कक्षा में से बस्ता लेकर आने के लिए कहा। तब तक मैं कक्षा का 'शिक्षाशास्त्र' समझने की कोशिश कर रही थी। नीचे यानी प्राचार्य के कक्ष में मुझे 'बाल मनोविज्ञान और समाजशास्त्र' को इतनी नज़दीक से देखने-समझने का अवसर मिला। साक्षी हमारी कक्षा में बैठेगी-यह उद्घोषणा मैंने उसकी अनुपस्थिति में ही कर दी थी। इसलिए कक्षा एक के बच्चों ने साक्षी को बिना किसी हीलहुज्जत के अपनी कक्षा में 'स्थान' दे दिया।

जब बच्चों ने काम पूरा कर लिया तो मेरी 'बारी' आई। मैंने कहा, ''सारे बच्चे किताब बंद कर दीजिए। आज हम सिर्फ़ बात करेंगे।'' बच्चों के साथ बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। वे अपने घर के बारे में, परिवार के सदस्यों के बारे में, अपने दोस्तों के बारे में, एकदम पक्की सहेली के बारे में बताने लगे। फिर एक आवाज़ आई – आप भी तो अपने बारे में बताओ। हमसे ही पूछते जाओगे क्या? यह लक्ष्मी की आवाज़ थी। बात तो सही थी। फ़िर मैंने अपने बारे में, अपने परिवार के बारे में बताया। हिसाब बराबर समझो! लेकिन साक्षी ने एक शब्द भी नहीं कहा और इस पर मैंने ज़्यादा ज़ोर भी नहीं दिया।

अब मैंने सभी को अपने-अपने परिवार की तस्वीर बनाने के लिए कहा। ज्योति ने बहुत विस्तार से परिवार बनाया, जिसमें वह अपनी बहन की पीठ पर चढ़ी हुई है। सब तरफ़ रंग ही रंग थे। साक्षी ने भी पाँच चेहरे बनाए लेकिन काले रंग से। उसके बनाए सारे चेहरे उदास और मुँह लटकाए हुए थे। मैंने बारी-बारी से उनका नाम पूछा और उन चेहरों के नीचे लिख दिया। साक्षी के चेहरे समेत परिवार में भी 'खुशी' का एलीमेंट नदारद है – यह उसकी बनाई तस्वीरों से साफ़ झलक रहा था। वह तस्वीर मुझे लगातार परेशान कर रही थी। कहाँ गई साक्षी की खुशी? शायद उसके मन को जानने-समझने वाला कोई नहीं था। ऐसा कोई नहीं था जिससे इस सवाल का जवाब मिल सके। कक्षा के बच्चों के मन को जानना-समझना उन्हें पढ़ाने से ज़्यादा ज़रूरी है और यह उन्हें पढ़ाने में मदद करता है। यह बात शिक्षकों को समझनी होगी। जो किताब उनके पाठ्यक्रम में है, उसे पढ़ना तब और भी आसान होगा, उन बच्चों की जिंदगी की किताब को पढ़ने की 'फुर्सत, हूनर और शहुर' भी जरूरी है, क्योंकि हर एक कक्षा के लिहाज़ से यह बेहद महत्वपूर्ण है।

एक शिक्षक के रूप में मेरे पेशेवर जीवन की शुरुआत भी कक्षा एक को पढ़ाने के साथ हुई थी। जिसमें कक्षा एक को भी पढ़ाती थी और कक्षा दस को भी। पढ़ाने के लिहाज़ से दोनों कक्षाओं के बीच में किसी को कोई तालमेल नज़र नहीं आ रहा था। लेकिन मुझे लग रहा था कि कक्षा एक के बच्चों को पढ़ाते हुए मुझे जो 'असल शिक्षाशास्त्र' सीखने को मिलेगा उसका अनुप्रयोग कक्षा दस के बच्चों के लिए उपयोगी होगा। हम मानें या ना मानें बच्चे हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। पहली कक्षा जो प्राथमिक शिक्षा का संभवत: पहला पायदान है। (संभवत: पहला इसलिए कि अमूमन सरकारी स्कूलों में स्कूल पहली कक्षा से ही शुरू होता है।)-वह बेहद महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण इसलिए भी है कि यहीं से शैक्षिक जीवन की नींव पड़ती है और इसलिए भी है कि यह दौर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन को गहनता से प्रभावित करता है। मुझे अपने जीवन की कक्षा एक की वह

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 11 28-12-2015 AM 11:56:45

घटना आज भी याद है जब हिंदी की किताब 'रानी मदन अमर न होने पर मेरी शिक्षिका ने मुझे और मेरी बहन को धक्का देकर कक्षा से बाहर गिरा दिया था। वह चोट जो उस दिन मेरे घुटने लगी पर थी, आज भी मेरे मन पर मौजूद है- भुलाए नहीं भूलती। न ही मुझे सरकारी स्कूल की उस शिक्षिका की आकृति भूलती है- झुर्रीदार चेहरा,सफेद सूट और पके बाल। आखिर भूले भी क्यों? शायद यही मेरी संवेदनाओं को मृत नहीं होने देती। किसी भी बच्चे के जीवन में ऐसा वाकया बहुत सारे सवाल खड़े करता है कि अंतत: हम बच्चों के प्रति इतने क्रूर क्यों हैं? शरीर पर लगी चोट तो नज़र आती है लेकिन मन पर लगी चोट किसी को क्यों नज़र नही आती?

शिक्षक यह क्यों भूल जाते हैं कि बच्चे भी उनकी तरह ही संवेदनशील होते हैं। उन्हें भी किसी के व्यवहार से ठेस पहुँच सकती है। उस दिन मेरे मन में कोई सवाल भले ही न हो लेकिन आज भी वह घटना जब-तब मेरे अवचेतन से चेतन स्तर तक आती है तो मन के भीतर कहीं कुछ दुखता है। आर्थिक कारणों से सरकारी स्कूल में पढ़ने की 'विवशता' और शिक्षिकाओं के व्यवहार को 'नियति' मान लेने के कारण मन ने उस समय किसी प्रकार का विरोध नहीं किया। लगभग सत्रह वर्ष के बाद जब स्वयं शिक्षक के रूप में अपने पेशेवर जीवन की शुरुआत की तो विद्यालयी जीवन के उन तमाम अनुभवों ने मुझे सदैव सही रास्ता दिखाया कि बच्चों के साथ किस तरह पेश आना चाहिए। किस तरह एक तहज़ीब भरा व्यवहार बच्चों के मन पर अधिकार प्राप्त करने में हमारा मार्ग प्रशस्त करता है।

कक्षा एक में आने से पहले ही बच्चों के पास अपने आप-पास की दुनिया के बारे में अनेक अवधारणाएँ होती है। वे चीजों की जटिलता को भी अनेक बार समझ लेते हैं वह भी सलीके से, जब स्वयं उनका जीवन बेहद जटिल हो। माँ या तो दूसरों के घरों में काम करती हैं, सिलाई करती हैं, मज़दूरी करती हैं और पिता या तो ठेला लगाते हैं, मज़दूरी करते हैं, रिक्शा चलाते हैं आदि। कई बार स्थिति और भी भयावह हो जाती है, जब पिता शराब पीकर आते हैं और घर में हिंसा का वातावरण पैदा हो जाता है। ऐसे में एक छोटे से बच्चे के मन पर क्या गुज़रती होगी? वह किससे क्या कहता होगा और कैसे कहता होगा? उसका नन्हा सा मन रोज़ सहमता होगा और हम स्कूल आते ही 'आओ किताब पढ़ें' के अंदाज में काम करना शुरू कर देते हैं, ऐसा नहीं है कि हर बच्चे के साथ यह दुखद स्थिति होती है, लेकिन होती तो है।

'एवरी चॉइल्ड मैटर्स' यही तो नारा है शिक्षा के अधिकार का लेकिन फिर क्यों हम हमेशा आँकड़ों में उलझे-उलझाते रहते हैं? स्कूल वह स्थान होना चाहिए जहाँ बच्चे अपने मन की बातों को साझा कर सकें और उनकी बातों को बेहद गोपनीय रखा जा सके। स्कूल को तो आनंद की शाला होना चाहिए जहाँ रंग हैं, कला है, सुर हैं, ताल है,और प्रकृति का हर तत्त्व मौजूद है। चाँद-तारों से लेकर सागर और लहरों की बातें होती हैं। चींटी से लेकर पड़ोस के चंदू की बातें होती हैं। दादी की साड़ी से लेकर नानी की कहानी की बातें होती हैं और सभी अवधारणाएँ बुनने और गुनने में काम में आती हैं। आप मानें या ना मानें, लेकिन हम तो किताब ही पढ़ाएँगे जनाब। 'जीवन की किताब

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 12 28-12-2015 AM 11:56:45

को पढ़े बगैर केवल स्कूल की किताब पढ़ना कितना बेमानी लगता है' यह पहली कक्षा के बच्चे के जीवन में झाँकने पर ही पता चलेगा। अंतत: शिक्षा का अर्थ क्या है? जीवन जीने की तैयारी या बेहतर जीवन जीना? कोई भी हो, लेकिन शिक्षा का उद्देश्य जीवन के उद्देश्य से अलग हो ही नहीं सकता।

आइए, एक और घटना से इसे समझते हैं- पहली कक्षा की इकरा अकसर अपना टिफ़िन मुझसे खुलवाती थी। उसने हर दिन की तरह मुझसे टिफ़िन खोलने के लिए कहा। तो लक्ष्मी तपाक से बोली, ''मैडम क्या तुम्हारी नौकर लगी है?'' मैंने लक्ष्मी को ऐसा कहने के लिए मना किया।

मैंने पूछा, ''तो क्या हो गया, और यह नौकर क्या होता है ?''

लक्ष्मी ने मेरे प्रश्न का जवाब देते हुए कहा, ''जो दूसरों का काम करता है। ''

लक्ष्मी को समझाते हुए आगे मैंने कहा, ''दूसरों का काम करना गलत बात तो नहीं। हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। जैसे आप सभी बच्चे इस रीडिंग कॉर्नर पर किताबें रखने, उन्हें रस्सी पर टाँगने और फिर अलमारी में रखने में मेरी कितनी मदद करते हैं, तो क्या यह गलत बात है ?''

मेरी बात सुनने के बाद लक्ष्मी सहित बच्चे अपना-अपना तर्क देने लगे कि उनके द्वारा मेरे लिए काम करना कितना सही है और मेरे द्वारा उनका काम करना कितना गलत है। लेकिन मेरे पास 'नौकर ' की सफ़ाई में कोई तर्क शेष नहीं था। इस स्कूल की अधिकांश माताएँ दूसरों के घरों में काम करती हैं, जिसे स्वयं बच्चे ही हेय दृष्टि से देखते हैं और काम करने को नकारात्मक मानते हैं। किसने दिया काम करने को यह भाव , यह अर्थ ? बच्चों द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द इस ओर साफ़ इशारा करते हैं कि किस प्रकार समाज का माहौल उनकी अवधारणाओं को 'बनाता' और 'बिगाड़ता' है। 'नौकर' शब्द भी इसी की देन है। आपसी बातचीत से यह मामला सुलट सकता है, लेकिन इसके लिए 'फुर्सत' हुनर और शहुर चाहिए।

अनेक बार ऐसा भी होता है कि जो आपको किसी कक्षा में पढ़ना सीखना है उसकी पूरी तैयारी उससे निचली कक्षा में हो जानी चाहिए। जैसे कक्षा एक की पूरी तैयारी नर्सरी , के.जी. में हो जानी चाहिए। लेकिन सवाल उठता है कि जब कक्षा की सारी पढ़ाई –लिखाई उससे निचली कक्षा में ही कर लेंगे तो कक्षा एक में क्या करेंगे ? कक्षा दो की तैयारी ! यह ' शिक्षाशास्त्रीय समझ ' तो मेरी समझ से एकदम परे है। शिक्षक अकसर यह शिकायत करते पाए जाएँगे कि इन बच्चों को तो कुछ आता ही नहीं है। अरे भाई! अगर इन्हें सब कुछ आता तो स्कूल ही क्यों आते? कोई इनसे पूछे तो सही ! बच्चे स्कूल में आने से पहले ही बहुत कुछ सीखकर आते हैं और बहुत कुछ सीखने के लिए आते हैं। लेकिन यह सीखना केवल पाठ्य-पुस्तक तक ही सीमित नहीं है।

पाठ्य-पुस्तक तो साधन है साध्य नहीं ! यह बात भी शिक्षकों को समझनी होगी और शिक्षा व्यवस्था से जुड़े हर व्यक्ति को जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करते हैं –सकारात्क और नकारात्मक –दोनों रूपों से ! पहली कक्षा का एक और वाकया है जो हमारी शुरुआती पढ़ने-लिखने के बारे में जो प्रचलित संकीर्ण सोच , व्यवहार को उजागर

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 13 28-12-2015 AM 11:56:45

करता है। मैंने दूसरे दिन बच्चों से कहा कि अपनी हिंदी की किताब निकालिए। 'आ' से अनार वाली? एक आवाज़ आती है। मैं चौंक गई। आवाज़ से नहीं बल्कि उस आवाज़ ने जो कहा उससे। 'आ' से आम वाली? दूसरी आवाज़ भी चौंकाने वाली ही थी। इन दोनों आवाज़ों से भाषा की कक्षा का चरित्र स्पष्टत: नज़र आ रहा था। यानी भाषा की कक्षा में हिंदी भाषा के नाम पर वर्णमाला पर ज़ोर दिया जाता है। मैंने कहा, - "रिमझिम निकालिए।" मैंने जानबूझकर ऐसा कहा ताकि वे अपनी किताब के नाम से तो वाकिफ़ हो जाएँ। कक्षा एक की 'रिमझिम' में कक्षा के दृश्य पर जी भर कर बातचीत करने के बाद मैंने बच्चों से पूछा, "अच्छा बताओ हमारी कक्षा में क्या –क्या है?" बच्चे एक – एक करके चीज़ों के नाम गिनाने लगे और मैं उन्हें बोर्ड पर लिखने लगी। फ़िर कक्षा के बच्चों के नामों को बोलने और लिखने का सिलसिला शुरू हुआ – कविता कशिश, (एक और कशिश , क्योंकि कक्षा में दो बच्चों का नाम कशिश था),

कावेरी, पलक, काजल, इकरा ....। फ़िर और दूसरी चीज़ों के नाम शुरू हो गए –कबूतर, काजल (यह आँखों में लगाने वाला काजल था।), कटोरी, कार, केला, कौवा ....। मैंने उनसे शब्दों को अपनी कॉपी में लिखने और 'क' पर घेरा लगाने के लिए कहा। लक्षिता ने सारे शब्द लिखे लेकिन 'कबूतर' की जगह लिखा 'क'। मैंने उससे कहा कि लक्षिता आपने 'कबूतर' नहीं लिखा। लक्षिता मुझे 'क' की ओर इशारा करते हुए बताने लगी कि ''लिखा है तो ये। फ़िर मैंने उसे आगे समझाया लेकिन यह तो 'क' लिखा है।'' लक्षिता ने 'क' पर अँगुली रखी और ज़ोर देकर कहा, " नहीं , ये 'क' कबूतर लिखा तो है ! देखो तो।" ऐसा लगा कि लक्षिता ने मेरी शिक्षाशास्त्रीय समझ को अच्छे से धो डाला ! पर इसका भी अलग ही आनंद है जब पहली कक्षा के (वास्तव में हर कक्षा के) बच्चे आपकी शिक्षाशास्त्रीय समझ को चुनौती देते हैं। दरअसल 'आ' से अनार /आम वाली किताब कहने में भारी नज़र आता है। पहला खतरा तो यह कि बच्चे इस भ्रम को 'पाल लेंगे' कि 'क' से केवल 'कबूतर' ही होता है, काजल, कार, कविता, केला नहीं। बच्चे के लिए 'क' की आकृति 'कबूतर ' का अर्थ देती है, 'क' से बनने वाले बाकी शब्दों का क्या होगा? एक अन्य खतरा यह भी है कि बच्चे भाषा की कक्षा में निरर्थक कवायद कर रहे हैं, क्योंकि 'अ/ आ/ क /प /च' आदि का कोई अर्थ नहीं है। ये वर्ण बच्चों को न तो कोई अर्थ ही दे पाते हैं और न ही सीखने का आनंद।

खतरा यह भी है कि बच्चे वर्णमाला की दुनिया में उलझकर सार्थक तरीके से न तो पढ़ना–लिखना सीख पाएँगे और न ही भाषा सीखने की उनकी जन्मजात क्षमता का लाभ उठाते हुए उनकी भाषा को समृद्ध से समृद्धतर बनाया जा सकता है। हम केवल वर्णमाला पर ज़ोर देकर प्राथमिक स्तर पर, विशेषत: कक्षा एक और दो में भाषा सीखने –सिखाने के उद्देश्यों से भटक जाएँगे। इस स्तर पर भाषा सीखने –सिखाने का उद्देश्य है - 'बच्चों में अपने अनुभव और विचार बताने की इच्छा और उत्सुकता जगाना, बच्चों में दूसरों की बात सुनने में रुचि और धैर्य पैदा करना, उनसे सुनी बात पर टिप्पणी दे पाना, सुनी- पढ़ी कहानियों और कविताओं से अपने अनुभव-संसार को जोड़ पाना

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 14 28-12-2015 AM 11:56:45

और उसके बारे में बात करना , चित्रकारी को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना ' आदि। (प्रारंभिक स्तर की कक्षाओं का पाठ्यक्रम , एन.सी.ई.आर.टी., 2006: 13 -14) यदि इन उदेश्यों को गौर से देखें तो यह स्पष्ट होता है कि इनमें भाषा –प्रयोग पर विशेष बल दिया गया है , मात्रा वर्णमाला सिखाने पर नहीं! गहराई से विश्लेषण करने पर और अधिक खतरे नज़र आएँगे। यह आप सोचिए !

पहली कक्षा के ये अलग –अलग परिदृश्य हमें ताकीद करते हैं कि बच्चों के जीवन को सँवारने के फ़ेर में कहीं हम उसे उलझा तो नहीं रहे। उनकी मासूम और सरल दुनिया में शिक्षा के नाम पर किताबों और परीक्षाओं का बोझ तो नहीं बढ़ा रहे। बच्चों को समझना , उनके मन को समझना , उनकी दुनिया को समझना एक शिक्षक के लिए बेहद ज़रूरी है। और वास्तव में हम कर क्या रहे हैं .... ?

❑❑❑

3

मन जीतें बच्चों का

अक्षय कुमार दीक्षित*

एक दिन मैं अपनी कक्षा के बच्चों से बातचीत कर रहा था जिसमें किसी दूसरे स्कूल का ज़िक्र होने लगा। एक बच्चे ने बताया, "सर, कल उस स्कूल में बहुत हंगामा हो रहा था।"

एक दूसरे बच्चे ने कहा, "सर, वहाँ के बच्चे बिना बात दूसरों से लड़ते रहते हैं।"

यह सुनकर मुझे प्रतिक्रिया देने में कुछ समय लगा।

आप जानते हैं कि ऊपर बताईं गईं बातें किसी एक स्कूल तक सीमित नहीं हैं। बहुत से लोग इस घटना को स्कूलों में बढ़ती अनुशासनहीनता और उद्दंडता से जोड़कर देखेंगे। चाहे अभिभावक हों या शिक्षक, सभी की चिंता और जिज्ञासा यह जानने में है कि इस स्थिति का कारण और निवारण क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर मेरे सामने उस दिन स्पष्ट हो गया जब मेरी कक्षा के बच्चों ने उस स्कूल के बारे में बताया था और वे मेरी प्रतिक्रिया के इंतज़ार में! मेरी ओर देख रहे थे, मैंने कहा, "जानते हो, उन बच्चों ने कल ऐसी हरकतें क्यों की? क्योंकि, शायद उन बच्चों को कभी प्यार नहीं मिला, न घर में, न स्कूल में।"

कक्षा में पूरी शांति छा गई। प्रत्येक बच्चे के चेहरे से पता चल रहा था कि वे इस बात का अर्थ और गंभीरता को पूरी तरह समझ रहे हैं। शायद उन्हें अपने जीवन के अच्छे बुरे अनुभव याद आ रहे होंगे या वे स्वयं को उस स्कूल के बच्चों की स्थिति में रखकर कल्पना कर रहे होंगे।

नि:संदेह, बच्चों और 'बड़ों' के बीच के द्वंद्व को और दूरी को समाप्त करने का सबसे प्रभावशाली तरीका यही है कि वे बच्चों के साथ स्नेह और प्यार भरा व्यवहार करें। कई स्थितियाँ ऐसी भी आती हैं जब 'बड़े' अपना आपा खो बैठते हैं और कभी अनुशासन के नाम पर या कभी न्याय के नाम पर ऐसा कुछ कर बैठते हैं जो उन्हें बच्चों से दूर कर देता है।

बच्चे उस व्यक्ति के लिए कुछ भी कर सकते हैं, जो उन्हें प्यार करता है। वे ऐसा कोई काम करने से पहले हज़ार बार सोचेंगे जिसके कारण उन्हें उस प्यार से वंचित होने की संभावना हो। अनुशासन, गृहकार्य, हिंसा, अभद्रता, सफ़ाई आदि अनेक समस्याएँ चुटकी बजाते ही छूमंतर हो जाएँगी। पर यह बात जितनी सरल और आसान लगती है, उतनी है नहीं, पहले तो इस बात को समझना ज़रूरी है कि 'बड़े' बच्चों को इस बात का एहसास कैसे करवाएँ कि वे बच्चों से प्यार करते हैं?

* *शिक्षा सलाहकार,* सी-633, जे.वी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर एक्सटेंशन नयी दिल्ली-110074

आप अनेक तरीकों से प्रकट कर सकते हैं कि आप बच्चों से प्यार करते हैं। इसी का एक रूप है 'सम्मान करना'। जब आप बच्चों की इच्छाओं, विचारों, भावनाओं और ज़रूरतों का सम्मान करते हैं, तब बच्चे भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित होते हैं। सम्मान का भाव छोटी-छोटी बातों से भी संप्रेषित किया जा सकता है, जैसे – बच्चों को 'आप' या 'जी' कहकर पुकारना। जब बच्चे 'बड़ों' को 'आप' और 'जी' कहकर पुकार सकते हैं तो बड़े भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते? इससे यह भी ज़ाहिर होता है कि वे बच्चों को एक सोचने-समझने वाला व्यक्ति मानते हैं न कि कोई खाली घड़ा। कक्षा में जब समानता होगी तो बच्चे खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे और दूसरों के विचारों को सम्मान देंगे। समानता भी 'प्यार'का एक महत्वपूर्ण अंग है।

समानता का अर्थ यह भी है कि शिक्षक कक्षा के रोज़मर्रा के कार्यों और फ़ैसलों में बच्चों की राय और सुझावों को शामिल करें। कौन-सा चार्ट कहाँ ज़्यादा अच्छा लगेगा, कब कौन सी कविता गाएँ, बालसभा या समारोह में क्या प्रस्तुत करें, इन सभी बातों में बच्चों की सलाह लें और उन पर अमल करें। जब बच्चों को यह अनुभव होगा कि आप उनकी राय का सम्मान कर रहे हैं तो उनके आत्मसम्मान में वृद्धि होगी। समानता केवल बच्चों और अध्यापक के बीच ही नहीं बल्कि बच्चों के बीच भी रहनी चाहिए। कई बार 'बड़े' बच्चों के साथ व्यवहार करते हुए अनजाने में पूर्वाग्रहों से ग्रस्त हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, 'होशियार' बच्चों से बात करते हुए उनका स्तर विनम्र, स्नेहपूर्ण और 'कम होशियार' बच्चों के प्रति शुष्क हो जाता है। दूसरी ओर, पृष्ठभूमि के आधार पर भी कभी-कभी मन में पूर्वाग्रह आ सकते हैं। हमें इन बातों के प्रति सतर्क रह कर प्रत्येक बच्चे के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

बच्चों में ज़िम्मेदारी का भाव व अहसास हम बच्चों की राय लेकर भी करा सकते हैं।

विद्यालय में कौन सी प्रार्थनाएँ करवाएँ? कौन सी गतिविधियाँ करवाएँ? किस विषय पर पत्र/ निबंध लिखवाएँ? कहाँ भ्रमण के लिए जाएँ?

बच्चों के उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार को पुष्ट करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है उन पर विश्वास करना और कक्षा-विद्यालय के क्रियाकलापों का उत्तरदायित्व उन्हें सौंप देना। यह कार्य सदन व्यवस्था द्वारा या कक्षा में समूह बनाकर या विशेष क्लबों की स्थापना द्वारा किया जा सकता है। जब बच्चे स्वयं विद्यालय-कक्षा में सफ़ाई, अनुशासन, व्यवस्था तथा संपदा की देखभाल करेंगे तो उनमें विद्यालय तथा कक्षा के प्रति अपनेपन की भावना का विकास होगा। समूह में कार्य करने से उन्हें एक-दूसरे से सीखने और सिखाने के भी भरपूर अवसर मिलेंगे। बच्चे सामग्री निर्माण के कार्य में भी शिक्षकों के साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं। खेल प्रतियोगिताएँ, पुस्तकालय संचालन, कक्षा पुस्तकालय की स्थापना, पाठ्यचर्या पर आधारित कंप्यूटर कार्यक्रमों का निर्माण आदि अनेक कार्य ऐसे हैं जो बच्चे और बड़े मिलकर कर सकते हैं।

शिक्षक को बच्चों की क्षमताओं पर भी विश्वास रखना चाहिए। उनके सामने बहुत आसान लक्ष्य या

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 17 28-12-2015 AM 11:56:46

चुनौतियाँ रखना उनके लिए हानिकारक साबित हो सकता है। उनको चुनौतिपूर्ण कार्यों को पूरा करने के लिए अनूठे तरीके खोजने का अवसर दें। उनके प्रयास की सराहना करें।

सराहना! यह है अपनापन जताने का एक और तरीका। सराहना सबको अच्छी लगती है, चाहे छोटे हों या बड़े। बच्चों की अच्छी आदतों और कार्यों की सराहना से उस प्रकार के व्यवहार को बल मिलता है।

यह भी ध्यान देने की बात है कि बच्चों का अवलोकन अत्यंत पैना होता है। अत: उनकी झूठी प्रशंसा करने का प्रयास न करें। झूठी प्रशंसा करने पर बच्चों की दृष्टि में आपकी प्रशंसा का महत्त्व कम हो जाएगा। इसी प्रकार, झूठी धमकियाँ देने का भी प्रयास न करें।

बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए क्रियाकलाप सोचें और करवाएँ। जिन कामों में बच्चों की रुचि नहीं होगी, उनको वे बेमन से करेंगे और भावात्मक रूप से कक्षा से कट जाएँगे।

बच्चों से बातचीत अवश्य करें। बातचीत बच्चों के जीवन में झाँकने की खिड़की है। बच्चों से बातचीत करके आप उनकी कठिनाइयों, रोज़मर्रा की चुनौतियों और सोच को समझ सकेंगे और उनके अनुसार अपने क्रियाकलापों को ढाल सकेंगे। बातचीत बच्चों और अध्यापक के अपनेपन को बढ़ाने का काम भी करती है। बातचीत का विषय कुछ भी हो सकता है। बातचीत को शैक्षिक जामा पहनाने का कृत्रिम प्रयास न करें।

कक्षा के लिए बच्चों द्वारा 'मूल-नियम' बनवाएँ। उदाहरण के लिए, एक बार में एक बच्चा बाहर जाएगा, कक्षा के सामान की देखभाल की ड्यूटी आदि। जब बच्चे इन नियमों को स्वयं बनाएँगे तो उन पर स्वयं अमल भी करेंगे क्योंकि ये नियम उन पर बाहर से थोपे नहीं गए हैं। इन नियमों को चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगा दें। स्वयं भी इन नियमों का पालन करें।

दिन की शुरुआत किसी रोचक बात, काम या वस्तु से करें। कक्षा में एक जगह बैठने के बजाए ऐसी जगह खड़े हों ताकि प्रत्येक बच्चा आपको देख सके। जब बच्चे कुछ कार्य कर रहे हों तो सक्रिय रहें। हर बच्चे या समूह के पास जाएँ। हर बच्चे से नज़र मिलाकर बात करें।

बच्चे उन अध्यापकों के प्रति श्रद्धा रखते हैं जो उन्हें अपनी पूर्ण क्षमता से पढ़ाते हैं। अध्यापक बच्चों के दिलों में अपने लिए श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न कर सकते हैं यदि वे समयबद्ध हैं, उन्हें अपने विषय की पर्याप्त जानकारी है, उनके व्यवहार में लचीलापन और आत्म नियंत्रण है। कक्षा के भौतिक वातावरण का प्रभाव भी बच्चों के व्यवहार पर पड़ता है। कक्षा में सफ़ाई, हवा, प्रकाश और बैठने की व्यवस्था पर नज़र रखें।

बच्चों के साथ हँसें, मुस्कराएँ। बच्चों को ऐसे अध्यापक अधिक अच्छे लगते हैं जो उनके साथ हँसते हैं, मुस्कराकर बात करते हैं। परंतु बच्चों के ऊपर कभी न हँसें, उनका मज़ाक कभी न उड़ाएँ।

एक बार एक अध्यापिका को कुछ महीनों के लिए अवकाश पर जाना पड़ा। उन दिनों मैंने अपनी कक्षा के साथ-साथ उस कक्षा को भी पढ़ाया। जब वे अध्यापिका लौटीं तो उनकी कक्षा भी उनके पास लौट गई। उन्होंने अपनी कक्षा से, पूछा "सर कैसा

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 18 28-12-2015 AM 11:56:46

पढ़ाते हैं?" सारे बच्चे बोले, 'बहुत अच्छा।' फिर उन्होंने पूछा, "सर की कौन सी बात तुम्हें सबसे अच्छी लगी?" सबसे पहले जिस लड़की ने उत्तर दिया, वह उत्तर दर्शाता है कि कौन सी विशेषता बच्चों को सबसे पहले आकर्षित करती है। उस लड़की जिसका नाम अंतिमा था, उसने कहा, "सर हँसाते बहुत हैं।"

❑❑❑

पहले दिन से आखिरी दिन तक समूची शिक्षा में बौद्धिक रोमांच का एक अहसास होना चाहिए यह समझ लेने का अहसास कि क्या कुछ एक पहेली है और क्या आहलादकारी और आनंदायक होता है हर अच्छे शिक्षक में यह सब सुलभ कराने की योग्यता होनी चाहिए।

बर्ट्रेंड रसेल

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 19 28-12-2015 AM 11:56:46

4

शिक्षा का गोल-गोले का खेल

प्रशांत अग्निहोत्री*

बच्चा हमारी संपत्ति नहीं है और न ही खिलौना। वह तो हमारे पास परमात्मा और मनुष्यता की धरोहर है। वह समग्र सृष्टि का वह अंश है जो स्वयं में पूर्ण है। वस्तुतः पूर्णता का ही अस्तित्व संपूर्ण चराचर में है। विभाजन या छोटे खंड तो हमारी सुविधा के लिए हैं। जीव-जड़-जगत का सारा प्रपंच (Phenominan) अपनी अखंडता और समग्रता में ही चलता है। सूरज, चंदा-तारे, पेड़, पक्षी, जानवर, हवा, धूप-छाँव सब स्वयं में पूर्ण होते हुए भी वास्तविक पूर्ण नहीं हैं। इन सबका समुच्चय, इनकी अविभाज्यता, इनकी अखंडता ही पूर्ण है। इस दृष्टि से ज्ञान तथा मानव संस्कृति वस्तुतः अखंड है। हम केवल सुविधा और समझ के लिए इन्हें बाँट लेते हैं लेकिन पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति तभी हो सकती है जब हम इनकी अखंडता को समझें।

हमने अपनी सुविधा के लिए, अपने बोध के लिए दिशाओं को पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में बाँट लिया है, परंतु यथार्थ में दिक् का ऐसा कोई विभाजन स्वयं में नहीं है। दिक् की समग्रता का बोध उसकी अविभाज्यता में ही है। ठीक ऐसे ही ज्ञान विषयों की अविभाज्यता का ही विषय है। छोटे बच्चों के लिए यह बात और भी कारगर है। प्रारंभिक स्तर पर बच्चों के लिए ज्ञान की अखंडता महत्वपूर्ण है। ज्ञान को टुकड़ों में तोड़कर बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किए जाने पर वह उसे समग्रता के साथ ग्रहण नहीं कर पाते हैं।

वास्तव में ज्ञान एक तथा अविभाजित होता है। यह ठीक है कि प्रत्येक विषय पाठ्यक्रम में अपना महत्व रखता है तथा प्रत्येक विषय की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं परंतु यह भी सत्य है कि पाठ्यक्रम के सभी विषय एक ही वस्तु जिसे 'ज्ञान' कहते हैं, की विभिन्न शाखाएँ होती हैं। प्रत्येक विषय को स्वतंत्र सत्ता मानना भ्रामक है। केवल एक विषय संबंधी ज्ञान में ही तारतम्य नहीं है, बल्कि ज्ञान की विभिन्न धाराओं के बीच भी एक अटूट संबंध है। बच्चों को विभिन्न विषयों का पारस्परिक संबंध न बतला कर, इनको अलग-अलग मान कर शिक्षण करने से बच्चों को ज्ञान की अखंडता का भान नहीं हो पाता है। वे ज्ञान को उसकी पूर्णता के साथ ग्रहण नहीं कर पाते हैं।

आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने भी अपनी-अपनी दृष्टि से विषयों को उनके सह संबंधों के आधार पर प्रदान किए जाने की बात की है। हरबर्ट, शिलर, पार्कर, फ़्रॅबेल, डीवी आदि

* 312, मस्जिद गंज, शाहजहाँ पुर, उत्तर प्रदेश - 242001

शिक्षाशास्त्रियों ने विभिन्न विधाओं के द्वारा विषयों के सहसंबंध स्थापित करने पर बल दिया है। हरबर्ट ने अपने 'पूर्व ज्ञान के सिद्धांत' के द्वारा पुराने या पूर्व ज्ञान का संबंध नवीन ज्ञान से जोड़ने की बात कही है। उनके शिष्य शिलर ने इसी सिद्धांत के विकास में इतिहास को मुख्य विषय मानकर अन्य विषयों की शिक्षा का सिद्धांत प्रतिपादित किया। पार्कर ने प्रकृति विज्ञान को मुख्य विषय मानकर अन्य विषयों की शिक्षा इसके आधार पर देने की बात की है। फ्रोबेल ने बालक को स्वयं क्रिया के द्वारा संपूर्ण संसार की अलौकिक एकता का भान कराना उपयुक्त समझा। जॉन डीवी ने योजनाओं (Projects) के माध्यम से विभिन्न विषयों का सहसंबंध स्थापित करने का सिद्धांत दिया। महात्मा गांधी भी बुनियादी शिक्षा पद्धति के पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त विषयों को संबंधित करके पढ़ाने के पक्ष में थे। उन्होंने भाषा, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, सामान्य विज्ञान, कला आदि को समन्वित या संबंधित कर पढ़ाने पर बल दिया। इस दृष्टि से उन्होंने सहसंबंध के नियम (Law of Association) के महत्व को स्वीकार किया है।

समग्रकृति (Gestaltian) मनोवैज्ञानिकों ने भी प्रत्यक्षीकरण (Perception) के दो नियम दिए हैं (i) हमें किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण उनके पूर्ण रूप में होता है और (ii) हम एक वस्तु को किसी दूसरी वस्तु की अपेक्षा ग्रहण करते हैं। इन दो नियमों से स्पष्ट होता है कि ज्ञान समग्र है और वह एक पूर्ण इकाई है।

विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर और उससे भी पहले पूर्व प्राथमिक शिक्षा में इन सिद्धांतों की महत्ता बहुत अधिक है। प्राथमिक स्तर पर विषयों के सामान्य तत्वों की पहचान कर उन्हें समग्रता के साथ प्रस्तुत करने का काम अध्यापक का है। एक अध्यापक अपने आसपास के परिवेश से सामान्य एकीकरण के तत्व खोजकर उन्हें बच्चों की पाठ्यवस्तु के साथ बच्चों के समक्ष उनकी समग्रता और सहसंबद्धता के साथ जोड़कर रख सकता है।

पूर्व प्राथमिक स्तर पर जहाँ बच्चे को प्रारंभिक अक्षर और अंक ज्ञान के साथ उसके परिवेश या पर्यावरण की सामान्य जानकारी प्रदान की जाती है। कला, कविता और सृजनात्मकता के सूत्रों के साथ पिरोकर प्रदान किया गया ज्ञान रोचक व स्थायी हो सकता है।

एक अध्यापक गोले O की आकृति से प्रारंभिक स्तर पर पढ़ाए-सिखाए जाने वाले विषयों को बच्चों के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है।

भाषा (अक्षरों) का ज्ञान–

हिंदी के अक्षरों की बनावट पर यदि अध्यापक सूक्ष्मता से ध्यान दे तो वह पहचान कर सकता है कि लगभग सभी अक्षरों के आकार में एक गोलाई छिपी है। वह

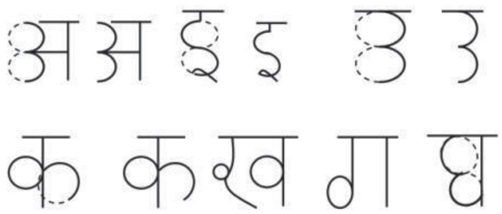

एक या दो गोलों को आसपास लिखकर, उसमें कुछ तरमीम कर या कुछ मिटाकर सभी हिंदी अक्षरों को सिखा सकता है। प्रारंभ में वे अक्षर लिए जा सकते हैं, जिन्हें बनाने के लिए गोले में थोड़ा सा ही परिवर्तन

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 21 28-12-2015 AM 11:56:47

करना होगा जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ट, ठ, द, प, ब, भ, म, व, श, ह, ज्ञ आदि। इसके बाद अन्य अक्षर सिखाए जा सकते हैं।

गणित के अंकों का ज्ञान–

गोले की आकृति के साथ अंकों, विशेष रूप से हिंदी अंकों का ज्ञान सहजता से कराया जा सकता है जैसे –

सभी गिनतियाँ गोले की आकृति के साथ बनायी जा सकती हैं। अध्यापक ऐसा करके जाने-

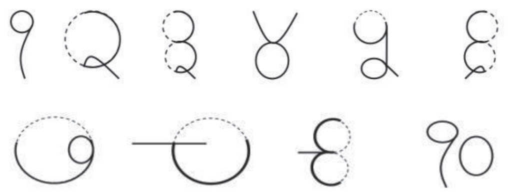

अनजाने ही बच्चों में अंकों की तारतम्यता, उनके स्वरूप की आंतरिक एकता का बोध करा सकता है।

सामाजिक (पर्यावरण) का ज्ञान–

अपने परिवेश या पर्यावरण की जानकारी उसके प्रति जिज्ञासा और समझ बच्चे के ज्ञान का आधार है। बच्चे के आस-पास के परिवेश से अध्यापक प्रारंभ में बच्चे को बताने-सिखाने के लिए उन वस्तुओं को चुन सकता है, जो गोल आकृति की होती हैं। ऐसी आकृतियों का चयन कर अध्यापक बच्चों को उन्हें बनाने के लिए प्रेरित कर सकता है। इसके साथ ही बच्चों के बौद्धिक स्तर और समझ के अनुरूप उन्हें उन वस्तुओं से जुड़ी जानकारी प्रदान की जा सकती है। जैसे –

कला का ज्ञान–

कला आनंद से उद्वेलित आत्मा की अभिव्यंजना है। मनुष्य जब अपने हृदय के स्वाभाविक आनंद से प्रेरित होकर अपने हृदयगत भावों को प्रकट करना चाहता है तभी कला की उत्पत्ति होती है। उसका बाह्य रूप सौंदर्य है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जब सौंदर्य का प्रवेश होता है तभी कला की सच्ची उपासना होती है।

कला जीवन की जीवंतता के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी सीखने की प्रक्रिया में कला और सौंदर्यबोध को समेकित करने की बात कहती है। बच्चे के लिए कुछ बनाना, कुछ रचना आनंददायक अनुभव है। इसे शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। सिर्फ़ बच्चे की आँख में कुछ नया रचने की चमक के साथ इसे महसूस किया जा सकता है। विविध चित्रों में जो गोले का प्रयोग कर अध्यापक बच्चों को सिखा सकते हैं, बच्चे की प्रारंभिक चित्रकला के आधार हो सकते हैं। जैसे –

अध्यापक ऐसे विविध चित्रों के साथ मिट्टी की गोल आकृतियों के रूप में बच्चों से कुछ खिलौने बनवा सकता है जिससे उनमें कौशल और कलात्मकता के तत्वों का बोध विकसित किया जा सकता है।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 22 28-12-2015 AM 11:56:47

कविता –

कविता हमेशा से ही बच्चों की पसंदीदा विषय रही है। उसकी गति, उसकी लय, उसकी ताल, सहज स्मृति गुण कविता के महत्व को शिक्षा में सदैव से स्वीकारते रहे हैं। गोले के इस सीखने-सिखाने के क्रम में अध्यापक वह कविता भी बच्चों को सिखा सकते हैं जो गोले या गोल आकृति पर आधारित हो। जैसे-

मम्मी जी की रोटी गोल।
पापा जी का पैसा गोल।
दादी जी की ऐनक गोल।
दादा जी का चश्मा गोल।
मैडम कहतीं दुनिया गोल,
बच्चे कहते लड्डू गोल।

अध्यापक बच्चों को इसके माध्यम से नयी-नयी वस्तुओं की जानकारी दे सकते हैं। वे नयी कविताओं को गढ़ सकते हैं, जिसमें गोल आकृति की चर्चा हो।

सृजनात्मकता की शिक्षा –

सृजनात्मकता ईश्वर का गुण है। बच्चा भी सृजनात्मक होता है, वह कुछ नया रचना चाहता है, वह नया रच कर खुश होता है। इस दृष्टि से सृजन आनंद है और आनंद जीवन। बचपन भरपूर आनंद से जीवन जीने का अवसर। शिक्षा या शिक्षालय को उससे यह अवसर छीनने का कोई हक नहीं है। अध्यापक को चाहिए कि वह बच्चे को रचने, सृजन करने का पूरा अवसर प्रदान करे। यह अवसर उसमें चिंतन करने, कुछ मौलिक रचने और रचने की लयात्मकता के साथ तालमेल बिठाने में सहायता करता है। एक अध्यापक अपनी कक्षा में विविध आकार और रंगों के कागज़ या गत्ते के टुकड़े देकर बच्चे को कुछ नयी आकृतियाँ रचने के लिए प्रेरित कर सकता है। जैसे –

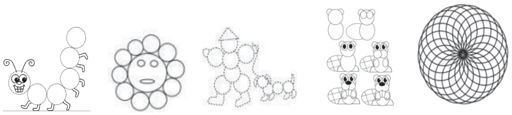

बच्चे जब इस तरह की विविध आकृतियाँ रंग-बिरंगे गोलों के माध्यम से बनाएँगे और अध्यापक को दिखाएँगें उस समय अध्यापक द्वारा दिया गया समर्थन उन्हें और नया रचने को सोचने की ओर उन्मुख करेगा।

एक साधारण से गोले के माध्यम से न जाने कितनी चीज़ें अध्यापक अपने बच्चों को सिखा सकता है। वैसे भी ज्ञान के जो अनेक रूप होते हैं- शिल्प, खेलकूद, सौंदर्यबोध, कौशल, रचनात्मकता इन सबका समावेश इस प्रकार के शिक्षण में हो जाता है। यह रटंत पढ़ाई से मुक्ति, बाल संवर्द्धन, सृजनात्मकता के पोषण, बाल केंद्रित शिक्षा, बच्चे को स्वयं करके सीखने की भावना के अनुरूप, लचीला और विद्यार्थी द्वारा ज्ञान के स्वयं सृजन के आदर्शात्मक शिक्षण लक्ष्यों को भी पूर्ण करता है।

ऐसा नहीं है कि शिक्षण के ऐसे प्रयोग केवल पूर्व प्राथमिक स्तर पर ही किए जा सकते हैं। विविध शैक्षिक स्तरों के अनुरूप विषयों और प्रकरणों के सामान्य तत्वों को खोजकर, संयोगीकरण की पद्धति से शिक्षा दी जा सकती है। प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक और माध्यमिक स्तर पर भी इसी एकीकरण की पद्धति का प्रयोग कर शिक्षण किया जा सकता है। पूर्व माध्यमिक स्तर पर 'बद्रीनाथ की यात्रा' नामक गद्य पाठ पढ़ाते समय भूगोल और इतिहास जैसे विषयों की शिक्षा दी जा सकती है। साथ ही व्याकरण शिक्षण पर भी

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 23 28-12-2015 AM 11:56:47

ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। एकीकरण शिक्षण सिद्धांत के जनक हरबर्ट के शिष्य शिलर ने शिक्षण में केंद्रीयकरण सिद्धांत की चर्चा की और बताया कि समस्त पाठ्यक्रम का एक विषय केंद्रीय विषय होना चाहिए और शेष विषय उसी के माध्यम से पढ़ाने चाहिए। शिलर के अनुसार इतिहास केंद्रीय विषय हो सकता है। इतिहास को केंद्र बनाकर भाषा, भूगोल, समाजशास्त्र, विज्ञान, गणित एवं चित्रकला आदि विषय उसी के माध्यम से पढ़ाए जा सकते हैं। इस क्रिया से अनेक विषयों का बोझ कम हो जाएगा। छोटे-छोटे विषयों में ज्ञान नहीं बढ़ेगा, पाठ रोचक होगा और सभी विषयों का समन्वय होगा, जिससे ज्ञान को उसकी समग्र समझ के साथ विद्यार्थी को ग्रहण करने की सामर्थ्य बढ़ेगी। निश्यच ही 'केंद्रीयकरण का सिद्धांत' सहसंबंध की सर्वोच्चता है। पार्कर विज्ञान को, डी गर्भो अर्थशास्त्रों को तो कुछ शिक्षाशास्त्री भाषा को शिक्षण का आधार बनाने पर बल देते हैं। अस्तु किस विषय को केंद्र बनाया जाए यह निर्णय अध्यापक पर छोड़ दिया जाना चाहिए परंतु शिक्षण की पूर्णता और ज्ञान की समग्र समझ के लिए समुच्चय के चयन के आधार पर शिक्षण किया जाना चाहिए। ऐसा उन्हीं विषयों के साथ किया जाना चाहिए जिनमें सरलता, स्पष्टता और बोधगम्यता की विशेष गुंजाइश हो।

❑❑❑

संदर्भ

दुबे, मिलाप चंद्र. 1964. *बुनियादी शिक्षा और नवीन समाज व्यवस्था*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

बधेका, गिजुभाई. 2005. *प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा पद्धतियाँ*. गीतांजलि प्रकाशन, जयपुर

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. 2005. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

वार्नर रूबी एच. 2000. *प्राथमिक स्कूल की अध्यापक विधियाँ*. आत्माराम एंड संस, दिल्ली

शर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद. 1972. *विश्व के महान शिक्षा शास्त्री*. बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना

5

स्कूल और अनुशासन के द्वंद्व का झरोखा

शारदा कुमारी*

सकारात्मक अनुशासन – एक पहल

"अगर चिड़िया अपने आप को बंदी महसूस करती है, तो फ़िर उससे गाने की उम्मीद मत कीजिए।"

किसी लोकतांत्रिक देश की सफ़लता और गुणवत्ता पूर्णतया उसके नागरिकों की गुणवत्ता, उनके चरित्र, सत्यनिष्ठा, अनुशासन और विचारों, मूल्यों तथा मौलिक कर्तव्यों के प्रति उनकी निष्ठा और प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है। यह सभी कुछ अधिकतर विश्वास और आस्थाओं की प्रणाली तथा व्यवहारपरक पद्धति वाली नागरिकता, संस्कृति से निर्धारित होती है। इस तरह की नागरिकता संस्कृति को विकसित एवं पुष्पित करने में शिक्षा सशक्त एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बदलती हुई सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के रहते शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व पूरी तरह से औपचारिक विद्यालयी व्यवस्था पर आ गया है। समाज के हर तबके का स्कूली शिक्षा के प्रति रुचि और रुझान बढ़ा है। यहाँ गौरतलब बात है कि स्कूली शिक्षा का व्यापक प्रसार और विस्तार तो ज़रूर हुआ है पर वह अपने उद्देश्यों से भटकाव की स्थिति का भी सामना कर रही है। ऐसे में सवाल उठते हैं कि,

- क्या विद्यालयी पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम समाज की मौजूदा ज़रूरतों को संबोधित कर पाने में सक्षम नहीं हैं?
- क्या अध्यापक अपने पेशे के प्रति पहले की तरह जवाबदेह नहीं रह गए हैं अथवा अपने कर्तव्यबोध से विमुख हो चले हैं? (यह सवाल अप्रत्यक्ष रूप से अध्यापकों की पूर्व तैयारी की ओर संकेत करता है।)
- क्या स्कूली प्रक्रियाएँ बच्चों के प्रति संवेदनशून्य हो चली हैं? यहाँ स्कूली प्रक्रियाओं से तात्पर्य हर उस स्कूली कवायद से है जो विद्यालय में सापेक्ष या निरपेक्ष रूप से जुड़ी है, जैसे – पाठ्यपुस्तकें (जो संवाद नहीं करती बच्चों से), कक्षा में पढ़ना और पढ़ाना, खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, मध्याह्न भोजन का बाँटना, आकलन के घेरे, प्रात:कालीन सभा का आयोजन आदि।
- क्या स्कूल बच्चों को बुनियादी सुविधाएँ, जैसे – सुरक्षित पेयजल, स्वच्छ शौचालय, सुगम व सहज बैठने की व्यवस्था आदि देने में सक्षम एवं उदार है?

---

* *वरिष्ठ प्रवक्ता,* मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान आर. के. पुरम्, नयी दिल्ली

यह सभी सवाल कर्तव्यों के प्रति उनकी निष्ठा और प्रतिबद्धता पर निर्भर करते हैं। यह सभी कुछ अधिकतर, विश्वास और आस्थाओं की प्रणाली और व्यवहार परक पद्धति वाली नागरिकता संस्कृति से निर्धारित होती है। इस तरह की नागरिकता संस्कृति को विकसित एवं पुष्पित करने में शिक्षा सशक्त एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

लोकतांत्रिक समाज विभिन्न प्रकार की महत्वपूर्ण बुनियादों पर निर्भर करते हैं और शिक्षा लोकतांत्रिक नागरिक बनने के लिए उनमें आवश्यक ज्ञान, कौशल, आदतों एवं अभिवृत्तियों का विकास नहीं करती है जैसे कि आलोचनात्मक सोच, संवाद में भागीदारी, दूसरों के अधिकारों एवं ज़रूरतों को महत्ता देना, भिन्न समुदायों के साथ मेल-मिलाप से रहना, महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर सक्रियता, स्वयं द्वारा चयनित विकल्पों और निर्णयों के प्रति जवाबदेही महसूस करना और परिस्थितियों को उत्पन्न करने में सहायक होना, जिनमें सब इंसान अपनी क्षमताएँ पूर्ण रूप से विकसित कर सकें।

शिक्षा विचारों का आदान-प्रदान करना सिखाती है। संकुचित पूर्वाग्रहों, सूचना शून्य मतों और व्यक्तिगत पक्षप्रियता पर विश्वास करने के विचारों और विकल्पों को परखने के लिए पुन: चिंतन और विश्लेषण की आदतों का विकास करती है। इस प्रकार शिक्षा लोकतांत्रिक जीवन की उन सभी अंतरंग विशेषताओं जैसे मानवाधिकारों की रक्षा, अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार, सभी की खुशहाली और अंतत: 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की भावनाओं को पोषित करती है। बीसवीं सदी के शिक्षाशास्त्री तो यहाँ तक कहते हैं कि शिक्षा बुनियादी तौर पर व्यक्ति के विकास और सामाजिक उत्थान के लिए है, वह नागरिकों को सामाजिक सशक्तिकरण की ओर अग्रसर करती है, जैसे– शक्तिहीन को सशक्त बनाना और यहाँ पर यह संकेत करना अनिवार्य होगा कि बुनियादी सुविधाओं का अभाव शिक्षण प्रक्रियाओं को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

- क्या अध्यापक बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को नकार कर उनसे एक 'आज्ञाकारी' और 'चुप्पी की संस्कृति' का पोषण करने वाले वयस्क की तरह व्यवहार करने की अपेक्षा करने लगे हैं?
- क्या विद्यालय का माहौल बच्चों के दृष्टिकोण से हिंसात्मक हो चला है? और बच्चों से 'अनुशासन' के उस स्वरूप की माँग करता है जो उनकी सहज प्रवृत्तियों पर न केवल अंकुश लगाता है अपितु उनकी अस्मिता व मानवीय गरिमा पर प्रहार भी करता है।

वर्तमान दौर के विद्यालयी परिवेश के प्रति बनी आम जनधारणा इन सभी सवालों के उत्तर 'हाँ' में देती है। यदि ऐसा है तो कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि शिक्षा बच्चों को लोकतांत्रिक नागरिक बनाने की दिशा में कोई कार्य कर रही है?

इस तथ्य को 'विद्यालय अनुभव कार्यक्रम' के तहत किए गए अवलोकन पुष्टि करते हैं कि बच्चों के लिए विद्यालय का माहौल 'दमघोटू' हो चला है, यहाँ पर 'दमघोटू' माहौल से तात्पर्य ऐसे विद्यालयी परिवेश से है जो बच्चों को शारीरिक, मानसिक व भावात्मक किसी भी तरह की सुरक्षा नहीं दे पा रहा और किसी न किसी रूप में उनके प्रति हिंसात्मक है।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 26 28-12-2015 AM 11:56:48

विद्यालयों में हिंसात्मक माहौल के स्थान पर सहज सुगम आनंदमयी वातावरण बने, इसके लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के कतिपय प्राथमिक विद्यालयों में 'सकारात्मक अनुशासन' अपनाने की पहल की गई। यह पहल स्थानीय प्रशासन द्वारा संचालित 12 विद्यालयों में अकादमिक सत्र 2011-12 में की गई, अभीष्ट परिणामों के रहते कार्य न केवल सतत् रूप से जारी है अपितु विद्यालय की कार्य संस्कृति ही ऐसी हो चली है कि बच्चों की उपस्थिति को नकारता 'जोखिमपूर्ण परिवेश' अब इन विद्यालयों का इतिहास बन चुका है।

इस रचनात्मक पहल के कार्यक्रम व कार्यपद्धति पर प्रकाश डालने से पहले 'सकारात्मक अनुशासन' की अवधारणा को समझना व परिभाषित करना अनिवार्य है।

सकारात्मक अनुशासन क्या है?

- सकारात्मक अनुशासन अध्यापक के द्वारा बच्चों की मानवीय गरिमा को पहचानने एवं उसका आदर करने के प्रति सहज स्वीकृति है।
- अध्यापकों का प्रभुत्व और नियम व आचार संहिता को बरकरार रखते हुए बच्चों को बिना पीड़ा पहुँचाए उनके व्यवहार में परिवर्तन लाना है।
- सकारात्मक अनुशासन बच्चे के आत्मसम्मान या उसके व्यक्तित्व अथवा शारीरिक अंगों पर चोट पहुँचाए बिना उसके अवांछनीय व्यवहार पर सवाल उठाकर यह संप्रेषित करना है कि उसका अमुक व्यवहार अस्वीकार्य है और उस व्यवहार को बदलने की गुंजाइश है।
- सकारात्मक अनुशासन दीर्घकालिक समाधान के रूप में बच्चों में आत्म-अनुशासन की भावना विकसित करता है।
- सकारात्मक अनुशासन बच्चों के साथ पारस्परिक सम्मान का रिश्ता बनाने का माध्यम है और सामाजिक अपेक्षाओं, नियमों और सीमाओं का स्पष्ट संप्रेषण है।
- यह बच्चों में विनम्रता, अहिंसा, अनुभूति, स्वाभिमान, दूसरों के प्रति आदर जैसी भावनाओं को पनपने के अवसर देता है, क्योंकि सकारात्मक अनुशासन में दंड, सज़ा, अस्वीकृति, अलगाव आदि के लिए जगह नहीं है।

सकारात्मक अनुशासन क्या नहीं है?

- सकारात्मक अनुशासन का यह मतलब नहीं है कि बच्चों को मनमानी करने दी जाए।
- सकारात्मक अनुशासन का मतलब यह नहीं है कि बच्चों के लिए कोई नियम-कायदे या अपेक्षाएँ नहीं हैं। (जो हैं उन्हें बनाने, तय करने व क्रियान्वित करने में स्वयं उनकी भूमिका अपेक्षित है।)
- सकारात्मक अनुशासन का मतलब यह नहीं कि तत्कालीन प्रतिक्रियाएँ अपनाई जाएँ या फ़िर बच्चों को मारने-पीटने के वैकल्पिक दंड अपनाए जाएँ।

संक्षेप में कहना यह है कि अपेक्षित व्यवहार न करने, नियम कायदों का उल्लंघन करने की स्थिति में एक तत्कालीन समाधान के रूप में बच्चों को अध्यापक द्वारा शारीरिक या भावात्मक पीड़ा पहुँचाई जाती है, अधिक काम देकर, खेल से वंचित

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 27 28-12-2015 AM 11:56:48

करके, कान आदि ऐंठकर कक्षा से बाहर निकालकर आदि यह सब सकारात्मक अनुशासन के विरुद्ध हैं, और इस तरह का व्यवहार उनके आत्मसम्मान को चोट तो पहुँचाता ही है, उनमें हिंसक प्रवृत्ति भी पैदा करता है।

"अकसर वही लोग बच्चों को घर या स्कूल में दंडित करते हैं, जिन्हें बच्चे प्रेम करते हैं। यह अपने प्रभुत्व का दुरूपयोग है। वयस्क समझते हैं कि दंड देकर वे बच्चों से सही व्यवहार करवा सकते हैं, यह उनका भ्रम मात्र है। दंड देकर वे उनमें कुंठा ही पैदा करते हैं।"

कार्यस्वरूप एवं कार्यपद्धति –सकारात्मक अनुशासन की पहल के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में स्थानीय प्रशासनीय इकाई द्वारा संचालित कुल 12 प्राथमिक विद्यालयों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। उनके नाम इस प्रकार है:–

- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, बापरौल, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, सहयोग विहार, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, ककरौला गाँव, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, सरोजनी नगर, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, बापूधाम, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, वाल्मीकि बस्ती, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक मॉडल विद्यालय, दिलशाद गार्डन, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, वज़ीरपुर, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, राजपुरा, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक मॉडल विद्यालय, जामा मस्ज़िद, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, झिलमिल कॉलोनी, नयी दिल्ली
- नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, अंबेडकर नगर, नयी दिल्ली

न्यादर्श के चयन के आधार एवं औचित्य– नगर निगम एवं नगर पालिका द्वारा संचालित विद्यालयों की संख्या 4,000 है। इस संख्या के सम्मुख न्यादर्श हेतु चयनित 12 विद्यालय नगण्य हैं। परंतु यह प्रयोग एक 'पायलट' के रूप में देखा गया और वित्तीय व्यवस्था पोषित करने वाली संस्था के साथ-साथ क्षेत्र विशेष के चयन के आधार इस प्रकार हैं –

1. ये विद्यालय दिल्ली की भौगोलिक स्थिति शहरी व ग्रामीण का प्रतिनिधित्व कर सकें।
2. चयनित विद्यालय दिल्ली की सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व कर सकें, जैसे कि कुछ विद्यालय सुविधा वंचित मलिन बस्तियों के हैं, कुछ पुन: आवासीय बस्तियों में, कुछ आभिजात्य इलाकों के बीच बसे इलाकों के विद्यालय हैं। ये सभी समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों व क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 28 28-12-2015 AM 11:56:48

कार्यअवधि – प्रशासनिक अधिकारी से स्वीकृति के पश्चात् औपचारिक रूप से 1 अप्रैल 2012 को क्रियान्वित किया गया। संप्रति विद्यालयी प्रशासन स्वयं संचालन कर रहा है।

कार्यपद्धति (संक्षेप में) –

- पहला चरण – बच्चों के नज़रिए से पहचान करना कि विद्यालय में वे कब स्वयं को अपमानित महसूस करते हैं और किस तरह का वातावरण उन्हें जोखिम भरा लगता है।
- दूसरा चरण – अध्यापकों के नज़रिए से पहचान करना कि विद्यालय में वाँछनीय व्यवहार हेतु वे क्या तरीके काम में लाते हैं।
- तीसरा चरण – अध्यापकों के साथ कार्यशालाएँ, समूह – चर्चा।
- चौथा चरण – बुनियादी सुविधाओं का प्रावधान।
- पंचम चरण – बाल संसद का गठन एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं का संवर्द्धन, बाल-साहित्य का प्रावधान।
- छठा चरण – अभिभावकों के साथ बैठकें एवं चर्चा।

विभिन्न चरणों में यह पहचान की गई कि विद्यालय में कब-कब बच्चे भय और आतंक का सामना करते हैं और उन्हें विद्यालय 'खतरनाक' लगने लगता है। इसके लिए केंद्रक समूह चर्चा आयोजित की गई जिसमें कक्षा चार व पाँच के बच्चों को शामिल किया गया। यद्यपि अध्यापक के क्रोध से छोटी कक्षाओं के बच्चे अधिक शिकार होते हैं परंतु क्षणिक स्मृति के रहते वे बता नहीं रहे थे। अत: छोटी कक्षाओं के संदर्भ में अध्यापकों के व्यवहार का अवलोकन किया गया। इस संबंध में चेकसूची भी बनाई गई। क्षेत्र परीक्षण में यह सिद्ध हुआ कि इससे प्राप्त परिणाम 'अवलोकन' से प्राप्त परिणामों से सर्वथा भिन्न हैं।

विभिन्न चरणों से प्राप्त परिणाम (संक्षेप में) – विद्यालय की कौन सी प्रक्रियाएँ हिंसात्मक हैं – (बच्चों से की गई चर्चा के आधार पर)

1. **अध्यापकों का भाषायी व्यवहार** – लगभग सभी बच्चों ने कहा कि उनकी सामाजिक स्थिति, रंग, नैननक्शा आदि को लेकर अध्यापकों की टिप्पणियाँ उन्हें भीतर तक त्रस्त एवं आहत कर देती हैं। कुछ बच्चों ने कहा कि उनके मन में विद्रोह फूटता है और वे अध्यापक की मौत तक की कामना करते हैं। कुछ ने कहा कि वे इन नकारात्मक टिप्पणियों को अपनी 'किस्मत' का हिस्सा मान लेते हैं, *"क्योंकि हम गरीब ठहरे तो ये बात तो सुननी ही पड़ेगी।"* और भी .... *"हमारे पापा चाकर हैं न, तो मैडम ता सेठानी है बे सबै बाते कह लेवै बोकि हमें सुधारना चाहबै।"*

   बहुत से अध्यापकों के मुँह से अकसर निकली यह टिप्पणी –

   "नालायक कहीं के, तुम किसी लायक नहीं, भेजा है या गोबर का भंडार।" या फिर "अजी नाली के कीड़े हैं, सुधर थोड़े ही न सकते हैं।, सरकार तो वोट बैंक के चक्कर में है, वरना पढ़ना-लिखना इनके बस में कहाँ?" आदि टिप्पणियाँ विद्यार्थियों के मानस पर गहरे तक असर करती हैं। और वे या तो विद्रोह

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 29 28-12-2015 AM 11:56:48

भरा रूख अपनाते हैं अथवा निराशावादी बन जाते हैं।

बच्चों ने स्वीकार किया कि 'मैडमों की अपेक्षा सर लोग अधिक गंदी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला व पुरुष दोनों ही समान रूप से अभद्र व नकारात्मक शब्दावलियों का प्रयोग करते हैं। मलिन बस्तियों के बच्चों (विशेषकर लड़कियों) ने बताया कि उनकी माताओं के काम को लेकर भी भरी कक्षा में टीका टिप्पणी की जाती है। उनके पास सिर झुकाकर सुनते रहने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं होता।

अध्यापकों का इस संदर्भ में कहना था कि *'वे अपने खुद के बच्चों को भी तो डाँटते हैं। और हम भी तो डाँट मार खा खाकर बड़े हुए हैं। हमें तो कोई मानसिक क्षति नहीं हुई। क्या उन्हें मनमानी करने दी जाए? इनकी उद्दंडता हम सहन करते हैं, हमें पता है कि इन्हें कैसे 'हैंडल' करना है।'*

"दो बोल प्यार के बोल दो तो ये तो सिर पर चढ़ जाते हैं।"

"अब मार-पीट तो सकते नहीं, छूना तक अपराध है। सज़ा भी नहीं दे सकते तो क्या पूजा-अर्चना करें इनकी।?"

अध्यापकों ने उदाहरण दिए कि जिस तरह कुम्हार मिट्टी को पीटता है, लोहार लोहे को पीटता है, उसी तरह इन्हें भी सुधारने के लिए कुछ जतन तो करने ही होंगे।

2. **स्थिति विशेष से वंचित कर देना** – विद्यार्थियों का कहना था कि उन्हें मारपीट से भी कहीं भयानक लगता है जब उन्हें कक्षा में सबसे पीछे जाकर दीवार की ओर मुँह करके खड़ा होने, कक्षा से बाहर निकाल देने, प्रात: कालीन सभा में कक्षा विशेष की पंक्ति से अलग खड़ा कर देने, किसी काम विशेष से वंचित कर देने के मौके आते हैं। वे बहुत ही अपमानित महसूस करते हैं। उनकी मुट्ठियाँ भिंच जाती हैं। वे मन ही मन अभद्र शब्द बोलते हैं गुरुजनों के प्रति वे कभी अपने छोटे भाई-बहनों को पीट तक डालते हैं, बर्तन पटकते हैं, पालतू पशुओं को गुस्से में आकर तंग करते हैं।

3. **अतिथियों की प्रतीक्षा** – वार्षिकोत्सव, गणतंत्र दिवस आदि महत्वपूर्ण अवसरों पर कई-कई दिन घंटों मेहनत करवाई जाती हैं। (इसमें पक्षपातपूर्ण रवैया रहता है, कुछ बच्चों को हल्का-फुल्का काम देंगे व कुछ को भारी भरकम)

अतिथि जब तक नहीं आते उन्हें भूखा – प्यासा रहकर इंतज़ार करना पड़ता है, अच्छे बच्चे बनने का नाटक करना पड़ता है। धूप में कई-कई बार देर तक पी.टी. करके मुख्य अतिथि को दिखानी पड़ती है।

इस संदर्भ में एक रोचक तथ्य यह सामने आया कि लड़कों को आम तौर पर मुख्य अतिथि के स्वागत हेतु आगे नहीं लाया जाता। इस कार्य में लड़कियों को सजा-सँवार कर ही पेश किया जाता है।

4. **बुनियादी सुविधाओं का अभाव** – इस संदर्भ में गौरतलब बात यह है कि किसी भी बच्चे ने स्वत: बुनियादी सुविधाओं के अभाव की बात नहीं उठायी। संभवतया इस तरह के अभावों का सामना वे घर पर कर रहे होते हैं। संकेत देने पर लड़कियों ने बहुत ही संकोच के साथ यह बात उठाई कि उनके

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 30 28-12-2015 AM 11:56:48

पेट में मरोड़ उठने लगते हैं, कसमसाहट होती है पर मूत्रत्याग या शौच की व्यवस्था नहीं हैं।

"घर पे तो फेर भी बोतल भरि और दो-चार को लेकर दीवारन की ओट धरकै फिर गावें है पर इसकूल में तो किधरै जावै। चौकीदार मरा न जाने कहाँ से टपक पड़े। बस पेट पकर-पकर बैठि रह्यों जब तलक मुयि छुटिअ न हो आवै।"

5. **मानक भाषा बोलने का दबाव** – यद्यपि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 बड़े सीधे सरल शब्दों में कहती है कि घर की बोली व स्कूल की बोली में फ़र्क को पाटा जाए, विद्यार्थियों को जबरन मानक भाषा बोलने के लिए न कहा जाए। इसके बावजूद भी विद्यालयों की स्थिति यह है कि 'मानक भाषा' बुलवाने का लोभ लगभग सभी अध्यापकों में पाया गया भले ही अपनी भाषागत अशुद्धियों से वे एकदम अनजान थे। बच्चों का कहना था कि वे बोलना चाहते हुए भी नहीं बोलते, क्योंकि यही कहा जाएगा कि "तमीज़दार भाषा का प्रयोग करो।"

6. **अभिव्यक्तियों अवसरों का नितांत अभाव** – पढ़ने-लिखने के संदर्भ में मानक/शुद्ध भाषा बुलवाने या लिखवाने की इच्छा से पहले ही अभिव्यक्ति ताले में कैद थी, अब *'तुम छोटे हो, नादान हो, अरे ये जाने है क्या दुनिया को'* आदि जुमलों से बच्चों की अभिव्यक्ति का गला ही घोट दिया जाता है। बच्चे वही बोलने के लिए अभिशप्त हैं जो उनसे बुलवाया जाता है। उससे इतर सोचने-समझने बोलने देने की आवश्यकता ही नहीं समझी जाती।

7. **पुरुष अध्यापकों की अश्लील हरकतें सहन करने का दबाव** – बहुल ही संकोच के साथ लगभग अस्पष्ट से शब्दों में बताया गया कि पुरुष अध्यापक 'गुंडों' वाली हरकतें करते हैं। वे माता-पिता से भी नहीं कह पातीं। कुछ दिन के लिए आना बंद कर देती है फ़िर वर्दी, वजीफ़े आदि के लालच में (कभी-कभी पढ़ाई के कारण भी) आना शुरू कर देती हैं। दो विद्यार्थियों ने जिस तरह की हरकतों का ज़िक्र किया वे रोंगटे खड़े करने वाली थीं।

8. **अध्यापकों के घरेलू कामों का हिसांत्मक बोझ** – यह भी चर्चा से निकला कि कुछ महिला अध्यापक (तीन स्कूलों में) कक्षा पाँच की 'बड़ी-सी दिखने वाली लड़कियों को स्कूली समय में अपने घर ले जाती हैं व घरेलू काम करवाती हैं। काम आमतौर पर 'श्रम' से जुड़े होते हैं जैसे – स्नानगृहों की टाइलों को रगड़वाना, फ़र्नीचर साफ़ करवाना, मसाले कुटवाना। बच्चियों का कहना था कि ये अध्यापिकाएँ उन्हें बहुत प्यार से बोलती हैं, होमवर्क आदि के लिए डाँटती भी नहीं हैं।

9. **बैल्ट-टाई आदि खरीदने की चिंता** – सरकार की ओर से वर्दी का पैसा मिलता है ये बच्चे जानते हैं। कुछ स्कूलों के बच्चों के ज़रिए यह पता चला कि उनके स्कूल में 'मैडम' 'टाई' व 'बैल्ट' खरीदने के लिए बाध्य करती हैं, यह उन्हें एक खास दुकान से ही खरीदनी पड़ती है और न लेने पर सज़ा मिलती कि 'प्रॉपर यूनिफ़ार्म कहाँ है? इस प्रकार एक विद्यालय में कॉपियाँ खरीदने के लिए भी बाध्य किया जाता है। आश्चर्यजनक बात यह

लगी कि किसी बच्चे ने 'सीखने-सिखाने' संबंधी प्रक्रियाओं के बारे में अधिक कुछ नहीं कहा। कुछ ने यह ज़रूर कहा कि उन्हें कक्षा में नींद बहुत आती है और पढ़ना अच्छा नहीं लगता है।

किसी-किसी समूह ने अध्यापकों के सौहार्दपूर्ण रवैये की भी बात की, जैसे- माता-पिता को काम दिलवाना, घर के सदस्य की बीमारी में डॉक्टरी मदद देना, दवाईयों से मदद करना, त्योहारों पर उपहार व मिठाई देना आदि। कुछ बच्चों ने बताया कि मैडमें पुराने बर्तन, कपड़े, खिलौनों आदि से भी मदद करती है। बिना पैसे लिए ट्यूशन भी पढ़ाती हैं।

समूह चर्चा से उभरे मुद्दों पर कार्यवाही

1. अश्लील हरकतें करने वाले अध्यापकों की पहचान कर उन पर मुख्य कार्यालय की ओर से सख्त कारवाई की गई। (संप्रति वे मुख्य कार्यालय में स्थानांतरित कर दिए गए हैं, क्योंकि वे विद्यालय में किसी प्रकार की बदले की कारवाई न करें।)
2. बैल्ट व टाई बेचने को बाध्य करने वाली अध्यापिकाओं की पहचान कर उन्हें भविष्य में ऐसा न करने की लिखित चेतावनी दी गई है।
3. घर ले जाकर घरेलू कार्य करवाने वाली अध्यापिकाओं के खिलाफ़ अनुशासनात्मक कार्यवाही की गई है।

सतत् रूप से जारी रहने वाले प्रावधान (संक्षेप में)

1. **अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम एवं कार्यशालाएँ** – इन विद्यालयों के अध्यापकों के साथ कार्यशालाएँ सहभागी प्रशिक्षण पद्धति पर आधारित थीं। मुख्य मुद्दे इस प्रकार हैं –
   - बच्चों के सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ
   - बचपन की समझ
   - जेंडर संवेदनशीलता
   - बच्चे कैसे सीखते हैं
   - आकलन की प्रक्रिया
   - पाठ्यचर्या विषयों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ
   - बाल साहित्य
2. **प्रदर्शन कक्षाएँ** – पाठ्यचर्यक विषयों को लेकर कक्षाओं में पढ़ने-पढ़ाने से जुड़ी प्रस्तुतियाँ दीं। किस प्रकार से भीड़ भरी कक्षाओं को संबोधित करना है, मिश्रित योग्यता वाली कक्षा को कैसे संबोधित करना है, सवालों को कैसे आमंत्रित करना है, विद्यालयी परिवेश को सहायक सामग्री के रूप में कैसे इस्तेमाल में लाना है आदि विषयों पर प्रस्तुतियाँ हुईं। समावेशी कक्षा कैसे हो, बहुभाषिता कैसे संसाधन बने? इस पर भी चर्चा हुई।
3. **पुस्तकालय व बाल-साहित्य** – वित्तदाता संस्था की ओर से प्रचुर मात्रा में बाल-साहित्य उपलब्ध करवाया गया। यह अभ्यास में लाया गया कि प्रतिदिन बच्चे पुस्तकों से अवश्य रूबरू हों। शुरू-शुरू में पुस्तकें घर ले जाने की मनाही थी, पर अब आठ स्कूल घर के लिए भी पुस्तकें देते हैं। इस कार्य संचालन की ज़िम्मेदारी कहीं-कहीं पर विद्यार्थियों के पास है।
4. **सुझाव पेटी व बाल संसद** – विद्यालय में लकड़ी की एक-एक सुझाव पेटिका रखी गई। शुरू-शुरू में यह भी कारगर नहीं थी-कारण?

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 32 28-12-2015 AM 11:56:49

- विद्यार्थी लिख नहीं पाते थे।
- गोपनीयता का विश्वास नहीं दिलाया गया था।
- पेटी प्रधानाचार्य के कमरे के बाहर थी।

इन पर विचार किया। अब स्थिति यह है कि प्रत्येक विद्यालय में 8-10 पत्र रोज़ मिलते हैं भले ही टूटी-फूटी भाषा हों। बाल संसद भी बनाई गई जिसमें शिक्षा मंत्री, भोजन मंत्री, सामाजिक न्याय मंत्री सभी बच्चे ही हैं।

यहाँ सावधानी बरती गई कि इन ज़िम्मेदारियों को सँभालने के लिए सभी बच्चों को मौके मिल पाएँ।

5. **विद्यालय प्रबंधन समिति का गठन व अभिभावकों के साथ बैठकें** – शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 का अध्याय 4 खंड 21 'विद्यालय प्रबंधन समिति' के गठन की अनुशंसा करता है। प्रशासन से 'नोटीफ़िकेशन' जारी करवाकर लोकतांत्रिक रूप से प्रबंधन समिति का गठन किया गया व विद्यालयी कार्यों के प्रति उनकी जबावदेही भी सुनिश्चित की गई। बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने, उनकी व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखने, भद्र भाषा में उनके साथ पेश आने जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई।
6. **शौचालय व पेयजल का प्रबंध** – संस्था द्वारा दिए गए वित्तीय सहयोग से प्रत्येक विद्यालय में दो-दो शौचालय नए बनवाए गए। पुरानों को दुरुस्त किया गया। पानी की टंकी भी खरीदी गई जिससे पानी की कमी न हो। इसी प्रकार पेयजल हेतु भी एक-एक वॉटर कूलर दिया गया। रखरखाव का उत्तरदायित्व विद्यालय प्रबंधन समिति को दिया गया।

(नियमित सफ़ाई की व्यवस्था का उचित प्रबंधन नहीं हो पाया है।) इस प्रकार से गैरजोखिम वाला माहौल तैयार करने के लिए भिन्न-भिन्न स्तरों पर कार्य किए गए। संप्रति स्वैच्छिक संस्था ने स्वयं को पीछे कर लिया है। अब मंडलीय शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) पर उत्तरदायित्व है कि नियमित रूप से 'फ़ॉलो-अप' करे तथा दूसरे विद्यालयों को भी इसी तरह का माहौल बनाने के लिए प्रोत्साहित करे।

लेख की समाप्ति एक वाक्य से करना चाहूँगी – बात बहुत नयी नहीं, तो पुरानी भी नहीं है।

एक विद्यालय में गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर जी मुख्य अतिथि के रूप में गए। उन्होंने देखा सभी बच्चे वर्दी में हैं। सभी कतारबद्ध खड़े हैं। यंत्रवत् स्वागत गीत हुआ। अध्यापक के निर्देश पर बिना कतार तोड़े, बिना किसी तरह की हलचल के सभी चुप्पी साधे कक्षाओं में गए।

जलपान के बाद उन्हें कक्षाओं का मुआइना करने के लिए ले जाया गया। उनके आगमन पर बच्चे एक साथ उठते, समवेत स्वर में 'जयहिंद' कहकर बैठ जाते। न सवाल न कोई प्रतिक्रिया बस अपनी पुस्तक में दृष्टि गढ़ा देते। लगभग हर कक्षा में कुछ इसी तरह के दृश्य थे।

जाते समय मुख्य अध्यापिका ने जानना चाहा कि उन्हें विद्यालय कैसा लगा? गुरु रवींद्रनाथ जी ने प्रश्न के उत्तर में प्रश्न किया, "महोदया, क्या आपके विद्यालय में बच्चे भी पढ़ते हैं?"

इस सवाल के परिप्रेक्ष्य में हम अपने विद्यालयों के माहौल पर गौर करके आगे बढ़ सकते हैं।

❑❑❑

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 33 28-12-2015 AM 11:56:49

खेल-खेल में विज्ञान

मणि सिंह*

विज्ञान एवं गणित अधिकांश बच्चों के लिए कठिन तथा परेशान करने वाले विषय हो सकते हैं। एक विज्ञान की शिक्षिका होने के नाते मेरे सामने हमेशा एक चुनौती होती है कि मैं विज्ञान के पाठों को बच्चों के सामने कैसे प्रस्तुत करती हूँ और कितनी सरलता से उनके अंतःमन से जोड़ पाती हूँ। इसी प्रयास में मैंने छोटी कक्षा के बच्चों को विज्ञान एक नए अंदाज़ से पढ़ाना शुरू किया। जिसके कारण विज्ञान की पढ़ाई रसहीन और बोझिल होने की बजाय उल्लासपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक हो जाती थी।

बात मध्य प्रदेश के एक कस्बे की है। कोई दस साल पुरानी। मैं प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों को विज्ञान पढ़ा रही थी। साप्ताहिक पाठ्क्रम में एक दिन मैंने खेल को समर्पित कर रखा था। परंतु यह मात्र खेल नहीं होता था, बल्कि क्विज़ या एक नए खेल के रूप में पूरे सप्ताह में पढ़ाए गए पाठों का सार और रिवीज़न होता था। हमारी बुद्धि उन बातों और घटनाओं को ज़्यादा संजोकर रखती है, जिसमें वह शामिल हो या कोई चूक हो गई होती है। खेल या क्विज़ के माध्यम से पाठ का रिवीज़न इस वजह से लाभप्रद हो जाता है। यह बोधगम्य होने के साथ आजीवन मन में समा जाती है। साथ ही इससे बच्चों में एक स्वस्थ प्रतियोगी स्वभाव तथा खोजी तेवर का विकास भी होता है।

दरअसल मेरा प्रयास बच्चों को सिर्फ़ समझाने का नहीं, उन्हें समझने का होता है। जैसे बिना भूख खाना खिलाना कठिन होता है, वैसे ही बिना चाहत के पढ़ाई पूरी नहीं हो सकती। यह एक लौ जलाने वाली बात होती है। एक बीज बोने जैसा। विज्ञान के कठिन सिद्धांतों को चित्रों एवं मॉडल द्वारा आसानी से समझाया जा सकता है। छोटे प्रयोग के द्वारा बच्चे विज्ञान सरलता से सीखते हैं। इस तरह उनमें रुचि

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* दिल्ली विश्वविद्यालय दयाल सिंह कॉलेज

पैदा होने के साथ आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति का विकास भी होता है। विवेकानंदजी का मानना था कि

"आदमी और आदमी के बीच का अंतर उनके आत्मविश्वास में अंतर है। यही एक आदमी को महान और दूसरे को कमज़ोर बनाता है।"

सबसे बड़ी बात यही होती है कि बच्चे विज्ञान सिर्फ़ पढ़ते नहीं उसको जीवन में अपनाते हैं। और यहीं से उनकी अपनी सोच विकसित होनी शुरू होती है। बच्चे जब आस-पास की घटनाओं में विज्ञान के निहितार्थ समझने लगते हैं तो उनकी जिज्ञासा बढ़ जाती है, तब वे नित्य नए प्रश्नों के साथ आते थे। इस तरह मैं विषयों को आगे बढ़ाती थी।

उदाहरण के तौर पर मैंने बच्चों को 'ध्वनि' पढाने के पहले एक खेल खिलवाया। खेल के नाम से बच्चे खुश थे। दो बच्चों को कक्षा की आमने- सामने की दीवार के पास खड़ा कर दिया। फिर एक चौड़े मुँह के बोतल के अंदर से बोलने के लिए कहा जिससे कोई हवा नहीं निकल सकती थी । मैंने उनसे कहा, '' आप लोग एक-दूसरे का नाम पुकारें।'' दोनों बच्चों ने वैसा ही किया। बच्चों ने देखा उनके दोस्त ज़ार के अंदर से बोल रहे थे पर कोई आवाज़ बाहर सुनाई नहीं दे रही थी। सारे बच्चे हैरान थे। बच्चों ने पूछा, "मैडम क्या बात हो गई उन्हें आवाज़ नहीं सुनाई दे रही है।'' तब मैंने समझाया की ''बच्चों ध्वनि तरंगों को संचारित होने के लिए माध्यम की ज़रूरत होती है। यह द्रव, ठोस तथा गैस कोई भी हो सकता है। फ़िर मैंने बच्चों से कहा, '' वे दोनों जारों को एक तार या धागे से जोड़ दें और बात करें।'' इस बार बात बन गई। बाकी बच्चों ने भी इस टेलीफ़ोन को बारी-बारी से आज़माया और अपने अविष्कार पर आनंदित और गौरवान्वित हुए। बच्चों ने जान लिया था कि ध्वनि संचार कैसे होता है और टेलीफ़ोन कैसे काम करते हैं। तभी एक बच्चे ने पूछ लिया कि मैडम मोबाईल फ़ोन तो किसी तार से नहीं जुड़े होते हैं फ़िर कैसे बात हो पाती है ? मैं मुस्कराती हूँ क्योकि मेरा मकसद पूरा हो गया होता है। बच्चों ने न केवल पाठ सीख लिया होता है बल्कि उनके मन में जिज्ञासा ने भी जन्म ले लिया होता है। अब उनके पास अपने प्रश्न हैं। बच्चे जब प्रश्न करते हैं तो समझना चाहिए हम अपना काम सही कर रहे हैं। दरअसल उनके यही प्रश्न हमारा भी मार्गदर्शन करते हैं। एक बार विवेकानंद जी ने कहा था कि 'एक बच्चा खुद से ही सीखता है। लेकिन आप उसके मार्ग की बाधाओं को हटाकर उसे अपने तरीके से आगे जाने में मदद करते हैं'

कई बार विषय बच्चों के लिए इतना नया होता है कि उनके मन में कोई तस्वीर नहीं बन पाती। इसलिए गुरुत्वाकर्षण को समझने के लिए मैंने ग्लोब को सामने रख कर उस पर मनुष्य की कुछ आकृतियों को चिपका दिया। फ़िर ग्लोब घुमा कर बताया कैसे हम घूमती हुई

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 35 28-12-2015 AM 11:56:50

पृथ्वी पर टिके रहते हैं। जैसी कि उम्मीद थी बच्चों ने पूछ ही लिया कि “मैडम हम पृथ्वी पर कैसे चिपके रहते हैं? “अंतरिक्ष में क्यों नहीं गिर जाते? फ़िर मैंने बच्चों को चुंबक का जादू दिखाया। जिस तरह से चुंबक अदृश्य बल से लोहे की चीज़ों को अपनी ओर खींच कर चिपका लेता है उसी प्रकार पृथ्वी भी हमें और दूसरी सभी वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है। जिस बल से पृथ्वी हमें खींचती है उसे गुरुत्वाकर्षण बल कहते हैं। साथ ही बच्चों की रुचि को देखते हुए मैंने चुंबकत्व का पाठ भी पढ़ाया। साथ ही उन्हें चुंबक के व्यावहारिक उपयोग भी बताए जैसे कंपास के प्रयोग से दिशा ज्ञान। चुंबक पाने कि उनकी बलवती इच्छा को देखते हुए मैंने उन्हें कृत्रिम चुंबक बनाने कि विधि से अवगत करवाया। पहली बार बच्चों ने बैटरी से लोहे की मोटी कील पर लपटी तार में विद्युत प्रवाहित कर चुंबक बनाना भी सीखा।

एक बार बच्चों को ऑस्मोसिस समझने में दिक्कत आ रही थी। तब मैंने उन्हें एक घरेलू प्रयोग से इसे समझाने का निश्चय किया। एक बड़े आलू को छील कर उसे मैंने एक कटोरी का रूप दे दिया। उस कटोरी को रंगीन जल से भरे पात्र में रखा और आलू की कटोरी में नमक का घोल डाला दिया। बच्चों ने देखा थोड़ी देर में स्याही का रंगीन जल आलू की कटोरी में भर गया था। यह आलू के बाहर से जल का नमक के साथ घोल में प्रवाहित होने से संभव हुआ था। इस तरह ऑस्मोसिस समझने में बच्चों को बहुत आसानी हुई।

मेरा प्रयास अपने छात्र -छात्राओं को विज्ञान पढ़ाने तक सीमित नहीं होता, बल्कि मैं चाहती हूँ कि वे

विज्ञान को अपने जीवन में उतारें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमारे जीवन को सरल एवं सुव्यवस्थित बनाते हैं। साथ ही मैं चाहती हूँ कि मैं अपने विद्यार्थियों के मन में विषय को लेकर जिज्ञासा पैदा कर सकूँ। मार्च 1992 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय सलाहकार समिति स्थापित की गयी थी, जिसे यशपाल समिति के रूप में भी जाना जाता है। इस रिपोर्ट में यह बात प्रमुखता से उभर कर आई थी कि हमारे स्कूल जा रहे अधिकांश बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा एक रुचिहीन, अप्रिय और कड़वा अनुभव होता है। इसका एक प्रमुख कारण था शिक्षा का बोझिल तथा परीक्षा केंद्रित होना। रिपोर्ट में यह बात भी सामने आई थी कि विगत वर्षों में वजनी स्कूल बैग कि समस्या और भी बदतर हो गई है।

एक बार एक होशियार बच्चे ने पूछ लिया “मैडम आपने बताया कि पौधे ऑक्सीजन बनाते हैं पर हमें पता कैसे चलेगा?” फ़ोटोसिंथेसिस समझाने के लिए मैंने जलीय पौधे हाइड्रिला को बीकर में रख कर कीप

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 36 28-12-2015 AM 11:56:50

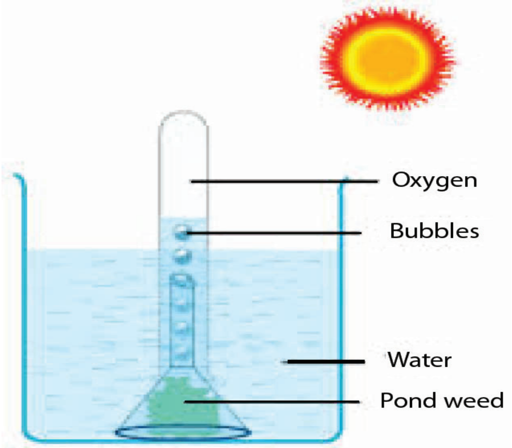

से ढक दिया फ़िर कीप को एक छोटे बीकर से उल्टा ढक कर पानी से भर दिया और धूप में रख दिया। कुछ देर में निकलने वाली गैसीय बुलबुलों ने बच्चों को भरोसा दिला दिया की पौधे सचमुच ऑक्सीजन बनाते हैं। यह पढ़ाई किताबी पढ़ाई से बिलकुल अलग है।

विज्ञान की शिक्षिका होने के नाते मुझे बच्चों को एक और महत्त्वपूर्ण विषय से जोड़ना था। वह था पर्यावरण। चौथी पाँचवीं कक्षा के नन्हे मन मस्तिष्क में पर्यावरण जैसे संवेदनशील विषय की जागरुकता पैदा कर उनमें अच्छे नागरिक के संस्कार भरना मेरा अगला लक्ष्य था। पर्यावरण की सुरक्षा एवं सफ़ाई की समझ इन्ही संस्कारों से संभव है। पर यह काम भी कठिन नहीं था। बालमन तो प्रकृति वश कोरे कैनवास होते हैं। आवश्यकता थी तो बस उसमें पर्यावरण के रंग भरने की। इसके लिए भी मैंने खेल का माध्यम चुना।

ज़ाहिर है बच्चे 'अर्थ समिट' या विश्व पर्यावरण सम्मलेन नहीं कर सकते। इन्हें तो बस इनकी ही सहज एवं सरल भाषा में कठिन विषयों को समझाना हम शिक्षकों का मूल उद्देश्य होना चाहिए।

प्रसिद्ध इतालवी शिक्षाविद् मारिया मोंटेसरी के अनुसार 'बच्चों की शिक्षा का लक्ष्य बच्चों में ज्ञान के प्रति एक प्रेम पैदा करना होना चाहिए।' इसलिए बच्चों को एक गैर-प्रतिस्पर्धी माहौल में अपनी रुचि के अनुसार उनकी गतिविधियों को चयन करने की स्वतंत्रता दी जाती है। आदतें और कौशल जो कम उम्र में सीखी जाती हैं यही बाद में उनके व्यक्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा बन जाता है। ये गुण ही बच्चों में बेहतर एकाग्रता, अधिक आत्मविश्वास और निरीक्षण की क्षमता पैदा करते हैं। अतः शिक्षण के दौरान इन बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी होता है।

यह बात उन दिनों की है। जब मैं पाँचवीं कक्षा के बच्चों को पर्यावरण विज्ञान पढ़ा रही थी। मुझे बच्चों को ' जीवन में वृक्षों के महत्त्व , खाद्य शृंखला

तथा परिस्थिक तंत्र' से पहली बार परिचय करवाना था। मैंने इसकी शुरूआत एक अनूठे खेल से की। मैंने कहा, " बच्चों आज एक नया खेल खेलेंगे। " सभी बच्चे सजग और प्रफुल्लित हो कर मेरी ओर देखने

लगे। इसके लिए मैंने पहले से तैयारी कर रखी थी। मेरे पास कार्डबोड पर बनी आकृतिया थीं। इसमें विभिन्न पौधे, फल-फूल, तोते, बाज, हिरन, बकरी, शेर एवं मनुष्य सभी थे। जिन्हें बच्चों ने अपनी पसंद के अनुरूप अपने गले में लटका लिया था। अब वे पारिस्थितिकी तंत्र के महत्वपूर्ण घटक बन गए थे। आपस में खेलते हुए अंतः क्रिया कर रहे पूरी कक्षा के बच्चे इस खेल मे शामिल थे। पहले तो मैंने बच्चों को हर एक घटक जैसे –फल, पौधे, पशु-पक्षियों से परिचित कराया, वह भी नए अंदाज़ में – "यह आम है, फलों का राजा और यह है अमरूद ताज़ा-ताज़ा, यह है केला जो कभी नहीं होता अकेला, यह काली काली जामुन लगती है मनभावन, यह सेब लाल लाल करते बड़े कमाल हम इन्हें कहाँ से लाते? इन्हीं वृक्षों पर हैं फलते और बाज़ारों में हैं मिलते।"

'समझे बच्चों ?' बच्चे ज़ोर से बोले , "जी मैडम हम समझ गए। "

मैंने परिचय को आगे बढ़ाया -

"ये चिड़िया प्यारी-प्यारी, लगती है न्यारी-न्यारी,

ये शेर, हिरन, बकरियाँ, कितनी सुंदर है दुनिया पर हम इसमें कहाँ हैं ?

हरी - भरी ये दुनिया सारी, कितनी प्यारी कितनी न्यारी

मीठे ताज़े फल खाते हम, सुंदर फूल - पक्षी देखते हम

हरे हरे यह वृक्ष हैं, साँस हमें देते ये सब हैं"

"अच्छा देखो बच्चों अगर आम - केले आदि फल न होते तो चिड़िया क्या खातीं?"

बच्चों ने जवाब दिया,"नहीं, बिना कुछ खाए चिड़िया मर जातीं।"

फ़िर आगे मैंने पूछा, "अच्छा तो चिड़िया नहीं होतीं तो बाज़ क्या खाते? क्या वे जीवित रहते? अब आप समझे कि पेड़ क्यों ज़रूरी हैं ? "

बच्चों ने कहा, "जी मैडम हम समझ गए। पेड़ हमें फल- फूल, अनाज और हवा देते हैं।"

फ़िर मैंने बच्चों को खाद्य शृंखला में खड़ा किया और समझाया कैसे पौधे फल तैयार करते हैं और उन्हीं फलों को तोते खाते हैं। फ़िर उन तोतों को बड़ी चिड़िया जैसे बाज़ खाती है। इस तरह प्रकृति में सब एक दूसरे पर और अंततः वृक्ष पर निर्भर रहते हैं। पौधे ही सूरज की रोशनी में हवा-मिट्टी व जल से फल बनाते हैं। यह एक व्यवस्थित तंत्र होता है जो परिस्तिथिक तंत्र कहलाता है।

जब मैंने कहा, "बाज़ शृंखला से निकल कर बाहर बैठ जाएँ। आगे मैंने पूछा, अब जब बाज़ चले गए तो चिड़ियों को कौन खाएगा?"

बच्चे चुप रहे , तभी एक बच्चे ने कहा कि कोई नहीं। फ़िर मैंने पूछा, " फ़िर क्या होगा?"

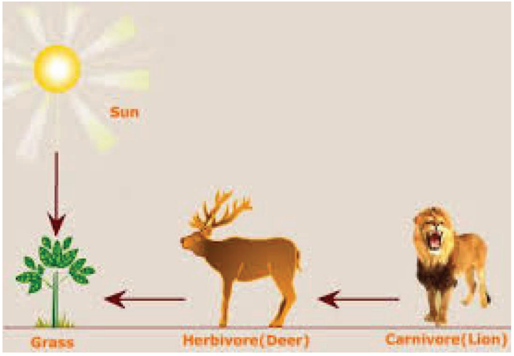

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 38 28-12-2015 AM 11:56:51

बच्चों ने कहा, “सब चिड़िया ज़िंदा रहेंगी।” बच्चों की बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा, “यानि चिड़ियों के बच्चे बड़े होंगे और उनकी जनसंख्या भी ज़्यादा होगी। इसका परिणाम यही होगा की चिड़िया सारे फल खा जाएगी।और लंबे अंतराल में सारे फल पत्तियाँ चिड़िया खा जाएँगी तो उनसे नए पौधे नहीं बनेंगे। इस तरह से सारा तंत्र बिगड़ जाएगा।” इस तरह बच्चों ने समझा कि वृक्ष हमारे लिए कितने ज़रूरी हैं और वे पूरी खाद्य शृंखला को कैसे प्रभावित करते हैं।

इसी तरह जंगल के पारिस्थिकी तंत्र को भी बच्चों ने समझा। हरी घास - पौधे को बकरी और हिरन खाते है, जिन्हें शेर खाते हैं। लेकिन जब शेर नहीं बचेंगे तो जंगल का तंत्र असंतुलित हो जाएगा। इसी तरह जब घास एवं पौधों को खाने वाले हिरन व बकरी नहीं रहेंगे तो शेर क्या खाएगा ? तब शेर भूखा मर जाएगा और इस तरह पूरा तंत्र असंतुलित हो जाएगा। अब बच्चे समझ रहे थे की पारिस्थितिकी तंत्र के सभी घटकों का कितना महत्व है और वे पर्यावरण के लिए क्या कर सकते हैं।

विज्ञान शिक्षण पर गठित नेशनल फ़ोकस ग्रुप ने अपने स्थिति पत्र (Position Paper of National Focus Group on Teaching of Science) में विज्ञान शिक्षण की बुनियादी समस्या को गहराई से देखा-समझा है। पत्र में यह रेखांकित किया गया है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों की शिक्षा आनंदपूर्ण और उनके चारों ओर की दुनिया को खोज से शुरू किया जाना चाहिए। इस चरण का उद्देश्य बच्चों की जिज्ञासा का पोषण करना हैं। साथ ही इसमें रटंत शिक्षा को हतोत्साहित कर जांच एवं कौशल के विकास का समर्थन किया गया है।

आज शिक्षण के लिए कई उपयोगी तकनीक उपलब्ध हैं। जिनका प्रयोग शिक्षण की गुणवत्ता को समृद्ध करता है, परंतु खेल और प्रयोगों के माध्यम से जब शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे के साथ सीखते-सिखाते हैं तो यह परंपरा बेमिसाल होती है। इस माध्यम से न केवल ज्ञान बल्कि मानवीय मूल्यों का भी हस्तांतरण होता है। जिसका प्रभाव भी व्यापक एवं दूरगामी होता है। आज मैं महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाती हूँ पर आज भी मेरी कोशिश यही होती है कि मैं पढ़ाई को बोझिल नहीं बनने दूँ। वस्तुतः शिक्षा एक उल्लास का विषय ही होना चहिए।

❑❑❑

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 39 28-12-2015 AM 11:56:51

संदर्भ

एन. सी. ई. आर. टी. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005*. नयी दिल्ली

स्वामी विवेकानन्द साहित्य संचयन, रामकृष्ण मठ. 2006

Position Paper. *National Focus Group on Teaching of Science*. NCERT 2006

वेबसाईट –

www.academics-india.com/yashpal-committee-report.pdf

www.montessoritraining.net

www.solutionforchildproblem.com

www.webspace.ship.edu

7

गणित का अर्थपूर्ण शिक्षण

डोरी लाल*

सारांश

गणित हमारे जीवन के हर पक्ष में व्याप्त है। चाहे मज़दूर हो या कोई व्यापारी, अभियंता या बेरोज़गार, सभी का गणित के साथ एक सहज नाता और कम से कम उस स्तर की योग्यता जिस स्तर पर व्यक्ति उसका उपयोग करता है, एक समतामूलक समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है। सच तो यह है कि भले ही हम स्कूल में सीखे गए गणितीय विषयवस्तु को भूल जाएँ, फ़िर भी गणितीय तर्क प्रक्रिया के अपने अनुभव के द्वारा स्पष्टता और तार्किकता से सोचने के कौशल की क्षमता को बनाए रख पाएँगें। यह जानना कि सीखना क्या है, उसके आधार क्या हैं और उसका गणित से क्या संबंध है, बच्चों को हम किस तरह गणित सिखा सकते हैं और उनके अनुभवों का किस प्रकार गणित के अधिगम में प्रयोग कर सकते हैं। एक अध्यापक के लिए यह जानना अंत्यत आवश्यक है। यहाँ अंतर्निहित मान्यता है कि गणित सीखना न सिर्फ़ हमें अपनी रोजमर्रा की ज़िंदगी में मदद करेगा बल्कि हमारे जीवन की गुणवत्ता भी इससे बेहतर होगी। इस लेख में हम बच्चों की शिक्षा, शिक्षण और सीखने के वातावरण का, परिस्थितियों का अवलोकन करने का प्रयास करेगें। इसका उद्देश्य ये पता लगाना है कि बच्चों कि गहरी समझ को विकसित करने के लिए क्या आवश्यक है।

प्रस्तावना

हम सभी शिक्षकगण यह अनुभव करते हैं कि प्रत्येक कक्षा में कुछ बच्चे सीखने में अधिक तीव्र होते हैं जो कि अन्य बच्चों से गणित के सवाल शीघ्रता से सीख लेते हैं, कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो उन सब के मुकाबले धीमी गति से सीख पाते हैं। कक्षा के बच्चों को हम दो प्रकार से देख सकते हैं- एक वो जिन्हें गणित में रूचि है, और दूसरे वो जिन्हें गणित में रूचि नहीं है। समय के साथ जैसे-जैसे वे बच्चे उच्च कक्षाओं में प्रवेश करते हैं उनके बीच का अंतर और अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ने लगता है। हममें से कई शिक्षक इस स्थिति को बदलने की कोशिश करते हैं और शायद हतोत्साहित और निराश भी हो जाते हैं। कुछ शिक्षक ऐसे भी होते हैं जो कोशिश भी नहीं करते हैं और उसी

* *सहायक प्रवक्ता* गणित शिक्षण आई.ए.एस.ई. शिक्षा संकाय जामिया मिल्लिया इस्लामियाँ, नयी दिल्ली 25

हालात पर ही कक्षा को छोड़ देते हैं। शिक्षक प्रश्नों को हल करने में बार-बार एक ही विधि का उपयोग करते हैं, वही बात बार-बार दोहराकर समझाते हैं, पर उनकी समझाने के तरीके में कोई अंतर नहीं आता। आपको क्या लगता है, ऐसा क्यों होता है ? इस स्थिति में सुधार के लिए आवश्यक है कि हम इसे भली-भाँति समझें और विचार करें कि आखिर यह स्थिति उत्पन्न क्यों होती है ?

हमारी सांस्कृतिक विरासत में गणित का एक महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह एक ऐसा ज्ञान है जो अपनी वैधता के लिए कठोर परीक्षा से गुज़रा है। गणित निगमनात्मक साक्ष्यों के एक प्रतीक पर दृढ़तापूर्वक खड़ा है, यही वह कारण है कि गणित ग्रीक काल से ही ज्ञान की दूसरी शाखाओं में भी काफ़ी संलिप्त है। उदाहरण के लिए ज्योतिषी विद्या, दर्शन, तर्क, भौतिक तथा रसायन शास्त्र इत्यादि। विश्व में ज़्यादातर विद्यालयों में पढ़ायें जाने वाला गणित अपेक्षाकृत एक समान और सुपरिभाषित है। अपनी अगली पीढ़ी को जो कुछ सौंप रहे हैं उसमें गणित की स्थिति को लेकर एक सहमति हमें देखने को मिलती है। संगीत की तरह गणित भी मानवजाति की खुद को परिभाषित करने वाली एक उपलब्धि और हमारी साक्षी संस्कृति का अहम हिस्सा है।

सीखना से तात्पर्य?

बच्चों के सीखने के बारे में बहुत से तकनीकी मुद्दे जुड़े हैं। बच्चे पढ़ना कैसे सीखते हैं? बच्चे गिनना कैसे सीखते हैं? इन क्रियाओं का क्या क्रम हो सकता है? पढ़ना, सीखने और पैटर्न पहचाननें में क्या अंतर व क्या संबंध है ? सोचना, समझना, पढ़ना, व्यक्त करना व तर्क कर पाना इस प्रकार की क्षमताओं में कोई अंतर है? याद करना रटना ज़रूर हो सकता है, सीखना कदापि नहीं। सीखने का तात्पर्य समझने से है और अवधारणा की समझ की शुरूआत से। जैसे कि बच्चों को गणित पढ़ाने में 1 से 100 तक गिनती का एक क्रम में बोलना आना ज़रूरी है , लेकिन बच्चों से ये अपेक्षा कब करनी चाहिए? हमारे लिए 100 तक क्रम में गिनती बोल पाने से भी ज़्यादा आवश्यक है कि बच्चा 20 या 30 तक वस्तुओं को गिन पाए, यह बता पाए कि गिनती की क्रम संख्या के छोटे-छोटे होने पर कैसे निर्भर है।

सीखना एक प्रक्रिया है न कि एक घटना। इसका अर्थ यह है कि हम जो भी कार्य करते हैं उससे हम कुछ सीखते हैं। कोई ऐसा पल नहीं होता जब हम कह सकें कि मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता था और अब जान गया। सीखना धीरे-धीरे चलता रहता है और इससे हमारी अवधारणाएँ धीरे-धीरे ज़्यादा व्यापक और ज़्यादा संदर्भो में उपयोग के योग्य बनती है।

सीखने के विषय में दी गई विभिन्न परिभाषाओं का सार अरनेस्ट हिलगार्ड (Ernest Hilgard) की इस परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है- 'सीखना वह प्रक्रिया है जिससे कोई क्रिया प्रारंभ होती है, अथवा सामना की गई परिस्थिति से प्रतिक्रिया के द्वारा परिवर्तित की जाती है। बशर्ते क्रिया में परिवर्तन के लक्षण स्वाभाविक प्रतिक्रिया की प्रवृतियाँ , परिपक्वता अथवा जीव को अस्थायी दशाओं के आधार पर न समझाई जा सकें।'

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 42 28-12-2015 AM 11:56:52

सीखना,बच्चे के लिए अपने आस-पास की बातों को समझने, उनका प्रयोग करने, अपने विचारों को सशक्त रूप में रखने या व्यक्त करने, उनके लिए संघर्ष करने,अपनी ज़िंदगी को आंनदमय बनाने, समाज में अपना एक स्थान बनाने आदि कारणों से महत्वपूर्ण हो सकता है।

सीखने की बुनियाद

किसी तथ्य का सीखना तभी संभव है, जब उसके अलग-अलग पहलू उजागर हों। इन आयामों में कुछ उस अवधारणा के अन्य तथ्यों के साथ संबंध भी हो सकते हैं, कुछ उसके ज़्यादा गहरे प्रयोग से संबंधित हो सकते हैं और कुछ मिलती –जुलती बातों के साथ समानता व अंतर की समझ के भी हो सकते हैं। कुछ इस तथ्य इस बात के हो सकते हैं कि वह अवधारणा और उससे जुड़ी विचारधारा किन परिस्थितियों को समझने में मदद देती है और किन परिस्थितियों को नहीं। इसके लिए बच्चे के द्वारा किए गए कार्य का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर उसे समझना होगा। इस समझ की कोशिश के बाद ही हम उसे उपयुक्त गतिविधियों की तरफ ले जाएँगें। आकलन इसलिए आवश्यक है कि शिक्षक जान सके कि बच्चे ने क्या सीखा है और इसके आधार पर उन्हें आगे क्या सीखना है।

उदाहरण के तौर पर आयतन की अवधारणा को ले सकते हैं जैसे कि बच्चा यह जानता है कि कप या गिलास में से किसमें दूध कम है और किस में अधिक, उसमें तल की ऊँचाई से मालूम किया जा सकता है। वह यह भी आसानी से सोच सकता है कि एक छोटे बर्तन में द्रव डालने के लिए कई बार छोटे बर्तन को भरकर डालना पड़ता है, लेकिन अलग-अलग आकार के बर्तनों में पानी की मात्रा की तुलना करना काफ़ी बाद में आता है। इसी तरह से शुरू से ही समूहीकरण करने में बच्चे स्पष्ट गुणधर्मों के आधार पर बँटवारा कर सकते हैं। वह समूहीकरण को शायद सिर्फ़ वस्तु छाँटने के रूप में देखें। समूहीकरण की ज़्यादा व्यापक समझ बनाने के लिए ज़रूरी है, समूह में से चीज़ें, अलग-अलग तरह के आधारों पर छाँटना जैसे- रंग, गंध, आकार उपयोग आदि। इस अवधारणा को गहरा करने के लिए यह भी आवश्यक है कि धीरे-धीरे बच्चे कम अंतर वाली चीज़ों के और अमूर्त गुणधर्मों के आधार पर भी समूह बनाना सीखें।

बच्चे सीखते कैसे हैं?

विद्यालय के वातावरण में यह दबाव होता है कि शिक्षक की भाषा बच्चे समझें। लेकिन इसके लिए यह ज़रूरी है कि बच्चे को शुरू से ही वे भाषाएँ भी सिखानी चाहिए जो शिक्षण – अधिगम के लिए आवश्यक हो। मुख्य बात यह है कि बच्चे सीखते तभी हैं जब वह इस प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार हो। सिर्फ़ बैठकर सुनने से या सुना हुआ दोहराने से सीखना नहीं होता। यह सक्रियता तभी होगी जब बच्चों की भाषा शिक्षक समझेगा और उसका उपयोग करेगा। एक अनुसंधान के अनुसार –'शिशु और बच्चे वैज्ञानिक की तरह होते हैं। वे संसार का अनुभव करके तथा प्रेक्षण / अवलोकन करके सबूत एकत्रित करते हैं। गुड़िया से खेलते समय, खिलौनों को तोड़ते समय में सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। हर बच्चे का सीखने का तरीका अलग हो सकता है। कोई शायद प्रलोभन से सीखे, कोई प्यार पाने के लिए सीखे, कोई

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 43 28-12-2015 AM 11:56:52

दबाव डालने पर सीखे, कोई प्यार से सीखे, तो कोई सिर्फ़ बाकी बच्चों पर रोब डालने के लिए या फ़िर घर वालों को प्रभावित करने के लिए सीखे। यह सब बच्चों की व्यक्तिगत विभिन्नताएँ होती हैं। बच्चों के जीवनचक्र व परिस्थितियों के साथ-साथ यह बदलता रहता है।

पांरपरिक विचार धारा अभ्यास केंद्रित शिक्षण पर कम, प्रक्रिया पर ज़्यादा आधारित है। कक्षाओं में गणित की शिक्षा अब भी आमतौर पर इसी तरीके से होती है। बच्चों के सीखने में 'याद करने' और 'सही विधि' के अभ्यास करने पर ही ज़ोर रहता है। गिनती करना, लिखना, संक्रियाओं को करना आदि सभी बिना किसी तरह के तर्क और कारण बताए या तो अभ्यास से करवाए जाते है या फ़िर एक क्रिया विधान के रूप में पेश किए जाते हैं। शिक्षक दर्जनों नियमों को याद रखने के नुस्खों और रटाई के लिए तुकबंदियों का प्रयोग करते है। इन दिनों आनंदमयी शिक्षण के नाम पर गणित को गीत से सिखाने वाले गुर बहुत प्रसिद्व हुए हैं। ये सभी अभ्यास केंद्रित शिक्षण के ही उदाहरण हैं।

इस विधि में गणित को एक उपकरण की तरह देखा जाता है। उपकरण को समझने में कोई तुक नहीं होती उसे तो काम में लेना आना चाहिए। इसी तरह ब्याज़ की गणना करने के तरीकों को समझने में कोई तुक नहीं मानी जाती, बस ब्याज़ की गणना करने का तरीका आना चाहिए। ऐसे भी कह सकते हैं कि गणित को सूत्रों का शास्त्र माना जाता है। सूत्र याद करने और सही जगह लगाने की चीज़ है समझने की नहीं। सूत्र लगाने की सही जगह वही है जो शिक्षक ने बताई हैं। आमतौर पर इस धारा के लोगों के लिए गणित वैसा ही ज्ञान है, जैसा ज्योतिष। इस धारा के शिक्षण में जितने ज्यादा गणितीय तथ्य रटाए जा सकें उतना ही अच्छा हैं और जो ज़्यादा और जल्दी रट ले वह काबिल और विद्वान। शायद हम इसी को सीखना समझ बैठे हैं।

गणित शिक्षण की प्रचलित प्रवृतियाँ

स्कूलों में गणित शिक्षण के चलन पर नज़र डालें तो मुख्यत: दो प्रकार के स्वरूपों की पहचान आसानी से की जा सकती है। प्रथम प्रकार का चलन ठोस शिक्षण सामग्री के उपयोग पर अत्यधिक बल देता है। इस चलन में विश्वास करने वालों की मान्यता है कि हम एक ही उम्र के सीखने वालों के लिए ठोस आकृतियों द्वारा ही अनुभव ग्रहण करने का महत्व बना सकते हैं। इसके अनुसार गणितीय अनुशासन में एक महत्वपूर्ण पद 'मान लो' का जैसे कोई अर्थ ही नहीं है। इसका महत्व होना तो दूर की बात है। ठोस आकृतियों को अत्यधिक महत्व देने की प्रवृति, शायद विज्ञान में प्रयोग के अनुचित महत्व को अनावश्यक रूप से गणित मे भी लागू करने का कारण है। इसी के परिणाम स्वरूप इनका आग्रह होता है कि कक्षा में ज्यामिति की किसी प्रमेय को समझाते हुए शिक्षक को श्यामपट्ट पर प्रयोग होने वाले ज्यामितीय बॉक्स का उपयोग करके सटीक आकृति बनानी चाहिए अन्यथा प्रमेय सिद्व नहीं की जा सकती। इस विधि पर विश्वास रखने वाले स्वयं को जीन पियाजे (Jean Piaget) तथा मॉन्टेसरी (Montessori) से प्रेरित मानते है। इस प्रवृति को हम 'गणित में प्रयोग की मूल प्रवृत्ति' का नाम दे सकते हैं।

दूसरी बहुप्रचलित प्रवृत्ति गणित विषय में कुछ सूत्र याद करने, कुछ जमा-घटा करने की कुशलता तक

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 44 28-12-2015 AM 11:56:53

सीमित करके देखती है। इस प्रवृत्ति में विश्वास रखने वालों के लिए पहाड़े, संख्या पद्धति, चिह्न, प्रतीक, सूत्र, संक्रियाओं के संकलन की कुशलता आदि गणित के एकमात्र महत्वपूर्ण हिस्से हैं। इनके लिए गणितीय सोच की बुनियादी क्षमताएँ स्वयं सिद्ध मान्यताएँ याद रखने की ज़रूरत है। यह विचार मौखिकतावादी या रटन्तवादिता के सिद्वान्त पर आधारित है। इनका मानवीय सोच की सृजनात्मकता से कोई सरोकार नहीं दिखता। इनको हम 'गणित में सरलीकरण का मूल' कह सकते है।

समझ तथा इसके स्वरूप

अनुभव की व्याख्या करने, उसे व्यवस्थित करने एवं उसका विश्लेषण करने के तरीकों की संपूर्ण मानवीय सामग्री, समझ शब्द को पारिभाषित करती है। विषय-वस्तु को समझने के लिए हम अवधारणाओं, अवधारणात्मक संरचनाओं तथा अवधारणाओं को व्यवस्थित करने के सामान्य नियम का प्रयोग करते हैं। विचार मंथन करने पर ज्ञात होता है कि समझने या जानने के अनेक तरीके हैं। उन तरीकों को मोटे तौर पर कुछ अलग-अलग समूहों में विभाजित किया जा सकता है। समझ के स्वरूपों को अलग-अलग पहचानने के लिए हार्स्ट महोदय ने निम्न आधार सुझाए हैं –

1. विशिष्ट स्वरूप की अवधारणाएँ
2. अवधारणाओं के बीच के संबंध तथा इन संबंधों से उत्पन्न तार्किक संरचनाएँ जो कि स्वरूप में अलग हैं।
3. समझ के स्वरूपों के भीतर उत्पन्न अभिव्यक्ति के प्रकार
4. सत्य की कसौटियाँ तथा जाँच प्रक्रियाएँ जो अलग-अलग स्वरूपों के लिए अलग-अलग हैं।

कोई भी विज्ञान का छात्र यह सही-सही बता सकता है कि विज्ञान के कौन-कौन से अंश मूलत: गणित से संबंधित हैं। हालाँकि गणित, समझ का एक महत्वपूर्ण स्वरूप है तथा यह अपने आप में बाकी सभी विषयों से अलग है। इसलिए इस अनूठी प्रवृत्ति का उपयोग गणित की प्रकृति को समझने में लाभदायक हो सकता है।

संख्याओं की समझ

संख्या/अंक गणित की सबसे बुनियादी अवधारणा है। इसके अभाव में गणित कल्पना से परे है। बच्चे के विकसित होते ही मस्तिष्क में संख्या का ज्ञान कैसे निर्मित होता है, मनोवैज्ञानिक संदर्भ में हम इसे ज्ञान को सीखने के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। हम जिन उपकरणों और संकेतों के द्वारा गणितीय ज्ञान को अन्य उद्देश्यों की दृष्टि से निर्मित करते हैं, वह शायद गणितीय बोध की समझ के लिए अपर्याप्त है। औपचारिक रूप से संख्या की अवधारणा को हम स्वयं सिद्ध मान्यता के रूप में परिभाषित करते हैं।

जीन पियाजे महोदय ने बच्चों की संख्याओं संबंधी समझ को परखने हेतु एक महत्वपूर्ण प्रयोग किया। जिसमें उन्होंने संख्या संरक्षण के एक प्रयोग में बच्चों को समान वस्तुओं की दो पंक्तियाँ दिखाईं। दोनों ही पंक्तियों को इस तरह रखा गया कि एक से दूसरे वस्तु की संगतता स्पष्ट दिखे, जब बच्चों से उन पंक्तियों में रखी वस्तुओं के समान या बराबर होने के बारे में प्रश्न पूछा गया तो बच्चों ने अनुमान के आधार

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 45 28-12-2015 AM 11:56:53

पर बताया कि उन दोनों पंक्तियों में बराबर वस्तुएँ हैं। उसके बाद प्रयोगकर्ता ने बच्चों की उपस्थिति में ही एक पंक्ति की वस्तुओं को थोड़ा फैला दिया। तदुपरांत बच्चों से दोनों पंक्तियों के बारे में फ़िर वही प्रश्न पूछा गया। परिणामस्वरूप यह पाया गया कि काफी बच्चों ने जो अधिकतर छ: साल से छोटे थे, उन्होंने कहा कि ''बड़ी पंक्ति में ज़्यादा वस्तुएँ हैं।'' जबकि उन दोनों पंक्तियों में न तो कुछ जोड़ा गया था और न ही कुछ घटाया गया था। जब इस प्रयोग को कई बार दोहराया गया तो उसके परिणामों की व्याख्या ने एक महत्वपूर्ण बहस को जन्म दिया। (ब्रायंट, 1996) बहस का मुददा यह था कि बच्चे यह क्यों नहीं समझ पाते हैं कि दोनों पंक्तियों में वस्तुओं की संख्या अब भी समान है। इसकी व्याख्या यह हुई कि बच्चे इस पूरे कार्य में अन्तर्निहित सामाजिक पहलू की एक गलत व्याख्या करते हैं। प्रयोगकर्ता कुछ अलग दिखने वाले परिवर्तन करता है और फिर से वही प्रश्न दोहराता है जो पहले पूछा गया था। ऐसी परिस्थिति में बच्चे खुद को उत्तर बदलने के लिए संभवत: बाध्य महसूस करते हैं क्योंकि वे प्रयोगकर्ता की मंशा के बारे में स्पष्ट नहीं होते। प्रयोग में बदलाव लाकर इस परेशानी को कम किया गया।

पियाजे के विपरित गेलमैन (Gelman) का मानना था कि गणना के आधार पर समानता स्थापित करने के लिए मूल शर्त गणना या गिनती करना है। गेलमैन का यह दावा था कि जब तक बच्चे गिनती के कौशल को पूर्ण रूप से विकसित नहीं कर लेते, तब तक वे कई संख्याओं को सापेक्षिक आकलन विश्वासपूर्वक नहीं कर पाते हैं और इसलिए संख्या संरक्षण के इस प्रयोग में सफ़ल नहीं होते।

संख्याओं में संक्रिया

शुरू की कुछ संख्या को सीखने के बाद बच्चे संख्या पद्धति की उत्पत्ति नियम तथा स्थानीय मान आदि को सीख लेते हैं जो उन्हें बड़ी संख्या की गणना में मदद पहुँचाता है। संख्याओं को गिनने के लिए दशमलव संरचनाओं के प्रयोग और उसके उत्पत्ति के नियम को समझना बच्चों के लिए ज़रूरी है। एक अनुसंधान के अनुसार ढाई साल तक के बच्चे संख्या के नामों की पहचान करना सीख जाते हैं यदि उन्हें उपयुक्त शिक्षा माहौल तथा प्रोत्साहन दिया जाए। संख्याओं को गिनने की संरचना में भारतीय परिवारों की भाषाओं में कई बारीकियाँ हैं जैसे – अंग्रेज़ी में 'टीन'का होना, दो अंकों की संख्या के शब्द में एक खास व्युत्क्रम का होना तथा हिंदी में 19, 29..... के संख्या शब्द का होना।

कई स्कूलों में 'मानसिक गणित ' की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। जबकि मानसिक गणित गणनाओं का ऐसा पुलिंदा / समूह है जिसमें बच्चों को कई तरीकों से गणित की समस्या हल करने को प्रोत्साहित किया जाता है जो कि अवधारणात्मक समझ को विकसित करने तथा संख्या को प्रयोग करने में विश्वास प्राप्त करने के दृष्टिकोण से काफ़ी महत्वपूर्ण है। जैसे ही अवधारणात्मक आधार का विकास बच्चे कर लेते हैं। वैसे ही उनका कौशल एक प्रभावशाली दक्षता तक पहुँच जाता है और कई बच्चे ये स्तर, स्पष्ट तौर से बताए गए निर्देशों के अनुसार प्राप्त कर लेते हैं।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 46 28-12-2015 AM 11:56:53

यह तर्कसंगत नहीं लगता है कि बहुत सारे छात्र कुछ-कुछ विशेष संप्रत्ययों में काफ़ी बुरा प्रदर्शन करते हैं, मसलन घटाना, भाग, भिन्न आदि की गणनाविधि। इस प्रकार से बुनियादी संक्रियाओं की गणना विधि को सिखाना उनके प्रयोगात्मक बोध को प्राप्त करने से बिलकुल भिन्न है। गणनाविधि विधियों का एक ऐसा सरलीकरण है, जिसमें संक्रियाओं के साथ गणनाओं को करना होता है। दशमलव का स्थानीय चिह्न इस संकुचन को संभव बनाता है। ऐसे में जब एक अंक की संक्रियाएँ मानकीकृत रूप में नहीं होती हैं, तब विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उदाहरण – जब हम छोटे अंक से बड़े अंक को घटा रहे होते हैं तब, या जब उसमें शून्य भी शमिल हो, तब अधिकतर छात्र-छात्राएँ गलतियाँ करते नज़र आते हैं। कुछ छात्र गलती से यह मान लेते हैं कि वे केवल एक अंक की संख्या से गणना कर रहे हैं। बहुधा इन बच्चों के लिए गणनाक्रम उनकी अवधारणात्मक समझ से अलग का विषय होता है।

चर की समझ

अंक गणितीय कथनों को करते हुए जब छात्रों का अचानक ही पहली बार चर से परिचय होता है, तब वे सामान्यत: उसे नज़र अंदाज कर देते हैं। छात्र यहाँ चरों की व्याख्या किसी वस्तु या बीज के संकेत के तौर पर या एक संख्या के रूप में करते हैं। लेकिन वे इस बारे में विचार एक नियत मान को लेकर करते हैं । कुछ छात्र इन चरों का मान उनके वर्णमाला में स्थान के आधार पर भी करते है, अर्थात अ 1, ब 2 इत्यादि । यह विशिष्ट प्रकार का असमंजस छात्रों के परिचय का परिणाम माना जाता हैं। इसे हम छात्रों द्वारा इस संकेतवाद के अगले स्तर अर्थात् कथनों के समझने के उनके विकासक्रम के अगले पड़ाव के रूप में मान सकते हैं। बीज गणितीय कथनों की संरचना और उनके कार्यों की समझ बीज गणितीय विचार प्रणाली के केंद्र का निर्माण करती है।

निष्कर्ष

ऊपर दिए गए विचार स्वाभाविक रूप से इस बाबत कुछ निष्कर्षों की ओर ले जाते हैं कि कक्षा में गणित की संकल्पना को बच्चों में कैसे सींचा जाए। कक्षागत विश्लेषणों का परिणाम है कि अनुसंधानकर्ता यह जान सका कि बच्चों को अलग-अलग वातावरण या परिवेश में रहते हुए कक्षा अधिगम में जो बाधाएँ आती हैं,वह यह समझने के लिए आवश्यक हैं कि बच्चों में विषय-वस्तु की समझ कैसे विकसित की जाए और कैसे उनके अधिगम-अनुभवों को शिक्षण में समाहित किया जाए। जिससे वह गणित प्रश्नों को हल करते समय अपने आप को असहाय महसूस ना करें और उनमें गणित के प्रति भय उत्पन्न न हो। कई बच्चों को स्कूली शिक्षण में गणितीय संकल्पनाओं की अमूर्त और औपचारिक प्रकृति को समझने में परेशानी का अनुभव होता है। जबकि वह गणितीय संकल्पनाएँ जिन्हें वे अपने अनुभव से सीखतें हैं, वो अनौपचारिक और सहज ज्ञान युक्त होती हैं। इसलिए स्कूली शिक्षण तथा गणित विषय से जुड़े हुए जागरूक नागरिकों, शिक्षकों, स्कूल प्रशासकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों आदि के लिए यह ज़रूरी है कि वे यहाँ उठाए गए मुददों के बारे में किसी न किसी स्तर पर कुछ न कुछ जरूर सोंचे। इसे सबसे अच्छे तरीके से कैसे किया जा सकता हैं1 यह एक खुला प्रश्न है।

संदर्भ

खान फ़रीदा ए. 2004. *लिविंग लर्निंग एंड डूईंग मैथमैटिक्स — ए स्टडी ऑफ़ वर्किंग चिल्ड्रेंन* इन दिल्ली. कन्टेंपरी एजुकेशन डायलॉग, पृष्ठ 199-277

धनकर, आर. 2009. *गणित का सीखना और सिखाना* एन.सी.ई.आर.टी, *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका गणित शिक्षा पर विशेषांक अंक – 3, पृष्ठ 36-47

लर्निंग कर्भ. 2010. स्कूल मैथमेटिक्स पर विशेषांक ए *न्यूज़ लेटर ऑफ़ अज़ीम प्रेमजी फॉउंडेशन अंक* – 2 नवंबर 2010

शर्मा, महेश. 1989. *हाउ चिल्ड्रेन लर्न मैथमेटिक्स* — प्रोफ़ेसर महेश शर्मा का साक्षात्कार जीत बिल डामेनी के साथ लंदन. ऑक्सफ़ोर्ड पोलिटेक्निक स्कूल ऑफ़ एजुकेशन. 90 मिनट एजुकेशन मेथड यूनिट. विडियोकैसेट

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 48 28-12-2015 AM 11:56:53

8

आरंभिक स्तर पर उपलब्ध बाल-साहित्य एवं उसके चयन के आधार

रमेश कुमार*

बच्चा जन्म के उपरान्त ज्यों ज्यों बड़ा होता जाता है वह सुनने की कौशल विकसित करता जाता है। आरंभ में वह मामा, माँ, आदि शब्दों से शुरूआत करके धीरे-धीरे कुछ शब्दों को सुनकर अर्थ ग्रहण करता है और उस पर अपनी प्रतिक्रियाएँ भी देने लगता है। यह प्रतिक्रियाएँ शाब्दिक एवं अशाब्दिक दोनों ही रूप में हो सकती हैं। धीरे-धीरे वह बड़ा होता है और शब्दों के आगे सरल वाक्य ग्रहण की क्षमता भी विकसित कर लेता है। अब ज़रूरत होती है उसे ज़्यादा से ज़्यादा सरल वाक्यों को सुनने की जिन्हें हमारे घरों में माँ-पिता एवं अन्य सगे संबंधी पूरा कर देते हैं।

धीरे-धीरे बच्चे की उत्सुकता कथा, कहानियों, छोटे बाल सुलभ गीतों, लोरियों आदि में होती है। बच्चे की कौतुहल इस रूप में बाहर आती है कि यदि उसे यह कहा जाता है कि बेटा आओ आज तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ, बच्चा सब कुछ छोड़ कहानी सुनने के लिए आतुर हो उठता है। अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए वह तमाम सवाल करता है उसके सवाल कुछ असामान्य प्रकृति के भी हो सकते हैं परंतु वह अपनी जिज्ञासा शांत होने तक सवाल करता जाता है वास्तव में देखा जाए तो इस स्तर पर उपलब्ध बाल-साहित्य काफ़ी कम हैं और यदि उपलब्ध भी हैं तो इनकी संख्या काफ़ी कम है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा आरम्भिक साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत भारत वर्ष में उपलब्ध इस तरह के बाल सुलभ साहित्य के चयन का प्रयास किया गया। प्रारंभ में एक विज्ञापन हिंदी एवं अंग्रेज़ी के मशहूर समाचार पत्रों में दिया गया तथा उनमें बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बाल-साहित्य के बारे में बताते हुए प्रकाशकों से ऐसे बाल-साहित्य की सूची के साथ ही बाल-साहित्य की प्रतियाँ मँगायी गईं। बाल-साहित्य प्रकाशित करने वाले प्रकाशकों को एक निश्चित समयावधि के अंतर्गत अपनी हिंदी एवं अग्रेंज़ी भाषा में उपलब्ध बाल-साहित्य की 3-3 प्रतियाँ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को उपलब्ध करानी थी। जिसमें से बाल-साहित्य का चयन किया जा सके। प्रारंभ में यह गतिविधि (बाल-साहित्य चयन) दो भाषाओं में उपलब्ध थी परंतु गत वर्ष इनमें उर्दू में उपलब्ध बाल साहित्यों को भी जोड़ दिया गया। विज्ञापन के उपरान्त ढेरों की संख्या में

* डॉ. रमेश कुमार, *सहायक प्रवक्ता*, रा.शै.अ.प्र.प. नयी दिल्ली

विभिन्न प्रकाशकों द्वारा पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं। निश्चित समयावधि के उपरान्त विभिन्न प्रकाशकों द्वारा उपलब्ध बाल साहित्यों की एक सूची तैयार की गई जिसमें पुस्तक का नाम, प्रकाशन वर्ष, मूल्य, प्रकाशक आदि से संबंधित सूचनाएँ संकलित की गईं। काफ़ी संख्या में किताबों के होने के कारण इस तरह की सूची में समय लगता है अत: बड़े ध्यान से तीनों हीं भाषाओं में यह सूची तैयार की गई। सूची तैयार करते समय ही कुछ किताबें जो हमारे चयन का आधार नहीं हैं उन्हें आरंभिक स्तर पर ही छाँट लिया गया जैसे कार्य पुस्तिका पाठ्य पुस्तक आदि। इसके अनन्तर बाल-साहित्य के चयन हेतु विषय विशेषज्ञों की एक सूची तैयार की गई जिसमें विषय-विशेषज्ञों द्वारा बाल-साहित्य के बाह्य एवं आतंरिक दोनों ही पहलुओं पर खुलकर विचार किया गया। बाल-साहित्य में चयन के निम्न आधार मोटे तौर पर निर्धारित किए गए हैं —

(क) कहानी कथाओं के संदर्भ में

1. विषय वस्तु — बाल-साहित्य की संपूर्ण विषय सामग्री पर गहनता से विचार किया जाता है। जैसे – विषय वस्तु बच्चों की रुचि के अनुकूल है या नहीं, उपलब्ध सामग्री बच्चों की दुनिया से जुड़ी है, स्थानीय परिवेश का प्रतिनिधित्व करती है, क्षेत्रीय या स्थानीय लोक साहित्य की झलक है या नहीं, कल्पनाशीलता का विस्तार है, विषय वस्तु बच्चों के स्तर के अनुकूल है, विषय वस्तु में दिए गए तथ्य एवं जानकारी सही हैं या नहीं उक्त कसौटियों पर कसने के बाद ही विषय-विशेषज्ञ किसी भी पुस्तक के प्रति अपनी सटीक राय बनाते हैं।
2. भाषा — बाल-साहित्य के चयन का दूसरा आधार उसमें प्रयुक्त भाषा है। बाल-साहित्य में उपयोग में लाई गई भाषा में स्पष्टता होनी चाहिए कथा में क्रम बना रहना चाहिए, जिससे बाल पाठक जुड़ाव महसूस कर सके। भाषा सरल एवं सहज हो बच्चों के स्तरानुकूल हो। मसलन यदि कोई कहानी ब्रज के परिवेश से ली गई हो तो उसमें ब्रज भाषा के भी शब्दों का प्रयोग हो। व्याकरणिक त्रुटियाँ न हो।
3. चित्र — चित्र आरंभिक बाल-साहित्य के चयन का यह एक सबसे सशक्त पहलू है। पुस्तकों में प्रयुक्त चित्र आकर्षक होने चाहिए। चित्रों में प्रयुक्त रंग वास्तविकता को परिलक्षित करने चाहिए। चित्रों में भी कल्पना एवं वैविध्यता होनी चाहिए। चित्र विषय-वस्तु से जुड़े होने चाहिए। आवरण पृष्ठ के शीर्षक एवं चित्रों में मेल होना चाहिए। जैसे –

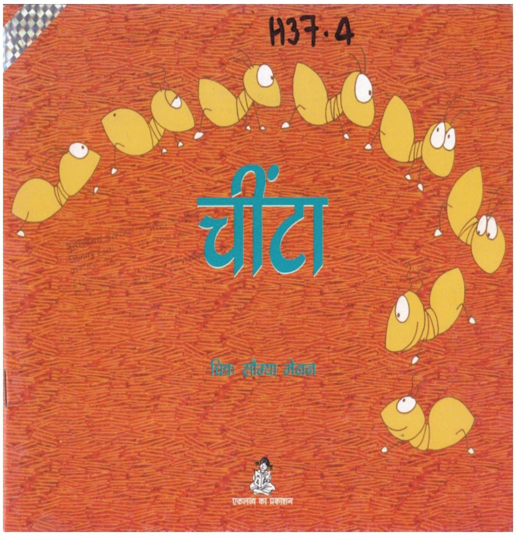

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 50 28-12-2015 AM 11:56:54

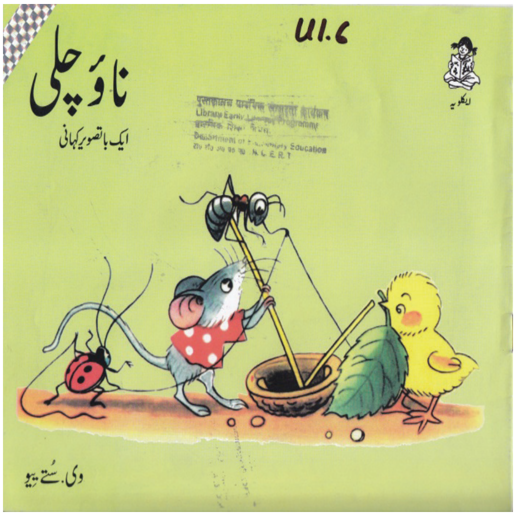

(ख) कविताओं के संदर्भ में

कविताओं में लयात्मकता होनी चाहिए इससे बच्चों का जुड़ाव कविता के प्रति बढ़ता है। कविताओं में भाषा सरल एवं स्वाभाविक होनी चाहिए। कविताओं के प्रस्तुतीकरण में विविधता होनी चाहिए। जैसे यदि कोई कविता बारिश के ऊपर लिखी गई है तो निश्चित तौर पर उस के प्रस्तुतीकरण में चित्रों के साथ बारिश की पूर्ण कल्पना सहजता से दिखनी चाहिए।

आवरण-पृष्ठ — बाल-साहित्य का आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं सुसंगत होना चाहिए, शीर्षक रोचक हों एवं बच्चों को आकर्षित करते हों।शीर्षक एवं विषय वस्तु में तालमेल होना चाहिए।

उत्पादन और ले आहट — पुस्तक में प्रयुक्त कागज़ की गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिए। कई बार ऐसा देखा जाता है कि पुस्तक में प्रयोग में लाया गया कागज़ इतना पतला होता है कि उसमें इंक और प्रिंट की हुई सामग्री दूसरी ओर दिखाई देती है। पुस्तक की बाइंडिंग टिकाऊ हो एवं पुस्तक में प्रयुक्त फ़ोंट साइज़ स्तरानुसार हो अर्थात छोटे स्तर के बच्चों के लिए प्रयुक्त सामग्री के फ़ोंट साइज़ अपेक्षाकृत बड़े होने चाहिए।

संपूर्ण गतिविधियों से जुड़े रहने के कारण कुछ महत्वपूर्ण बिंदु जो उभरकर सामने आए वे निम्न हैं–

1. अधिकांश बाल-साहित्य पुरानी संस्कृत कथाओं हितोपदेश, पंचतंत्र आदि से ही कथाओं को आधार लेकर बनाई गई थी।
2. कथाओं में वैविध्यता का अभाव था।
3. अधिकांश बाल-साहित्य का शीर्षक सीधे-सीधे, मूल्यों एवं उपदेशों पर आधारित था।
4. बाल-साहित्य के शीर्षक एवं पाठ्य-सामग्री में कोई तालमेल नहीं था।
5. समय एवं संदर्भ के अनुसार चित्रों का प्रस्तुतीकरण नहीं हुआ था।
6. विभिन्न विषयों से जुड़ी पाठ्य-सामग्री जैसे भूगोल से संबंधित जानकारी देते समय पृथ्वी एवं नक्शे की तस्वीर सही नहीं दी गई थी।
7. शाब्दिक त्रुटियों पर ध्यान नहीं दिया गया था।
8. कहानियों का निरर्थक विस्तार किया गया था।
9. कई कथाएँ पूर्वाग्रह से युक्त एवं संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप नहीं थीं।
10. बच्चों के लिए पशु-पक्षी संबंधी कथाओं की तो भरमार है पर बच्चों की पुस्तकों में आमतौर पर विविध पृष्ठ भूमि के बच्चों के समकालीन अनुभवों को प्रभावी रूप में और प्रामाणिकता के

साथ जगह नहीं मिल पाती। बच्चों को रूचिकर लगने वाली स्वस्थ हास्य से परिपूर्ण पुस्तकों का सर्वथा अभाव था।

11. अनेक कहानियों का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी और अंग्रेज़ी में किया गया था। कुछ पुस्तकें यद्यपि मूल भाषा में स्वीकार कर ली गईं लेकिन उनके अनुवाद (अंग्रेज़ी/हिंदी) का स्तर बहुत खराब था अत: स्वीकार नहीं की गई।
12. लोककथाओं से संबंधित बाल-साहित्य का अभाव दिखाई दिया।

बाल-साहित्य वास्तव में बच्चों की कल्पनाओं का उड़ान होती है। यदि उसमें विविधता हो तो बच्चे आनंदित होते हैं, उनकी भाषा समृद्ध होती है, उनकी सृजनशीलता को बल मिलता है जिसे बच्चे विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। विभिन्न प्रकाशकों को भी इन बातों को ध्यान में रखते हुए बाल-साहित्य का प्रकाशन करना होगा क्योंकि अच्छे बाल-साहित्य तक नन्हे पाठक खुद पहुँच जाते हैं।

❑❑❑

संदर्भ

द गुड बुक्स गाईड. नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया, नयी दिल्ली।

पराशर, पंकज. 2005. बाल साहित्य– *खुद के बहाने एक बहस, शिक्षा –विमर्श*, दिगंतर, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर

पंडित, सुरेश. 2005. हिंदी में बाल साहित्य– *वस्तु स्थिति और संभावनाएँ, शिक्षा–विमर्श*, दिगंतर, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर

पांडे, लता (संपादक). 2008. *पढ़ने की दहलीज़ पर*– पढ़ने से संबंधित लेखों का संकलन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली।

प्रसाद, देवी. 2005. *शिक्षा का वाहन कला*. नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया, नयी दिल्ली।

9

बचपन से बचपन तक

संघमित्रा आचार्य*

कुछ वक्त से बच्चों के साथ समय बिताने का मौका ढूँढ रही थी। अपने बचपन के बारे में सोचा तो टी.वी., सिनेमा, परदे के पीछे की कहानियाँ, फ़ोटो खींचना और खिंचवाना से संबंधित कुछ अनुभव याद आ गए। मैं इन सारी चीज़ों से आज भी जुड़े रहना पसंद करती हूँ। ऐसे कितने ही अनुभवों को एकजुट करके एक सीख निकालना मुश्किल है, परंतु जब आप किसी और को वैसे दौर से गुज़रते देखते हैं तो शायद उस उम्र की भावनाओं में दोबारा, यानी 'फ़्लैश-बैक' में जाने का मौका मिलता है।

जब शाहपुर उर्दू शाला क्रमाँक 10 की कक्षा 3 व 4 के बच्चों के साथ मैंने अपनी रुचि की एक गतिविधि करवाने के बारे में सोचा तो 'फ़ोटोग्राफी' ही पहला शब्द था जो मेरे दिमाग में आया। जब मैंने हेडमास्टर से इस गतिविधि के बारे में चर्चा की तो वे बेहद खुश हुईं, मगर मेरी ज़्यादा उत्सुकता तो यह जानने में थी कि जब बच्चों को इस बात का पता चलेगा तो उनकी प्रतिक्रिया कैसी होगी।

प्रतिक्रियाएँ और भागीदारी

इतनी उत्तेजित होने वाली बात तो शायद नहीं थी क्योंकि आजकल के बच्चे 'टेक्नोलॉजी' में काफ़ी आगे बढ़ चुके हैं, मगर इस विषय पर चर्चा शुरू करने पर इन बच्चों के चेहरे पर उत्साह सच में देखने लायक था।

मैंने बच्चों से पूछा, "आपने फ़ोटो कब और कहाँ देखी?" फातिमा, समीर और प्रिया — सब एक साथ खड़े होकर चिल्ला उठे और बोले, "एलबम में, दीवार पे, जंगल की, बचपन की, टीचर की आदि।" मैंने भी कुछ देर तक उन्हें एक-साथ चिल्लाने दिया क्योंकि मैं उस उत्तेजना को रोकना नहीं चाहती थी।

आगे जब 'कैमरे' के बारे में पूछा तो सब-के-सब फिर एक साथ बोल उठे, "स्टूडियो में खिचवाई थी, माँ-पप्पा के साथ।"

अब की बार मैंने एक नियम बना दिया और बच्चों से कहा, "जो भी बोलना चाहता है वह पहले हाथ खड़ा करेगा और बाकी सब शांति से उसकी बात सुनेंगे। फिर हममें से कोई और कुछ बोलना चाहे तो हाथ खड़ा करे (हर बार उन्हें इस नियम को याद दिलाना भी एक नियम बन गया था मेरे लिए)।"

हाँ, तो 'कैमरे' के बारे में पूछते ही बिलाल बोला, "मैंने तो बंबई में खिंचवाई थी, जंगल की खूब सारी फोटू ली थी हम लोगों ने। मेरे पप्पा के पास एक छोटू

एकलव्य द्वारा प्रकाशित पत्रिका शैक्षणिक संदर्भ के मई-जून 2014 अंक से साभार

कैमरा है।" बिलाल को बंबई के बारे में काफ़ी कुछ पता था और उसके सारे उदाहरणों में 'बंबई' ज़रूर आ टपकता। बाकी बच्चों से भी कुछ सुने हुए उदाहरण ही मिल रहे थे। मैंने उनसे पूछा, "अगर आपको एक कैमरे के साथ अकेला छोड़ दिया जाए, तो आप कैसी तस्वीरें खींचना चाहेंगे?" उनके उत्तर (मेरी नज़र में) तो अजीब ही थे, "खाली ब्लैक-बोर्ड की, स्कूल के पीछे की दीवार की, पढ़ते हुए बच्चों की, बाहर से स्कूल बोर्ड की, ए-बी-सी-डी.....की खाली क्लास की, ...आदि।"

बिलाल बोला, "मैं तो शेर की लूँगा। हम सभी पिकनिक में बाहर जाएँगे गार्डेन में और मैं ही सभी की फोटू लूँगा। मेरे पप्पा के पास जो कैमरा है, मैं उससे फोटू लूँगा। एक पतला-सा कैमरा जिसे 'इप्पल' कहते हैं।" फ़िर समीर ने जोड़ा, "और वो टच-स्क्रीन भी होता है।"

फ़िर जब मैंने बच्चों को बताया कि अब हम सब कैमरे से स्कूल की फ़ोटो खींचेगे, तो वे बहुत खुश हुए।

अपनी मर्ज़ी से खींचो तस्वीरें

सबसे पहले तो मैंने उन्हें छ:-छ: की तीन टुकड़ियों में बाँट दिया। फ़िर उन्होंने खुद ही अपने ग्रुप का नामकरण किया-'एलिएन्न', 'अजमेर' और 'मक्का'। तीनों टीमों को बारी-बारी से अलग ले जाकर कैमरे की सेटिंग्स के बारे में जानकारी दी। एक-दो बार तो काफ़ी शोर भी हुआ, पर बाद में अनुशासन को मानते हुए सब-के-सब काफ़ी धीरज से सुनने के लिए तैयार हो गए। उन्हें ज़रा भी देर नहीं लगी सारी बातें सीखने में। बारी-बारी से तीनों ग्रुप को स्कूल के अंदर ही घुमाया गया।

बच्चे बहुत ही उत्साह से भरे हुए थे। कैमरे को हाथ में पाने के बावजूद, उनका आपसी तालमेल देखने लायक था। हर बच्चा दो-तीन फ़ोटो खींच कर कैमरा अपने अन्य साथियों को दे देता और फ़िर अपनी बारी आने का इंतज़ार करता। वे एक-दूसरे से कहते, "तू यहाँ की फोटू ले, बहुत अच्छी आएगी," साथ ही साथ हिदायत देते जैसे- कैमरे को थोड़ा नीचे से पकड़ और अच्छी फोटू आएगी।

कुछ दिनों बाद बच्चों को स्कूल के बाहर ले जाकर कैमरे का इस्तेमाल करने का मौका मिला जिसका उन्होंने काफी आनंद भी उठाया। बच्चों को सबसे ज़्यादा मज़ा आ रहा था भागती हुई बिल्ली को पकड़ने की कोशिश करने और उसकी तस्वीर लेने में। साथ ही इमारतों और मोटर-साइकिल, आते-जाते ऑटोरिक्शा, पास की दुकानों की तस्वीरें लेने में भी काफ़ी मज़ा आ रहा था।

उनकी पसंद को समझना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल हो रहा था, इसलिए उस वक्त उन बातों को न समझने की कोशिश ही मेरी समझदारी थी। उनका व्यवहार ऐसा शायद इसलिए भी था क्योंकि निर्देश देते हुए मैंने ही कहा था कि वे कैसी भी तस्वीरें खींचते रहें – टेढ़ी-मेढ़ी, छोटी-बड़ी, ऊपर-नीचे...।

तस्वीरों की प्रदर्शनी

तस्वीरें खींचने की कवायद के बाद सभी बच्चों ने अपनी-अपनी टीम में बैठकर अपनी खींची हुई तस्वीरों को एक सफ़ेद कागज़ पर चिपकाया और सभी खाली जगहों को रंगों से भर दिया। लगभग एक-डेढ़ घंटे तक उन तस्वीरों को देख वे आपसी चर्चा में खोए रहे और

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 54 28-12-2015 AM 11:56:55

बीच-बीच में आपस में लड़ते और कहते कि यह मैंने खींची है। मुझे दे, मैं चिपकाऊँगा। लेकिन वह झगड़ा कुछ ही पल के लिए था। वे सब आपसी बातचीत में ऐसे खो गए कि आसपास के टीचर, मुझे और सभी को भूल गए थे।

अगली गतिविधि थी एक-दूसरे को तस्वीरों के माध्यम से अपनी कहानी सुनाना। सभी बच्चों ने अपनी एलबम में टूटे-फूटे अक्षरों में अपना नाम लिखा और रंग भरा।

जब सब तैयारियाँ हो गईं तो बच्चे छोटी-बड़ी कक्षाओं के सभी छात्रों और शिक्षकों को बुला लिया जैसे कि सच में 'एग्ज़िबिशन' ही हो। अब तो सच, उस शोर को संभालना मुश्किल ही था। कितना मज़ा आ रहा था उन्हें अपनी कहानियों (तस्वीरों) को दूसरों को दिखाने में।

कुछ यादें, कुछ सवाल

ये तो सच है कि ये बच्चे कैमरे (डिज़िटल या मोबाइल) से पहले से ही परिचित हैं पर स्कूल परिसर में ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल उन्होंने शायद ही किया होगा। इस गतिविधि की वजह से बच्चे मुझसे और नज़दीकी से जुड़ गए। जब भी स्कूल जाती हूँ, फ़िर से चर्चा शुरू हो जाती है। सब-के-सब आकर घेर लेंगे और फ़िर से उन तस्वीरों के बारे में बोलना शुरू कर देंगे। मैं उनसे बातें करते ही अपने बचपन में खो जाती हूँ। अपने सबसे अच्छे शिक्षक के बारे में सोचने लगती हूँ।

इस अनुभव के बाद कुछ सवाल मेरे दिमाग में घुमड़ने लगे – क्या सच में बच्चे अपनी समझदारी से महँगी चीज़ें इस्तेमाल करना नहीं जानते, क्या हमेशा ज़रूरी होता है उन्हें डाँट-मारकर सिखाया जाए कि कीमती वस्तुओं का इस्तेमाल कैसे करें वे जिन चीज़ों को अपनेपन और अधिकार से अपनाते हैं, क्या उन चीज़ों का वे सावधानी से उपयोग नहीं करेंगे, उन्हें ऐसी साधारण बातें सिखाने के लिए भी नियम-कानून या पिटाई की ज़रूरत होती है, या हम बड़ों की अधीरता का यह एक प्रमाण है। मैं इन बातों में उलझी हूँ क्योंकि कभी शायद मुझे भी बड़ों ने महँगी चीज़ों का इस्तेमाल करने से रोका था उस समय मेरे पास रोने के अलावा और कोई उपाय नहीं था और मेरी जिज्ञासाओं का उनके पास कोई समाधान नहीं था।

मुझे अच्छा लगा कि इस अनुभव के दौरान मेरे बचपन से किसी और का बचपन जैसे बातों-बातों में जुड़ गया, एक दोस्ताना रिश्ते की ओर कदम बढ़ाते हुए।

संघमित्रा आचार्य ने कैवल्य एजुकेशन फाउंडेशन, अहमदाबाद के गाँधी फैलोशिप प्रोग्राम के तहत अहमदाबाद के म्यूनिसिपल स्कूलों के साथ 'प्रिंसीपल लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम' पर काम किया है। हाल ही में 'फ़ोटोग्राफी विद चिल्ड्रन इन स्कूल' प्रोजेक्ट का संचालन किया है।

❑❑❑

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 55 28-12-2015 AM 11:56:55

10

विद्यालय – अनुभव कार्यक्रम से जुड़ी कुछ स्मृतियाँ

अशोक कुमार*

प्रशिक्षक – प्रशिक्षण की हैसियत के तहत विद्यालय कार्यक्रम अनुभव के लिए जब मैं विद्यालयों में गया, तो कुछ ऐसे अनुभव हुए जो अनापेक्षित थे। मैं जिस तस्वीर को अपने मानस में रखकर गया, वह तस्वीर बहुत ही धुँधली नज़र आई या सीधे शब्दों में कहूँ तो जैसा माहौल मुझे और मेरे विद्यार्थियों को मिलना चाहिए था वह वहाँ नज़र नहीं आया। एक अध्यापक बनने के लिए सिर्फ संस्था में ही प्रशिक्षण ज़रूरी नहीं होता बल्कि विद्यालयों से भी एक खास किस्म के माहौल की अपेक्षा रहती है, लेकिन वह मुझे विद्यालयों में नहीं मिला। मैं इस लेख के द्वारा उसी माहौल को बयाँ करने की कोशिश करना चाहता हूँ।

शिक्षण-प्रशिक्षण के दौरान होने वाली क्रियाएँ –

1. स्कूल में विद्यार्थी-शिक्षकों का परिचय कराना –

जब मैं पहले दिन विद्यालय में गया तो मैं यह सोचकर गया था कि प्रधानाचार्य द्वारा मेरे विद्यार्थियों का परिचय बड़े ही ज़ोर-शोर से कराया जाएगा क्योंकि विद्यार्थी-शिक्षक विद्यालय के शिक्षण व अन्य कार्यों को सुचारू रूप से चलाने में सहायक होंगे। लेकिन यहाँ मैंने ऐसा कुछ भी नहीं पाया, यहाँ तो तस्वीर बिलकुल विपरीत नज़र आई अर्थात् प्रधानाचार्य या विद्यालय के नियत अध्यापक द्वारा प्रात: प्रार्थना स्थल पर विद्यार्थी-शिक्षकों का किसी भी प्रकार का परिचय नहीं कराया गया था, जिसके कारण विद्यार्थी-शिक्षक उस स्कूल प्राँगण में अजनबी महसूस कर रहे थे। जिसके कारण उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है और ये विद्यार्थी-शिक्षक अपने आप को कभी भी भावात्मक रूप से स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं। इस तरह का व्यवहार विद्यार्थी-शिक्षकों में आत्मविश्वास पैदा होने में बाधक सिद्ध होता है और मैंने यह महसूस किया कि इसका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम पर पड़ता है और अंत में विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण शिक्षण के प्रति नकारात्मक होता चला जाता है।

अत: विद्यालयों में विद्यार्थी-शिक्षकों का परिचय विद्यालय के एक उत्तरदायी शिक्षक के रूप में कराना चाहिए। जिससे विद्यार्थी-शिक्षकों का आत्मविश्वास बढ़े और उनका शिक्षण के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण भी बने।

* *प्रवक्ता*, डाईट, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली 110022

विद्यालय के नियत (औपचारिक) अध्यापकों का विद्यार्थी – शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण

दूसरे महत्वपूर्ण बिंदु पर मैंने महसूस किया कि जैसे ही मैं विद्यालय में जाता तो सभी विद्यार्थी-शिक्षकों की चहल-पहल बढ़ जाती थी, मानो सारे विद्यार्थी-शिक्षक अपनापन-सा महसूस करते थे। मैं सभी से यह जानने की कोशिश करता था, बताओ सब कैसा चल रहा है? इस पर सभी की क्रिया-प्रतिक्रिया बड़ी अनापेक्षित सी होती थी। अंत में मैंने महसूस किया कि विद्यालय के नियत अध्यापकों का दृष्टिकोण विद्यार्थी-शिक्षकों के लिये नकारात्मक होता है। वे विद्यालय में आने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों को अनचाहे मेहमान मानते हैं।

विद्यार्थी-शिक्षकों की सहायता व सहयोग करने के बजाय उनसे द्वेष रखना शुरू कर देते हैं। उन्हें सारे दिन आदेश व निर्देश देते रहते हैं और उन्हें केवल आभासी अध्यापक ही मानते हैं। कभी कभी तो नियत अध्यापक अपनी सारी सीमाएँ तोड़कर कक्षा में विद्यार्थी-शिक्षकों की बुराई करना शुरू कर देते हैं। जिसका नकारात्मक प्रभाव कक्षा के छात्रों पर पड़ता है और फ़िर अनुशासन की समस्या पैदा होती है। सबसे बड़ी चुनौती उन विद्यार्थी-शिक्षकों के सामने आती है, जो अन्य राज्यों से आते हैं। वे अपनी क्षेत्रीय भाषा में बोलते हैं अन्य भाषा समझने में परेशानी महसूस करते हैं। इस तरह की स्थिति में विद्यालय अध्यापक उनकी सहायता करने के बजाए उनका मज़ाक उड़ाते हैं और विद्यार्थी-शिक्षकों के प्रति उनका दृष्टिकोण नकारात्मक होता है।

विद्यालय की क्रियाओं में विद्यार्थी-शिक्षकों का भाग लेना या सम्मिलित करना

जब मैंने विद्यालय के प्रधानाचार्य व अन्य शिक्षकों से बात की तो मैंने महसूस किया कि वे विद्यार्थी-शिक्षकों को विद्यालय की अधिकतर क्रियाओं में शामिल करना पसंद नहीं करते थे। लेकिन जिस तरह शिक्षण मुख्य रूप से अनुभवों की आवश्यकता का आदान-प्रदान है, तो इसके लिए शिक्षण में अनेक अनुभवों की आवश्यकता होती है। इसलिए विद्यार्थी-शिक्षकों को स्कूल की सभी क्रियाओं में भाग लेना आवश्यक हो जाता है। यह मुख्य दायित्व स्कूल के प्रधानाचार्य का बन जाता है कि वह प्रत्येक विद्यार्थी-शिक्षक को स्कूल की सभी क्रियाओं में सम्मिलित करें। पर सच्चाई यह है कि उन्हें स्कूल की अनेक बैठकों में शामिल नहीं किया जाता है। विद्यालय के शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थी-शिक्षकों के अपरिपक्व अनुभव के कारण वे कोई महत्वपूर्ण सुझाव नहीं दे पाएँगे। इसलिए उन्हें स्कूल की महत्वपूर्ण क्रियाओं से वंचित रखा जाता है और जिसका प्रभाव उनके वास्तविक शिक्षण पर नज़र आता है।

कक्षा में विद्यार्थियों का अनुशासन

विद्यार्थियों को पहले से उनके नियत शिक्षकों के द्वारा अप्रभावित परिचय विद्यालय के अनुशासन की एक समस्या बन जाती है। अकसर विद्यालय के शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को कक्षा में इस तरह निर्देशित किया जाता है, जैसे ये अध्यापक ही नहीं हैं उदाहरण के लिए ''बच्चों ध्यान से पढ़ना, ये बच्चे अपना प्रशिक्षण पूरा करने के लिए कुछ दिन तुम्हें

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 57 28-12-2015 AM 11:56:56

पढ़ाएँगे, इनको ज़्यादा परेशान मत करना'' कक्षा में ज़्यादा शोर मत करना। इस तरह के दृष्टिकोण के कारण कक्षा में सभी क्रियाकलापों को विद्यार्थी शिक्षक पूरा करने में असमर्थ होते हैं। जिसका प्रभाव कक्षा के अनुशासन पर पड़ता है। कभी-कभी तो स्कूल के विद्यार्थी, विद्यार्थी-शिक्षकों के साथ अभद्र व्यवहार करने में भी नहीं सकुचाते हैं। इस तरह जब नियत अध्यापकों द्वारा विद्यार्थी-शिक्षकों का सहयोग नहीं होता तो विद्यालय में अनुशासन की समस्या बन जाती है। अंततः जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से उनके शिक्षण पर प्रभाव पड़ता है।

शिक्षण-अधिगम सहायक सामग्री की विद्यालयों में उपलब्धता

विद्यालयों में जाने से पहले जिस तरह की तस्वीर मेरे ज़ेहन में थी कि विद्यालय में विद्यार्थी-शिक्षकों को शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री की उपलब्धता उचित मात्रा में होगी, जिससे विद्यार्थी–शिक्षकों के शिक्षण में सुधार होगा पर यह सोच पूर्ण रूप से विपरीत निकली, मैंने यह महसूस किया कि कुछ विद्यालयों में तो शिक्षण-अधिगम सहायक सामग्री उचित मात्रा में उपलब्ध ही नहीं है जिसके कारण ये सहायक सामग्री विद्यार्थी–शिक्षकों को उपलब्ध नहीं कराई जाती लेकिन जिन विद्यालयों में उचित मात्रा में यह सामग्री उपलब्ध है तो भी नियत शिक्षकों द्वारा उसका प्रयोग नहीं करने की अनुमति होती है। जिसके कारण कई विद्यार्थी–शिक्षक शिक्षण सामग्री जुटाने में लगे रहते हैं। अधिकतर समय यह सामग्री जुटाने में ही निकल जाता है। इस तरह विद्यालयों द्वारा उनका दोहरा व्यवहार विद्यार्थी–शिक्षकों के दृष्टिकोण पर पड़ता है और अंत में उनके भविष्य के शिक्षण पर पड़ता है।

निष्कर्ष व सुझाव

भविष्य के लिए अच्छे अध्यापक निर्माण के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण में विद्यालय के अनुभवों का बहुत महत्व है। इस प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थी-शिक्षक का आत्मविश्वास बढ़ता है तथा विभिन्न प्रकार के शिक्षण कौशलों का विकास होता है। जो एक विद्यार्थी-शिक्षक के शिक्षण को प्रभावशाली बनाता है। शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण होती है। मेरे अनुभव के अनुसार इस प्रक्रिया के शुरू होने से पहले विद्यार्थी-शिक्षकों के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर विद्यालयों के साथ भली प्रकार चर्चा करनी चाहिए। इस तरह विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में होने वाली विभिन्न बाधाओं से बचा जा सकता है और विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावशील बनाया जा सकता है।

विद्यालयों को विद्यार्थी-शिक्षकों के साथ दोहरा व्यवहार नहीं करना चाहिए तथा समय-समय पर विद्यालय में उनके प्रदर्शन की सराहना करके उनके मनोबल व आत्मसम्मान को बढ़ाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण शिक्षण के प्रति धनात्मक बनें। सबसे महत्वपूर्ण बिंदु विद्यालयी अनुशासन का है, अनुशासन को बनाए रखने के लिए विद्यार्थी-शिक्षकों की सहायता की जानी चाहिए व उन्हें प्रधानाचार्य व अध्यापकों द्वारा मार्गदर्शन मिलते

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 58 28-12-2015 AM 11:56:56

रहना चाहिए। इस तरह के सहयोग से उनमें बहुत से कौशलों का विकास किया जा सकता है। जिसके कारण उनके भविष्य में शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है और इस तरह के सुधार का प्रभाव कहीं न कहीं राष्ट्र के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।

❑❑❑

निरंतर विकास करना जीवन का नियम है, और जो व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए हमेशा अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को गलत स्थिति में पहुँचा देता है।

विश्व के सभी धर्म, भले ही और चीज़ों में अंतर रखते हों, लेकिन सभी इस बात पर एकमत हैं कि दुनिया में कुछ नहीं बस सत्य ही जीवित रहता है।

महात्मा गांधी

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 59 28-12-2015 AM 11:56:56

11

किताबें और पर्यावरण

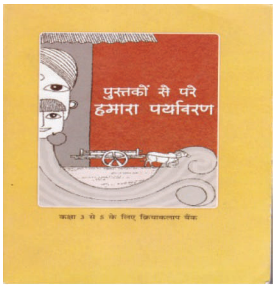

पुस्तक का नाम	–	*पुस्तकों से परे हमारा पर्यावरण*
प्रथम संस्करण	–	अगस्त, 2012
प्रकाशक	–	एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
मूल्य	–	₹ 385.00

मीनाक्षी*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बच्चों के स्कूली जीवन को बाहरी जीवन से जोड़ने का समर्थन करती है। पर्यावरण अध्ययन के विषय में यह शत-प्रतिशत सही है क्योंकि इसका ध्येय मात्र चेतना फ़ैलाना ही नहीं, बल्कि पर्यावरण के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं से जुड़ना और आवश्यक कौशलों का विकास करना भी है, ताकि उनसे संबंधित समस्याओं का समाधान भी हो सके। यह तब तक संभव नहीं है, जब तक बच्चे अपने परिवार से न जुड़ें। इसके लिए यह ज़रूरी है कि हमारी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से उन्हें भरपूर अवसर प्रदान करे, ताकि वे पर्यावरण से जुड़े मुद्दों की पहचान, उनका अपने रोज़मर्रा के जीवन पर प्रभाव जानकर न केवल जागरूक हों, बल्कि समालोचनात्मक चिंतन कर विभिन्न कौशलों द्वारा उन्हें सुलझाने के लिए समुदाय में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। अत: प्राथमिक स्तर पर इसकी शुरुआत बच्चे के निकटतम परिवेश से होनी चाहिए। ऐसी शिक्षण प्रणाली से गुज़रकर ये बच्चे बड़े होकर किसी एक राज्य या देश के जागरूक नागरिक ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के सुरक्षित भविष्य में योगदान कर सकेंगे।

इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय फ़ोकस ग्रुप पोज़ीशन पेपर-आवास एवं अधिगम (Habitat and Learning) द्वारा कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने के सुझाव दिए गए हैं। इनमें शिक्षण की अपेक्षा अधिगम समालोचनात्मक चिंतन, स्थानीय विशिष्टता, समुदाय की भागीदारी, विभिन्न समानता एवं जेंडर-भेद के प्रति संवेदनशीलता तथा बहु-विषयी पद्धति द्वारा ज्ञान का सृजन करने पर बल दिया गया है। इन सभी बिंदुओं को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 ने स्कूली जीवन के हर स्तर पर बच्चों की आयु एवं अधिगम स्तर को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों द्वारा संबोधित करने की

*जे.पी.एफ़., प्रांरभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली-110016

प्रस्तावना की है, जिसमें कक्षा 1 से 2 तक पर्यावरण अध्ययन को एक पृथक विषय और कक्षा 1 और 2 स्तर पर पर्यावरणीय कौशलों एवं सरोकारों को भाषा तथा गणित के माध्यम से विकसित करने का सुझाव दिया गया है।

इसके अतिरिक्त सन् 2000 से पर्यावरण को एक संपूर्ण प्राथमिक स्तर पर समेकित पद्धति से पढ़ाए जाने की सिफ़ारिश को जारी रखते हुए अधिक सशक्त बनाने की भी संस्तुति की गई है। इसके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी-पाठ्यक्रम में प्राकृतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण को समग्र रूप में देखकर उनका पारस्परिक तथा स्थानीय परिवेश से संबंध जोड़ना, ताकि चुने गए विषय, उपविषय तथा इन पर आधारित उपयुक्त अधिगम सामग्री का निर्माण भी इसी दिशा में हो। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 के आधार पर विकसित पाठ्यपुस्तकें इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। परंतु राष्ट्रीय फ़ोकस ग्रुप पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों (Curriculum Syllabus and Textbooks) से संबंधित पोज़ीशन पेपर के अनुसार "एकमात्र पाठ्यपुस्तक ही आवश्यक नहीं है, अपितु आवश्यकता है एक शिक्षण-अधिगम सामग्री के पैकेज की, जो बच्चों को अधिगम में व्यस्त रखने का एक उपकरण हो सकती है। कक्षा में शिक्षक सीखने-सिखाने की विविध प्रकार की प्रक्रियाएँ , साकार अधिगम सामग्री तथा पाठ्यपुस्तकों का इस्तेमाल कर सकता/सकती है।"

शिक्षक के बिना संपूर्ण शिक्षण प्रणाली अधूरी है। ऐसे में शिक्षा की गुणवत्ता व अन्य सुधारों में उनके योगदान एवं सक्रिय भूमिका की अत्यधिक आवश्यकता है, जिसे पूरा करने के लिए वे सक्षम एवं समर्थ हों तभी वे नवाचारी, स्थानीय परिवेश एवं बच्चों के संज्ञान स्तर को ध्यान में रखते हुए बाल-केंद्रित शिक्षण-अधिगम के ऐसे अवसर चुन या बना सकेंगे, जिनसे प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया को सुसाध्य एवं सार्थक बनाने के लिए प्रभावकारी अभिकर्ता के रूप में काम करने के लिए शिक्षकों को स्थानीय, नवाचारी, सक्रिय क्रियाकलापों, परियोजनाओं, क्षेत्र-अध्ययनों इत्यादि के द्वारा अपने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने, बच्चों को पाठ्यपुस्तकों की दमनकारी निरंकुशता से छुटकारा दिलाने तथा 'पर्यावरण अध्ययन' से संबंधित सरोकारों एवं कौशलों को बच्चों की समझ एवं स्तर के अनुसार उजागर करने में शिक्षकों को सशक्त करना बहुत आवश्यक है।

उपरोक्त के संदर्भ में यह ज़रूरी है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों के परिवेश तथा अनुभवों पर आधारित विविध प्रकार की अधिगम स्थितियों का निर्माण या चुनाव करते हुए उपयुक्त माध्यमों द्वारा शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया का प्रयोग करना चाहिए। इसलिए 'पर्यावरण अध्ययन' के सुलभ अधिगम में शिक्षकों की भूमिका का विशेष योगदान है। अत: उनके लिए यह ज़रूरी है कि वे पर्यावरण संबंधी प्रत्ययों, सरोकारों, मुद्दों एवं प्रयासों को समझें, जिससे वे 'पर्यावरण अध्ययन' के वांछित उद्देश्यों की उपलब्धि करने में समर्थ हो सकें। इसके लिए ज़रूरी है कि शिक्षकों

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 61 28-12-2015 AM 11:56:57

के पास भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्री उपलब्ध हो, जिससे वे पुस्तकों के एकाधिकार को समाप्त कर बच्चों को उनकी आवश्यकता और संदर्भ के अनुसार उपयुक्त माध्यमों का चुनाव कर अधिगम के नए-नए एवं योग्य अवसर प्रदान कर सकें।

प्राय: शिक्षक इसके लिए अतिरिक्त संदर्भ-ग्रंथों अथवा सहायक सामग्री के अभाव में, स्वयं को प्रतिबंधित पाते हैं। पुस्तकालयों में मिलने वाली अधिकतर पाठ्य-सामग्री भी पाठ्यचर्या की आवश्यकता और संदर्भ से परे होती है, क्योंकि यह भारतीय परिप्रेक्ष्यों के अनुसार न होकर अन्य देशों से संबंधित होती है। पाठ्यपुस्तक इस पैकेज का एक भाग बनकर बच्चों को अधिगम में व्यस्त रखने का एक उपकरण हो सकती है। कक्षा में शिक्षक सीखने-सिखाने की विविध प्रकार की प्रक्रियाएँ , साकार अधिगम सामग्री तथा पाठ्यपुस्तकों का इस्तेमाल कर सकता/सकती है। अब तक हुए छोटे या बड़े स्तर पर कई नवाचारी कार्यक्रमों का बाह्य हस्तक्षेप के रूप में सफ़लतापूर्वक चलना भी इस बात का पूरा समर्थन करता है।

यह क्रियाकलाप इस दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर परिषद् द्वारा विकसित कक्षा 3 से 5 तक के पाठ्यक्रम पर आधारित है।

प्राथमिक शिक्षा के लिए एक एकीकृत परिप्रेक्ष्य गढ़ने हेतु कक्षा 3 से 5 तक 'पर्यावरण अध्ययन' की पाठ्यचर्या को विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरण विज्ञान से निकालकर निम्नलिखित छ: विषय वस्तुओं की पहचान की गई है – 1.परिवार और दोस्त (संबंध, कार्य एवं खेल, जानवर, पौधे), 2. भोजन, 3. पानी, 4. आवास, 5. यात्रा, और 6. वस्तुएँ बनाना एवं सृजनात्मक कार्य करना। इन सभी के अलावा संपूर्ण एवं बहुविषयी विचार पर बल देते हुए , 'आवास तथा अधिगम पर दृष्टिकोण-प्रपत्र' (Habitat and Learning, Position Paper) विद्यार्थियों द्वारा पूरी की गई विभिन्न परियोजनाओं को सार्वजनिक 'वेबसाइट' पर प्रकाशित करके भारत के पर्यावरण पर एक व्यापक आँकड़ा-पटल बनाने के लिए बल देता है, जो कि भारत के पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

इस क्रियाकलाप बैंक की विशेष बातें इस प्रकार हैं –

- विभिन्न क्रियाकलापों की विषयवस्तु कक्षा तीन से पाँच के पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यचर्या पर आधारित है।
- हर थीम के अंतर्गत विकसित गतिविधियाँ बच्चों के बढ़ते संज्ञान स्तर के अनुसार विकसित की गई हैं।
- सभी क्रियाकलापों को कक्षा 3 से 5 तक के स्तर पर जटिलता के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित किया गया है। लेकिन समय, परिस्थितियों, सामग्री आदि की सुलभता और उपलब्धता, बच्चों के परिवेश तथा सीखने की प्रगति के अनुसार यह क्रम बदला भी जा सकता है।
- इसमें प्राथमिक कक्षा के सभी स्तरों के पारस्परिक संबंधों का ध्यान भी रखा गया है।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 62 28-12-2015 AM 11:56:57

- प्रत्येक शिक्षार्थी की ज़रूरत एवं परिवेश के अनुकूल बनाने के लिए इन गतिविधियों में पर्याप्त लचीलापन है।
- सभी क्रियाकलापों में अधिगम के ऐसे अवसर चुने गए हैं, जो कि बालकेंद्रित, विषय से संबंधित तथा सार्थक हैं। ये बच्चों के जिज्ञासु तथा खोजपूर्ण व्यक्ति को संपोषित करेंगे।
- यहाँ 'एक्टिविटी' या क्रियाकलाप का अभिप्राय केवल शारीरिक हरकत से न होकर हर उस कार्य से है, जिसमें बच्चे शारीरिक या फिर मानसिक रूप से सक्रिय होकर उस कार्य से अर्थपूर्ण ढंग से जुड़ें। ये सभी क्रियाकलाप प्राथमिक कक्षाओं के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित पर्यावरण पाठ्यक्रम के अंतर्गत दिए गए उप-विषयों (थीम) से संबंधित हैं और इन्हें इसी आधार पर वर्गीकृत किया गया है।
- हर क्रियाकलाप का तर्क और उसकी अपेक्षाएँ शुरू में ही स्पष्ट कर दी गई हैं।
- यह क्रियाकलाप न केवल महँगी सामग्री या उपकरणों आदि के बिना ही किए जा सकते हैं, अपितु इनमें आसानी से मिलने वाले स्थानीय उपलब्ध संसाधनों एवं सामग्री का इस्तेमाल करते हुए कक्षा से बाहर भी सीखने-सिखाने के अवसर सुझाए गए हैं।
- इन गतिविधियों को लिखने के ढंग में भी आपको विविधता मिलेगी, कहीं संवाद का प्रयोग हैं, तो कहीं कथा शैली की विषय सामग्री की भाषा सरल और सहज है।
- इनमें से कई क्रियाकलाप बच्चों के साथ किए भी गए और बच्चों की प्रतिक्रियाओं और बातचीत को भी कई जगह प्रतिबिंबित किया गया है। बच्चों के जवाबों, प्रतिक्रियाओं और विचारों को ध्यान से सुनकर और समझकर उन पर अपने शिक्षण-अधिगम को टिकाना एक महत्त्वपूर्ण कौशल है। उपयुक्त उदाहरणों द्वारा इस कौशल की ओर भी कहीं-कहीं संकेत किया गया है (उदाहरण 4.4 क्रियाकलाप)।
- क्रियाकलापों में तरह-तरह के रोचक तरीके जैसे- खेल, कहानियाँ, कविताएँ,साक्षात्कार, चर्चा, प्रयोग, प्रोजेक्ट का आयोजन करना-क्षेत्रीय परीक्षणों, क्रियाकलाप शीट तथा केस अध्ययन आदि पर आधारित हैं। सभी गतिविधियों में कला एवं शिल्पकारी के भी भरपूर अवसर दिए गए हैं।
- यह सभी अवसर बच्चों के संज्ञान स्तर का ध्यान रखते हुए उन्हें जाँच-पड़ताल, खोजबीन, प्रश्न एवं पूछताछ करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- हर क्रियाकलाप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की ही नहीं, बल्कि शिक्षकों की भी संपूर्ण भागीदारी को सुनिश्चित करता है।
- हर क्रियाकलाप बच्चों में जिज्ञासापूर्ण मानसिकता, अधिगम प्रक्रियाओं एवं सक्षमताओं को बढ़ाने में सहायक है।
- अपनी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सार्थक बनाने के लिए सभी क्रियाकलापों व गतिविधियों के प्रबंधन तथा संचालन में अधिक से अधिक बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करना ज़रूरी है।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 63 28-12-2015 AM 11:56:57

- आकलन को शिक्षण अधिगम से अलग न मानते हुए एक ऐसी प्रक्रिया की तरह इस्तेमाल करें, जो न केवल उन बच्चों को प्रोत्साहित करे जो अच्छा कर रहे हों, बल्कि उन सभी को भी जो बहुत अच्छा नहीं कर पा रहे हों। हर बच्चे के पिछले काम की उससे अगले किए हुए कार्यों से तुलना करने पर उसकी प्रगति का अनुमान लगता है, जिससे आपको उनकी अधिगम प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त माध्यमों के चुनाव में सहायता मिलेगी।

विकसित क्रियाकलापों को कक्षा 3 से 5 के कठिनाई स्तर के अनुसार क्रमित किया गया है। अधिकतम क्रियाकलाप प्राथमिक शिक्षकों द्वारा अपनी कक्षाओं में बच्चों के साथ किए भी गए हैं। इसीलिए बच्चों की वास्तविक प्रतिक्रियाओं व अनुभवों को भी कई जगह शामिल किया गया है। इससे हमें बच्चों की सोच को जानते हुए अपने शिक्षण अधिगम को उनके अनुसार बनाने में मदद मिलेगी। सभी क्रियाकलाप केवल सुझाव मात्र हैं, जिन्हें बच्चों के संज्ञान स्तर, परिवेश एवं सामग्री की उपलब्धता के अनुसार करने/करवाने या इनमें फेर-बदल बदलाव करने के लिए शिक्षक पूर्णतया स्वतंत्र हैं। इन्हें करने/करवाने से पहले यह ज़रूरी है कि दी गई प्रस्तावना को शिक्षक ज़रूर पढ़ें। कक्षा में इन क्रियाकलापों को कराने से पहले यह जान लेना आवश्यक होगा कि ये सभी क्रियाकलाप केवल सुझाव मात्र हैं और आवश्यकतानुसार इन्हें संदर्भित करने या इनमें कुछ जोड़ने/घटाने या परिवर्तन करने का अंतिम निर्णय शिक्षक/शिक्षिका का ही होगा।

इस दस्तावेज़ की एक विशेषता यह भी है कि इसके अंत में संदर्भ ग्रंथों के साथ प्रमुख वेबसाइट के बारे में भी जानकारी दी गई है।

यह दस्तावेज़ क्रियाकलापों एवं परियोजनाओं की एक सार-संग्रह रूपी टोकरी है। इस क्रियाकलाप बैंक में दी गई गतिविधियाँ पर्यावरण अध्ययन के सरोकारों एवं कौशलों के विस्तार, शिक्षकों की दक्षता, कठिनाई स्तरों एवं समय की उपलब्धता को ध्यान में रख कर तैयार की गई हैं। ये सभी क्रियाकलाप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुरूप पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों को कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के द्वारा अभिकल्पित करने में सहायक हैं। 'पर्यावरण अध्ययन' में प्राथमिक स्तर पर इस क्रियाकलाप बैंक में क्रियाकलापों, परियोजनाओं तथा खेलों की विविधता द्वारा बच्चों को अधिगम के सुअवसर प्रदान करने के लिए यह दस्तावेज़ शिक्षकों एवं माता-पिता के लिए बहुत लाभदायक है।

❑❑❑

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 64 28-12-2015 AM 11:56:57

बालमन कुछ कहता है

नमस्कार मैं समर्थ अग्निहोत्री

मैं बड़ा होकर पुलिस आफीसर बनना चाहता हूँ।

पुलिस आफीसर बनकर मैं चोरों को जेल भेज दूँगा। मैं भारत माता का सच्चा लाल बनूँगा और अपने देश की सेवा करूँगा।

समर्थ अग्निहोत्री

कक्षा – 2

डॉ० शक्ति अहुजा मेमोरियल स्कूल

शाहजहाँपुर, उ० प्र०

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका के बारे में

साथियो,

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर आधारित ऐसे लेख प्रकाशित किए जाते हैं जो एक शिक्षक के लिए उपयोगी हों। इस पत्रिका में कुछ महत्वपूर्ण सरोकार हैं –

- शिक्षा संबंधी महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों की जानकारी एवं विवेचन
- समसामयिक शैक्षिक शोध एवं अध्ययनों का विवरण
- समसामयिक शैक्षिक चिंतन
- शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के अनुभव
- शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए व्यावहारिक बाल-मनोविज्ञान
- शालाओं एवं शिक्षा केंद्रों की समीक्षा
- शिक्षा संबंधी खेल एवं उनकी उपयोगिता
- विभिन्न शिक्षण विधियाँ
- क्रियात्मक शोध और नवाचार
- शिक्षकों के लिए पठनीय पुस्तक के बारे में जानकारी आदि।

कैसे भेजें रचनाएँ

उपरोक्त सरोकारों पर आधारित लेख, शोध, संस्मरण, कविताएँ आदि आमंत्रित हैं। कृपया ध्यान रखें कि लेख सरल भाषा में तथा रोचक हों। शोधपरक लेखों के साथ संदर्भ साहित्य की सूची अवश्य दें। नवाचार आदि लेखों के साथ तसवीरें भी भेज सकें तो अच्छा रहेगा। लेखों के प्रकाशन के उपरांत समुचित मानदेय की व्यवस्था है। लेखों की त्रुटिरहित टंकित प्रति अगर सी.डी. में भेज सकें, तो अच्छा रहेगा। लेख ई-मेल द्वारा भी भेजे जा सकते हैं। कृपया लेख यूनीकोड फ़ोंट कोकिला में टाइप करें। लेख के साथ उसका सार भी लिखें। अपने लेख निम्न पते पर भेजें –

अकादमिक संपादक

प्राथमिक शिक्षक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली – 110016
ई. मेल – Prathamik.Shikshak@gmail.com

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 66 28-12-2015 AM 11:56:59

कैसे बनें सदस्य

इस पत्रिका के सुचारू रूप से प्रकाशन, प्रचार एवं प्रसार के लिए आपका सहयोग अनिवार्य है। इस संदर्भ में आपसे निवेदन है कि इस पत्रिका के स्थायी सदस्य के रूप में अपने विद्यालय, संस्थान अथवा स्वयं को पंजीकृत करें। इसका वार्षिक सदस्यता शुल्क केवल ₹ 260 है और प्रति कॉपी का मूल्य मात्र ₹ 65 है। आशा है आप इस दिशा में शीघ्र ही निर्णय लेकर विद्यालय, संस्थान अथवा निजी वार्षिक सदस्यता के लिए कार्रवाई करेंगे। वार्षिक सदस्यता शुल्क-पत्र के लिए कृपया अपना पत्र स्वनामांकित लिफ़ाफ़े सहित बिज़नेस मैनेजर, प्रकाशन प्रभाग (एन.सी.ई.आर.टी) श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 को भेजें।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 67 28-12-2015 AM 11:56:59

NCERT Educational Journals

Revised Rates w.e.f. 1.1.2009

Title	Single Copy	Annual Subscription
School Science A Quarterly Journal for Secondary Schools	Rs. 55.00	220.00
Indian Educational Review A Half-Yearly Research Journal	Rs. 50.00	100.00
Journal of Indian Education A Quarterly Journal of Education	Rs. 45.00	180.00
भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक) (*Bharatiya Aadhunik Shiksha*) A Quarterly Journal in Hindi	Rs. 50.00	200.00
Primary Teacher A Quarterly Journal for Primary Teachers	Rs. 65.00	260.00
प्राथमिक शिक्षक (त्रैमासिक) (*Prathmik Shikshak*) A Quarterly Journal in Hindi for Primary Teachers	Rs. 65.00	260.00

Please send the Demand Draft in favour of "PUBLICATION DIVISION, NCERT" payable at the New Delhi or in Cash at the Sales Counter, Publication Division, NCERT, Sri Aurobindo Marg, New Delhi 110016

For further details please contact :

The Chief Business Manager
Publication Division, NCERT
Sri Aurobindo Marg
New Delhi 110016

Published by the Head, Publication Division, National Council of Educational Research and Training, Sri Aurobindo Marg, New Delhi 110 016 and printed ...?

पानी

सुकीर्ति भटनागर*

खेल नहीं यह भोले बालक,
जो बैठे हो नल खोल।
अरे बावले पानी जीवन,
है पानी तो अनमोल।।

इसकी तो हर बूँद कीमती,
न यूँ ही इसे बहाओ।
अपने टब को भर लो पहले,
फिर उसके बाद नहाओ।।

पानी बिन तो जीना मुश्किल,
यह धरती बंजर होगी।
नहीं मिलेगी रोटी-सब्ज़ी,
तुम बन जाओगे रोगी।।

यही धारणा मन में धारो,
न व्यर्थ बहे यह पानी।
यह तो है जीने का साधन,
न करो कभी मनमानी।।

* 432, अरबन एस्टेट , फ़ेज-1, पटियाला- 147002 (पंजाब)

रजि. नं. 32427/76

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING